

व्यक्तित वस्यविक्राचान वस्त्रस्थकार पत्रसः प्रम्याकः ३४

अगेंद्रेली संशह

जैनाचाय जगम युग, प्रघान महारक श्री मज्जिन क्रपाचन्द्र सूरिश्वरजी महाराज के सदुप देश से इन्दोर निवासी सु श्रावक चादमलजी सारम सुलाकी धर्म पत्नी चैन बाई के स्मार्गार्थ प्रति ५ ०,० excelled Dro

इन्दोर निवामी सेठ उत्तर्मनदनी सार्वण सुसा की स्वर्गस्य पुत्री येनीप बाहे की तरफ से प्रति ५००

प्रकाशकः--

श्रीजिन कृपाचन्द्रसृरि ज्ञान भेडार इन्दोर

[प्रति १०००] वीर सं० २४४४



अर्वाचीन गहूंली संग्रह।

जात्रा नवाणुं, करीये ए चाल.

एहवा सद्गुरु वांदीए भविकजन, एहवा म०॥ भ्राप तरं यावानकुंतारं, मरगा तिहाररे गहिये भ०॥१॥ जिम सारधपित साधीजनकुं, वंद्यित देशे वहाये भ०॥१॥ २॥ तिम मद्गुरु अमृत्वपदेशे, रहे भविक सुख कहाये भ०॥२॥ गांपसमा गुम्गुगा नितथारं, राखेगोजनमहीए भ०॥४॥ वित्र निर्धामक उपमा धारे, जिम नायिक नी तर्राए भ०॥४॥ एक प्रसंजम दोषविध वंपन, त्रिविधदंड प्रीहरीए भ०॥६॥ बार कपाणनिवासक तारक, प्रमहाग्रत घरीए भ०॥॥॥ पट्रकाय रक्षक महा नयजीपक स्थानरण हही वियोग व्याप प्रदेश स्थानरा वर्राण करी वियोग स्थानरा वर्षाण करी व्याप स्थानरा स्थानरा वर्षाण करी वर्षाण स्थानरा स्थानस्थानरा स्थानरा स्याप स्थानरा स्थान

॥६॥ गौनमस्यामी ममा सुनि उत्तम, सर्वजीवमम घरीए अ०॥ १०॥ हृद्यकमल नित्रप्ति राखीजे, आनंद् शिवपद रहीए भ०॥ ११॥ इति

॥ अथ वधावो ॥

भवितुमे वंदारे, शीतल जिनपतिरे ए चाल सुख हरस्वामीरे श्रीतीर्थंकररे,वरधमान जिनराज। द्रशन जेहनोरे शशी ज्युं दीपतारे, सोभे तेज समाज, भविजनवंदीरे भावेगच्छपतिरे ॥१॥तसु पटगजिरे सु-धरसगणधररे. ज्ञातां ह दशअंग । जंबुस्दामीरं शिष्य सोहामणोरे, चौदपुरवधर छंग ॥२० ॥२॥ प्रभवम्ज्यं-भव जगमें परगडारे, श्रीजसोभद्रपृष्टि । श्रीमंसुन-विजयभद्रचाहुर्जारे,श्रीधुलभद्रदिगांद भ०॥३॥ एम ज-लुक्रम द्वापुरवधहरे हुवा वयरसुणीश । श्रीजिनसतदी-ष:यो भूतलेरे, सुरनर नामत सीस भ०॥४॥ ताम परं-पर चंद्रकुले भरारे, श्रीकोटीकगराधार । श्रीउद्योतन स्हि सुहामणारे, त्रथरी ना खं मझार भ०॥५। वरधमान पम्मुख शिष्प जेहनारे, पारअशी परमाण। गच्छची-राशी प्रगर्दयात्यां धकीरें, जाणे चतुर सुजाण भ०॥६॥ तास शिष्यजिनेश्वरस्रिजीरे दुर्लभरायसमक्ष। खरतर विरुद्द लयो ते रुवंडारे, मठपति जीतप्रतक्ष भ०॥७॥

नवकंनी वृतिकारक दीपातारे,श्रीश्रभवदेवसृरिराय । श्रीजिनव्य मजिनदर्भगव्य प्रतिरं श्री जनद्र गल अ-माय भ० ।८॥ प्रमन्नभावक इगा र चत्रुमें थयारे,स्थाना-रजगुणवत। शुद्धममाचारी जग तेरकं,रे सुणिहंगीपत हाय सन भाषा शा शहर पर पाय अनुक्र मेरे, श्रीजिन-लाभसरीण । ताम पट,धर जगमां परगड,रे, श्रीजिनच-द्रमुणीवा भ०॥१०॥ तेज्ञानापे जाती दिनमणीरे, कोम्बवनों डिजनित । मभीरमुण सामाने जीतीय रे. स्र सेव दिनरिन भागी ११॥ स्वाद एद जितवर्षे बखा-शानारे नयनिक्षपविचार।भगपदा थ ऋति विस्तारतारे, थावे भवि हिनकार भ० ।१२॥ ज्ञानपूर्वक क्रियासाधे जे भलीरे, जिनवाणी छारुस । एहने हे बोरे क्यू सुना-भारे थाय सफल भवतार भः॥ १३॥ स्रतस्त्रां। टाबांबलब्रादरेरे कोइनर मृद्धामार। ए उख णोसाची भन कोरे, लहि एवा गराधार भन्। २४॥ नामधारक आ-चारज हे घण रे पचमरालम्झार । विण हम्म कर्ताखोल-गर्भा को नहिरे नो परेतारगाहार भगा१आ बार कला-मण्यकमल पसाम्थारे, कम्हस्दर्भाग सामा। जे मां-नमी ते सुरानित पामर्सनं, पातिकनी दारि हासा भ० ॥१६॥ इति बचावो ॥

॥ वधावो ॥

मोतिगडे मेह बरसीयो, साविद्याज हुवो आणंद पूज पंचार्था विहरतां, नासे सौभाग्यसुरिंद् ॥ जिनह-र्षस्रिंदनो नंदरे,सद्गुरुसुरतहनो कंदरे। सुखसोहे पून-मचंदरे, सर्खी मोतीडे मेह॰ ॥ १ ॥ क्षांतिगुणेकरीशो-भता,सचि पंचमहाव्रत धार। वरछतीसरुगो सदा,विच-रे जे निरतिचाररे॥ रशीया जे पर उपगाररे, उपशामर-सना भंडाररे। पाले पंचाचाररे, सर्खा मोती०॥ २॥ मेघनणीपरे गाजना सिख मीठी जेहनी वाण॥ भाप तरे पर तारता,गुणगण रतनारी खाणरे सह आगमना जेजा णरे, तपेजिम झलहलतो भाणरे। तेहना अतिशयबहु दिण्णाणरे,सुखी मोती०॥३॥ परतिम्ब सुरतह सारखाः सखी इण पंच म कालिकालरे। माथे जेहने शोभतां, सुनि-वर जीसा मोतीमालरे। केइ थिवरने केइ बालरे, बंदीजे तेहत्रिकालरे । सखी माती०॥ ४॥ सूरीसकलसर-शेहरो, सखी खरतरगछिक्षणगाररे। जैनधर्भदीपाधता, महिमा जेहनी ऋपाररे। सह संघ तणा सिरदाररे,सखि सुमति तणा भरताररे। जेहनेपणमें नित नरनाररे, रखी मोती ।। ५॥ सूत्र अरथ विस्तारता, सिख देता धर्मो पदेशरे।दान शीवल तप भावना, धारे भावनासु विशे-घरे। इत्यादिक अर्थ निशेषरे, गुण अरू पर्याय प्रदेशरे।

सखी मोनी॰ ॥ ६ ॥ स्त्यानां श्रीजिनराजना, सखी प्रामुनवचन विलामरे। क्षण में वर्मम्म्हनो सखि निश्च होवे नागरे। थाये निंज ज्ञान प्रकाशरे,वहै याल स्युर-सहवासरे। करना निजन्द सुभापरे, सखी मोती०॥॥।

॥ नणद्रस्विंद्स्री दे । चास्र ॥

जिनकासन जयकरी,जगगुरु गोतमगणधारी रे. सहीगां गुंहली करो गुंहली करो । गुरुक्तेंगे गुरु भक्ति मणे उछरंगरे सहीदां० ॥ विचरनां सुनिराया, राउग्र ही नगरी आयारे सही० ॥ १॥ ५ंचेद्री विषय निवारी, नवविध ब्रह्मत्रत धारीरे सही० ॥ च्यार कपायक्तं टाले, पचमहावृत सुघा पालैरे मही०॥ २॥ सेवै पचाचार, धरे पंचसमित महहाररे महीका त्रिण्ताहीस विल हाजै, इम छत्रीम गुण गुरुराजैरे सही० ॥ ३॥ घरमा धरमा गुणसगी, द्याद्वातम अनुभवरंगीरे मही० इत्सर्गने अप-षाडी, यहनयगम "सगप्रवाद्गरे सही० ॥४। मोक्षमारग उपदेशी, धरै घरमध्यान शुरूलेशीरे रूही०। रतन्नय अभ्यासी, भविजन वितकमल विकाशीरे मही । ॥६॥ श्रेगिकनरपति आवे, गणधर धंदन शुभ भादेरे सही।। चेलणा म्यस्तिक पूरे, मोहतिमा भरमने चूँरे सही० 🏿 ६ ॥ निसुशी गुरमुखवाणी, समकिन निरमल की

॥ वधावो ॥

मोतियडे भेह बरसीयो, सालिग्राज हुवो आणंद पूज पंचार्या विहरतां, नामे सीभाग्यसुरिंद् ॥ जिनह-र्षस्रिंदनो नंदरे,सद्गुरसुरतरना कंदरे । मुखसोहे पून-मचंदरे, सर्खी मोतीडे मेह॰ ॥ १ ॥ क्षांतिगुणेकरीशो-भता, सचि पंचमहावन धार। वरछतीसरुणे सदा, विच-रे जे निरतिचाररे॥रशीच्या जे परउपगाररे, उपशामर-सना अंडाररे। पाले पंचाचाररे,सर्वा मोती०॥ २॥ मैघनणीपरे गाजना,सखिमीठी जेहनी वाण॥भाप तरे पर तारता,गुणगण रतनारी खाणरे।स्षु आगमना जेजा णरे, तपेजिम झलहलतो भाणरे। तेहनो छातिशयबह विष्णाणरे,सखी मोती०॥३॥परतिख सुरतर सारखाः सखी इण पंचम कलिकालरे। माथे जेहने शोभतां,सुनि-वर जीसा मोतीमालरे। केइ थिवरने केइ वालरे, वंदीजे तेहित्रकालरे । सखी माती०॥ ४॥ स्रीसकलीसर-शहरो, सखी खरतरगङ्खिणगाररे। जैनधर्मदीपाधता, महिमा जेहनी ऋपाररे। सह संघ तणा सिरदाररे,सिख सुमति तणा भरताररे। जेहनेप्रणमें नित नरनाररे, छखी माती ०॥ ५॥ सूत्र चारथं विस्तारता, सखि देता धर्मोः पदेशरे। दान शीवल तप भावना, धारे भावनासुविशे-षरे। इच्यादिक आर्थ निदोपरे, गुण ग्रम पर्याय प्रदेशरे।

गुण करीये केता मुझे जान नहि एता। शिष्पादिव स्मे परविष्या, स्तनअमोलख देतारे आज० ॥ ८ ॥ खरतरगच्छमे स्वि इव राजे, जयजयवारवःताया। कृताच्यम्बिवर कृतायी, दिष्ट्यान्द्गुणगायारे ऋष्ज० ॥ ६ ॥ इति गहुंली

॥ दं ॥ श्रय चउमम् लिए ने

प्रणमु पद्पक्त पासरे, जम न में हीहदिहासरे गुणगण गाया उलाम, महू संघ बीनवे गुरुजी तक्षतेरे, दइ दरमन पावन वरिया ग्रामने मह० ॥१॥ ग्रामा टमासे अन्ने वधार्यारे, शिष्व रंगाथे चार स्व नारे, सह स्वनणे मन भाव्या महु०॥ २॥ भूजनगर माहे क्राधवारीरे, सेठलाहुबार हे मने हारीर ते तो बाट जोनाया हमानि स्ट्र ॥३॥ श्राहणमःसे सुयम'त जामं रे, मह मच मल्या गुणराम रे, भगवति मुणवा रह रागी स्टू०। शा वर्ला अधिक छाधिक छाउव थापरे, श्रांसदने हरप न मापरे, तिहां आनद आनद यरताथ स॰ ॥ ५ ॥ तुमे ज्ञानःतन भद्राररे, दरवा घाम पर उपगाररे, धजा नाधाराना आधार स**्**रही भादग्वो भल परे ग जेरे गुरुगजना ठकुराह छ जेरे. तुमारी बाणी गंगापूरे गाजे सन् ॥ ७ ॥ हुसे र गयी ंनहि रगायारे, नहि सेप रपुधी वंघायारे, महामोहधी निह् लिपाया स० ॥ ८॥ पांचे इंद्रि सुभटथी सुरारे, अःलम विक्रणाथी द्रारे, चार चोर कर्या चकचुरा स० ॥ ९। आसु मन्त्रेती चाप वैराशीरे, थया कंचनका-मना त्यागीरे. जेनी मुक्तिपुरीसुं लय लागी स० ॥१०॥ धनमाल अने राजधानीरे, महासंकट आकरी जानीरे, तुमे छोडी दुनीयादिवानी स० ॥ ११ ॥ तुम विद्या वेलर्डाये विंटायारे, जेनी कल्पतरुसम कायारे, एती सुमनाजलयां विंटाया स्०॥ १२॥ ज्ञानदोरीथी मन-कनी बांध्युरे, तीन तत्व रमण मन साध्युरे, जिहां समिकत अद्भृत लाध्युं स०॥ १३॥ तुमे शास्त्र सोधी रम लीधारे, महामाह रिष्ठ वस कीधारे, तुमे अनु मत्र प्यालो पीघो स० ॥ १४ ॥ तुम आणा मदा जिर धरसुरे, नपनियम विशेषे करशुरे, वलि विनय मद्। ग्रनुपरसुं म० ॥ १४ ॥ कृपाचंदजी नाम तुम-रोरे. प्रतयाध कर्यो यहमारारे । प्रयवंतने लागांछो प्यारो स्वा १६ ॥ मुनिजीनी देशना यह सारीरे, भवि जीवने लागे छे प्यारीरे, अतिबाध पाम्या नरनारी मा । १९॥ मुनावर संयम स्रारे, मुनिकियामाहे प्रारे । परिणामे मु नर्जा चातिम्हा स्० ॥१८॥ मुनि-जीए लाभ घणेरा लीयारे, श्रीमंघना कारज सीधारे, उपगार महासुनिजाए कीया छ० ॥१९॥ सु.नजीनं

नाम चणुं सार्करे । क्वाचंद्रजी लागे प्याकंरे । जिनशा -सन घणुं अजवाल्यु स० ॥२०॥ जेह सुनीवरता गुण गासेरे । प्राणी पापरहित ते धासेरे । वली शिवपरि नचरीये जासे स० ॥२१॥ चतुर्मास हणी परे गायोरे, चतुरविध श्रीसघ सवायोरे॥ तिहां आनंद मगल बरतायो। स० ॥२२॥ इति चोमासो सं०॥

विचरता गामोगाम, मुनि आब्धा एणे ठाम। आ-हेलाल, षह परिवारे परिवर्षाजी ॥१॥ मारवाड **देश**ल-न्वज्ञ, बीकानेरसंवत्र ॥ आहेलाल ॥ माता ध्यमराहे जनमियाजी ॥२॥ पाले पत्र स्थात्रार । छकावजीव प्रतिपार । चाहेलाल सुमनिगुपतीसु मालताजी ॥३॥ करता उग्रविहार, आच्या करूछ मझार । ब्राह्मेलाल महेसर पधार्याजी ॥ ४ ॥ देशविदेशना लोक,वांदवा ष्पावे थोक। ष्याञ्जेलाल। नचगम प्रश्न प्रज्ञताजी ॥५॥ धांने मञ्जिसद्धांत । नदीसञ्ज महत् ॥ आहेलाल । सं-देह भागे मह तणाजी ॥ ६॥ चतुर चेला तुम च्यार, विधा तणा भटार । ग्राहेलाल । गुरुग्राणा शिरधा-रताजी ॥॥।गन्ली करी चित्तलाय, पामी झाप पसाय च्याङेखाल । हणीपर भेवककरे बीनतीजी ॥८॥ इति ॥

॥ पुन गहूंळी ॥

जीर मारे प्रणिष्ठं श्रीजिनवर्याय, मुकी मननी

विसद्ति गुल्मुख निर्खे । चाद्यक जिस भविजन हर है ॥ थां ०॥ ७॥ जुस उगणीं सं चमालीं सं, फागण सुदि आति मन हीसे ॥ थां ०॥ ॥ श्री नागपुर नगर सुहावे । चारित्र सुगुरु मन भावे ॥ था०॥ ६॥ सह संत मिला बहु भावे । कृपाही से वंकित पावे ॥ थां ०॥ १०॥ इति॥

॥ पुनःगहुंकी ॥

हो प्रीतमर्जी प्रीतकी रील अनीतकरी चितधारियै ए**देशी।। सुण सा**हेली भगवती म्त्रनी वाणी,अवण रस पीजीयै। गुरु गुगाबंता बंदीने, नर भवनी लावी लीजिये॥ गुरु उपगारी प्रवहण सम,संसार समुद्र तरी जिये।।सुण -॥ १॥ पंचम अंगे भगवती जाणी, विखिवाह पहाती त्रक द्याणौ । बीर जगत गुरु वखागाँ ॥ सुरा ॥ ३॥ षद् हृद्य जिहां वरवाण्या है, साव भंग निक्षा जा-ण्या छै। नय द्विध सप्त कर्रा आण्या है ॥ सुरा ॥३॥ सुप खंत्र एहनो एक कहीयै, ज्ञातक इकतालीस सर. द्हियै। एह सुग्ता क्षोताजन मोहियै॥ सुण॥ ४॥ पंचांगी एहमां छाजे, शुद्ध परंपरने काजै। वर्ला जीन त्रणा डंका बाजै ॥ सुण ॥५॥ सुंद्रवर संख्यित वर्णी, मधुरे स्वर गावै वरतरूणी। करै गहुंली अनुपन सन हरणी ॥ सुण ॥ दं ॥ द्रव्य भाव पूजा की जै; ज्ञान

भक्ति करी इच्य खरचीजै। कृपाचन्द्र शिव सुख लीजै। सुण ॥ ७ ॥ इति ॥

.॥ गहुंली ॥

महीपढ म्हारी सदगुर आव्या, आज वली आपग्र जहये रे ॥स∘॥ वांद्वा रे भहांरा राज ॥ 2 ॥ स् ॥ देश विदेश मभार, ग्राम नगर पुर रुडा र ॥ स॰ ॥विचरतारे महारा राज ॥ २॥ म॰॥ पंचाचार प्रवीण, त्रिकरण सुद्धे मंजम रं॥ स॰॥ पालता हो महाराराज ॥३॥ म०॥ एपणाटोप बतालीस,सुब्रेजिनवर भाल्यार ॥ मणी रालता रे भहारा राज ॥४॥ मणा पटकाचा प्रतिपाल, मुनिवर मारग साचारे॥ सः॥ उजवालता ने महारा राज ॥५ ॥ स॰ ॥ गीतारथ गुरु राज, सूत्र सिद्धांत बखागै रें॥ स०॥ भली परे हो यहारा राज ॥ ई ॥ स० ॥ वार्ग्या गहिर गभीर,जिब वरसाले गाज रे॥ स० । जलधर रे महारा राज ॥ ७ ॥ म॰ ॥ आज भला सुविराण, एरवा सुरगुरुने भेटण रे ॥ स॰ ॥ उमगसु रे महारा राज॥ 🗆 ॥स०॥ गोतम ने अनुहार म॰ जगम सुरतक सारिखा रे ॥ स० ॥ सख करो रे महारा राज ॥ ९ ॥ म० ॥ गह गुर नो मजोग, कृपा करीने मिलजो रे ॥ म० ॥ मुझ भगी रे महारा राज ॥ १० ॥ स० ॥ इति ॥

आमलो जीरेजी।। जीरे धारे पामी तास पमाय, ग्वरतरपतिकुपा करो जीरेजी ॥ १ ॥ जीरे मारे पनरमा श्रीजिनराय । धर्मनाधर्जी सुखकरो जीरेजी ॥ जीरे मारे बीकानेर उत्पन्न, शुरु कुलवासे दिनमणीजी-रेजी ।। २ ॥ जीरेमारे रलनज्ञवनिधान । माता ग्रमरादे जनमीया जीरेजी। जीरेमारे ग्रहगणमां ज्योतीसार,सुर-जकला अतिसारी है जीरेजी ॥ ३॥ जीरेमारे मुनि परिवारमां नेम ॥ गुणसतावीसे शोभता जीरेजी। ॥ ४॥ जीरेमारे मांडवीनगर मझार ॥ श्रावक लंक सुखीत्रा वही जीरेजी। जीरेमारे सुगुमचरगा पसाध, रागी सोभागी करे विनती जीरेजी ॥४॥ जीरेमारे न-रनारीना बहु वृंद, आवे वह आडंबरे जीरेजी ! जी-रेमारे नववाङ राजी सणगार॥ माग्यकवाइ गावे गहुंली जीरेजी ॥ ६ ॥ जीरमारे आतमबाजोठ पीठ, कंकुबाई पूरं साथीयो जीरेजी। जीरेमारे समिकत श्रीफलहाध । हुलि लुलि लीये लुज्जणा जीरेजी ॥ ७ ॥ जीरेमारे धंघह खोल्या गार । विचविच गुरुसुख जोवती जीरेजी। जीरेमारे देशना अस्तधार, शोभागी शोभा रस लीए जीरें जी ॥ ८ ॥ जीरेमारे पत्नवणा सूत्रनी वात । स्याद्बाद रचना करे जीरेजी। जीरेमारे खरतरमञ्

सिग्रगार । पुनिकृपार्वद्जी मया करो जीरेजी ॥ ६ ॥ जीरेमारे जगमें तीर्थनाथ,नीर्थवंदावो कृपा करी जीरेजी । जीरेमारे मारवाड-देशना लोक, विनती करे बहुपरे जीरेजी ॥ १० ॥ जीरेमारे पेश्रकरण खरदास। पाली तग्गो चोमासुं पधारजो जीरेजी । जीरेमारे खमने डज-मग्गाना भाव।ते तुमे आवे नीपजे जीरेजी ॥ ११ ॥ जीरेमारे विनती मानो खम एक,लाभ लेशो तुमे घणा जीरेजी । जीरेमारे पामी खाप पमाय । आणदमुनी जे तप नपे जीरेजी ॥ १२॥ जीरेमारे कुशलस्टि पसाय, सम खामा फली घणा जीरेजी । जीरेमारे सावा सु गुमरे पमाय, घरघर मगल वरनीया जीरेजी ॥ १३ ॥

॥ गहूंछी ॥

मृण्यामें स्टगुरु म्हारा,थांरा वचन सुहामगारि॥
म्हारागजा। यांरी वाणी मनमोहनीरे माहाराराज०॥१॥
थारी वाणी समृतव्यनि गाजे । जेहथी स्व पातिक
भाजे थां०॥२॥ गुरु पाचे समिते मिमता। येनो तीतुं
गुपनिय गुपता ॥था०॥३॥ गुरु पंचमहात्रत्र पाले।
एतो स्वेतपक्ष अजुवाले॥ या०॥४॥ गुरु धर्मना धारक
एतो हुगैतिना निवारक ॥थां०॥५॥ गुरु वचनामृत रस्त
पीनो । एनो श्रोता सुण मन भीनो॥ थां-॥६॥

विसदिव गुरुमुखं निरखे । चालक जिस भविजन हरखे ॥ थां०॥ ७ ॥ जुम उगणीस चमालीसे, फागण सुदि ग्राति मन हीसे ॥ थां० ॥८॥ श्री नागपुर नगर सुहाँवे । चारित्र सुगुरु मन भावे ॥ था० ॥६॥ सहु मंग्र मिली बहु भावे । कृपाहीसे वंकित पावे ॥ थां० ॥१०॥ इति॥

॥ पुनःगहुंली ॥

हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीतकरी चित घारिये एदेशी।। सुण साहेली भगवनी स्त्रनी वाणी, अवण रस पीजीयै। गुरु गुगावंता बंदीने,नर भवनी लावौ लीजियै॥ गुरु उपगारी प्रवह्णा सम,संसार समुद्र तरीजियै।।सुण -॥ १॥ पंचम अंगे भगवती जाणी, विखि विवाह पहाती प्रम आणी । बीर जगत गुरु बखागाँ ॥ सुगा ॥ ३॥ षद् हृद्य जिहां वरवाण्या है, साव मंग निद्धेपा जा-ण्या छै। नय द्विध सप्त करी आण्या छै॥ सुगा ॥३॥ सुय खंत्र एहनो एक कहीयै, शतक इकनालीस सर. दृहिये। एह सुग्ता अति।जन मोहिये ॥ सुण ॥ ४ ॥ पंचांगी एहमां छाजै, शुद्ध परंपरने काजै। वली जीत त्रणा डंका बाजै ॥ सुण ॥५॥ सुंद्रवर सखियन वर्णा, मधुरे स्वर गावै वरतरूणी। करे गहुंली अनुपन मन हरणी ॥ सुण ॥ दं ॥ द्रव्य भाव पूजा कीजे, ज्ञान

भक्ति करी द्रव्य खरचीजै। कृपाचन्द्र शिव सुख लीजै। सुण॥ ७॥ इति॥

.॥ गहुंली ॥

महीवल म्हारी मटगुरु आब्धा, आज चलो आपग् जहये रे ॥स०॥ बांद्वा रे भहांरा राज ॥ रे ॥ म॰ ॥ देश विदेश मभार, ग्राम नगर पुर रुड़ा रं ॥ स॰ ॥विचरतारं महारा राज ॥ २॥ स॰॥ पंचाचार प्रवीण, विकरण सुद्धं राजम रं॥ स॰॥ पालता हो महाराराज ॥३॥ स०॥ एपणाराप वतालीस,सुत्रेजिनवर भाल्यारे ॥ मन्। रालना र महारा राज ॥ सन्।। पटकाचा प्रतिपाल, मुनिवर मारग साचारे॥ स०॥ इजवालता ने महारा राज ॥५ ॥ म॰ ॥ गोतारथ गुरु राज, सब मिद्रांत बखागे रे॥ म०॥ भली परे हो महारा राज ॥ ई ॥ स० ॥ वार्गा गहिर गभीर,जिब बरसाले गाजे रे॥ स० । अलधक रे महारा राज ॥ ७ ॥ स॰ ॥ आज भलो सुविराण, एर्वा स्टगुरुने भेटवा रे ॥ म॰ ॥ उमगसु रे महारा राज॥ ८ ॥स०॥ गीतम ने अनुहार स॰ जगम सुरतक सारिखा रे ॥ स० ॥ सख करो रे महारा राज ॥ ९ ॥ म० ॥ एह गुर नो मजोग,कृषा करीने पिलजो र ॥ स० ॥ मुझ भगी रे महारा राज ॥ १० ॥ स० ॥ इति ॥

॥ गहूं छी ॥ राम गोपी चंद

सेरे संतगुरूजी, अधको चीमासी मेरे देशमें, से । देशदेश में भाप पधारे, करता जन उपगार ! खबकी हमारी यही खरज है, उतारो भवपारजी ॥मै०॥ १॥ पंचमहाव्रतधारताजी क्या, करता उग्र विहार। ईयी समितिको पालताजी क्या, देते ज्ञान अपारजी ॥ से॰॥२॥ कोध मन माथाको जीता छोडा सब संसार। सुमति गुपतिको पाललेजी क्या, करते पर उपगारजी ॥ मै० ॥ है॥ दोष वंतालीम टालकेजी क्या, हेते उगप ं ब्राहार। पांचदोष मांडलकेछोडे, करते चाप आहारजी ्या से ।। ४॥ बाणी आपकी ऐसीवरसे, ज्युं ऋसृत के वैण। स्वाद्वाद् आगमसं पूरी, जैसे शब्दसे एनजी ॥ मे० ॥५॥ सुरि हमारे कृपाचन्द्रजी, जाने सब संसार। चरण आपके सेवकेजी क्या, उतरे भवसे पारजी ॥ मे॰ ॥६॥ संवत उगणीसे त्रियासीजी क्या, आवणभास मकार । गहूं ली गावे शिवसुखपावें, पहुंचे मुक्ति महार जी ॥ मे ॥ ७॥ इति गहुंली

॥ गहूंछी ॥

॥ राग फूलझडीकी चालमें ॥ गछपति झावियाजीहो,केसहियांचालो गुरुने वां- दवा, कांईसेव्यांसे सुखधाय ॥ गछपति० ॥ स० ॥ मब्धर देशके मांयने,एतो चासुंनगर सोहंत ॥ ग० ॥ स०॥ वाफणा गोक्ने जवतर्या, एतोमेघराज जसवंत ॥ ग०॥ स०॥ १॥ मातस्रमरादे जनमिया, एतो उगणीमे तेरे साल ॥ ग० ॥ म० ॥ युक्ति अमृत ब-धनामृते, ग्रम पायो धर्मरसाल ॥ २ ॥ ग० ॥ स० ॥ छतीमेकी मालमें,गुरु लीयो संजनभार ॥ ग० ॥स०॥ सब सिद्धान्त मन धर्षा, एतो स्यादबाद मन धार ॥ ३ ॥ ग॰ ॥ म॰ ॥ नय भंगाने ओलव्या, एतो पट्ट दर्भगा ना जाण ॥ ग० ॥ म० ॥ कठिन क्रियाने पालता यर्ला,पच सुमित मन क्राण॥ ४॥ ग०॥ स०॥ याहे भेदेतपतपे, एता परकाय रखवाल ॥ ग०॥ स०॥ भः भइलमें विचरता,गुरू फरता मुनि प्रतिपाल ॥५॥ ग०॥ स० ॥ उगनीसे यहत्तरे,एता शहर यम्बह मझार ॥ ग० ॥ स० ॥ आचारज पदवी लही,तय हरप्यां सघ धाषार ॥ ६ ॥ म० ॥ म० ॥ ग्वरतर गर्छमं मोभता, एतो कृषाचन्द्रस्रि गुगाग्याण ॥ ग० ॥ स० ॥ ग्राम नगरपुर विचरता,प्रधार्या जैञाण ॥ ७ ॥ म० ॥ स० ॥ यात्रा करी उमेगसु,ण्तो मेवचतुरविध आस ॥ ग० ॥सः॥ लाभ चातुपमजागाके,गुरुकीयो चातुरमाम।ग०।स०।८। सुरी श्रीजिन भद्रनी,खोडाच्या ज्ञान भटार ।गणस्का

तांडपत्र पुरतंक तगां, करायां जीण उद्धार।ग०।मा०। ।। ग० ॥स० ॥ प्रविपुन्यपसायथीं, एतो मिलियो गुरु सुखकार ॥ ग० ॥ स० ॥ लोक मिहिं निर्धि चन्द्रमा एतो शुभ संवत् सन धार-॥ग०॥स०॥१०॥ खासे चमके बीजली एतो आवन पेली तीज ॥ ग० ॥ स० ॥ गुरु गुण गाया भावसुं एतो वत्यीं मंगलवीज ॥ग० ॥ स०॥ १९ ॥ इति गहली ॥

ा अथ गहूंली॥

सदग्दंजी नितंबंदिये, एतो जेशलमेर पधारथा हैमाय । संघ मिली वधाविषा, एतो चैत्य अनुपम बंद्या हेमाय ॥ स० ॥ गु० ॥ १ ॥ मत्रमाहन गुरुजी मिल्या एती, गुरुसेचा सुखकारी हेमाय। देशना देता भव्यने एतो, बोध बीज दातारी हेमाय ॥ स० ॥ गुरु ॥ २ ॥ पंचमहावत पालला एनो,छकायजीव प्रतिपाले हेमायः सात भयोंने नियारता, । एतो आडमदोने गाले हेसाय ॥ स् ॥ स् ॥ ३॥ नवविष ब्रह्मने पालता, एतो दश्चविध यतिधर्भ पाले हेमाय । अंग उग्यारे जागा है. एतो बारहविध तप माले हेमाग् ॥ स० ॥ गु० ॥ ४ ॥ देशविदेशमां विचरता, एतो मरुधर देशपधारया देभाय, शिष्वादिक परिवारसं, एतो यात्रये कारज सार्वा हे-नाच ॥ स॰ ॥ गु॰ ॥ १ ॥ उगणीसे वेपांसीचे, एतो

संब्धक्ती ग्रयमाया बेमाय स्वाचंद्रस्टिराजना एती सुखसागर सुस्वपाया बेमाय ॥ स॰ ॥ ग्र॰ ॥ ६ ॥ इति गङ्क्षी संवुष्ण

॥ गहुंछी ॥

॥ बात पणीहारीका ॥

दज्ञो दंगा सुखी सांभक्षो मोरी सजनीरे को,सुणती पातिक जाय बालाको ॥ १ ॥ बीरजिनंद समोसरयाः, मो०॥ राजग्रही प्ररामाय वालाजी ॥२॥ श्रेणिक वेलणा तिया समे मो० बार परवदा सार बाला छो ॥३॥ चरण कर्या बलाणीया।।मो० ।। स्वर्ध कहे सुविचार बाक्रा छो ॥४॥ सुवर्षभ दोव सति भता ॥ मोरी ।। अध्य-यन तेबीस सार बाल को ॥५॥ मत खंडया पांखडीना ॥मो०॥ तीनसे तेसठ बार बाला छो ॥६॥ **गुरुमुक्**स सली मैं सुरायो ॥ भों॰ ॥ झानंद झंग न माप बाला छो ॥७॥ भावधकी मैं माद्यों ॥ मो॰ ॥ भातमसूख लह है।य बाह्य ह्यो ॥८॥ प्रन्यसंघोगे मुजे मिल्यो ॥भो०॥ सदग्रह तणी संयोग बाला जो ॥ ६ ॥ अवंद्राटवी हुवे नहिं फिरं ॥ मो० ॥ मृरिकूषाचेंद्र सेष बाला जो ॥१०॥ उगणीसे तेंगांसीये ॥ मो० ॥ जेशार्वे गहसार बाक्षा ॥ ११ ॥ भावण मंत्रिने में शुप्यो ॥, मी॰ ॥ हुँज ध्वल बुधवार वाला छो ॥ १२ ॥ इति गहूं ली

॥ अथ गहुंळी॥

चाल—सांतिप्रभुवीनती इक मोरीरे

स्रीश्वर बीनती, एक मोरीरे, मैं बाहुं सेवा तोरी ॥ सरी ।। १॥ स्वामी देशविदेशथी भाषारे,में पूर्वपु-न्यथीपायारे 🕩 नरजनम सफल कहाया॥ सुरी०॥२॥ पंच आश्रवना स्वामी त्यागीरे, पंच संबरधी रह लागीरे । स्वामी-ज्ञानिकवावडभागी ॥ सूरी 🍳 ॥ ३ ॥ सहि अंगडपांगना ज्ञातारे, नयनिक्षेप भंग सुहातारे । सुरि नंदित्रमुचोम दांता ॥ सूरी० ॥ ४ ॥ सूरि आठ मदना त्यागीरे, चाठ बुद्धि तगा स्वरि रागीरे। आठ कम तृणा स्वरित्यामी ।।सू०।।५॥ गुरुगुण छत्तीसे राजेरे, तरणिपरं तेजे छाजेरे। मेघ तणी परे सूरि गाजे॥ स्रो॰॥६॥ डगनीसे तेयांसी सुखकारीरे, श्रावग्-मास सुद् मनुहारीरे । कृपाचंन्द्रसुरि षळीहारी ॥ सुरी ।। ७॥ इति गहुं ली॥

ं ा। अथ-गहुँ ही ॥

॥ कर्मतणी गति जानिये ए चाला।

्रज्ञेग भगवती में सुर्यो, वीर जिनंद देखांण। सु-

नंतां भातम रहसी, थाये कोड कल्याण । विस्ति ।। १॥ गौतमखामीने कर्पा.पश्च छत्तीस हजार । दे गौतम प्रसु इम कहे, वर्धमान दरबार ॥२॥ अग० ॥ सुयखंध एक अति भलो, शतक इकतालीस जाण। उद्देश दश सहस्र छे.पद दो लख मन च्याण ॥३॥ च्याप ॥ ज्ञान भक्ति करी भावसुं, पूजन विविधप्रकार। गौतम नाम इब्प होकीने, साहमीबत्सलसाँ ॥ ४ ॥ श्रंगणा मोति माणक स्वस्तिकरो,पूजो ग्रंग उदार । इच्यभाव भक्तिकरो, सिवस्रखनो दातार ॥ ४ ॥ अंग० ॥ अंग संखी ए गुरुमुखे, सुणतां पाप पुछाय विधिधी ए आ-राधिये, भवमां न रहाय ॥ ६ ॥ अंग॰ ॥ ए सृष्ट्र व-इमानथी, निसुणी तजी प्रमाद । शृद्ध समिकत-तेथी जवजे, परभवमें सुखखाद ॥°७ ॥ भ्रम० ी स्-रिक्रपाचन्द्र प्रण्मिये, प्रहक्तिने सार । सुखसागर शुण गावतां, पामे भवनी पार ॥ ८ ॥ द्यंग० ॥ इति गहंली ॥

॥ गहुंली 🕕

॥ श्रीसीमन्घर सार्टिमा, बीनतडी अवधार लॉल-रे, ए बाल ॥

त्रिशासानंदन वंदिये, धानुषम रूप उदार-लाल्द

। समबसरख्यां वेसीने, चंडविह धर्म दातार साहरे ॥ १ ॥ जिश्रासाः ॥ पहिलो गह रजत तनो, सोवन कांगरे होय छालरे। बीजो गह स्रोना त्रागी,रतन कां-गरे जोय लातरे ॥ २॥ त्रि०॥ तीजो गढ रतन तणो, अणि कांग्ररे मनोहार लालरे। अदी गाउ ऊंचो कहाो, एक योजन विस्तार लालरे ॥ ३॥ त्रि०॥ गौतमादि गण्धराः चबदे सहस्स ऋषिराय लालरे। लिब्ध सिद्धि दापक सदा, प्रसमीजे तसु पाय लाहरे ॥ ४ ॥ ब्रि॰॥ सती चेलना तिया समे, मोतियन चोक पूराय लालरे। राजगृही उचानमां, समदसरचा जिनराय लालरे॥५॥ त्रिः ॥ सुरिक्रपाचन्द्र सेविधे, खरतरगछ सिर्यागार खालरे । सुखसागर गुण गावतां, पामे भवनो पार हासरे ॥ ६॥ त्रि॰॥ इति गहुंसी

॥ अथ**ानहुं**ली ॥

वर्ष पजुसनाद्याविया रे, जानन्द द्यंग न माय स-लूणा। जिम जिम ए पर्व सेवियेरे, तिम तिम पाप पुलाय सलूणा।। १॥ पर्व०॥ इन्द्रचन्द्रादिक सहु मिलीरे, दीवनन्दिसर जाय सलूणा। पजुसण चछच्व करीरे, द्यापो स्थानक खाय सलूणा।। २॥ पर्व०॥ ग्रामारी पदह चजवायनेरे, देवो दृश्व खुपार सलूणा। धन ख- रचो बहु भावधीरे,कातमने हितकार सलुणा ॥ ३ ॥ पर्वे ।। स्राश्रव पांच निवारीनेरे,कवाय करो वली दूर सञ्चणा ॥ सामायिक पौषध करीरे, जिन पूजामें इंजुर सलुजा ॥ ४ ॥ पर्व० ॥ शीयल सुरगी पालीनेरे, अ-वभवमें हित्कार सल्लुणा । सीता सुभद्रा सती परे,रं जगमें जय जयकार सलुगा ॥ ६ ॥ पर्व० ॥ कमेनिः काचित जे कर्यारे, तपथी ते क्षय जाय सलुणा ॥दृह-प्रहारीनी परेरे, केवछज्ञान मृहिवाय सल्ला ॥ है ॥ पर्वे ।। भावना भावो भावधीरे, पामो भवतणा पार सलुणा ॥ मरुदेवीमाता परेरे, केंग्ल सहमी अपार सल्णा ७ ॥ पर्व० ॥ खरतग्गञ्जना राजियारे, स्रुरि-कृपाबन्द्र थाय सलुणा। चरग्रकमल तस्र सेवीने रे, सुखसागर गुणगाय सलुणा ॥ ८ ॥ पर्व० ॥ इति गहुंखी ॥

॥ - गहुंछी ॥

बासुप्रयस्वामि चंपाना वासी झंतरजामि सिव-पुरवासी एचाल॥ ग्रुभपवेको सेवो वांछित लेवो कहेर्नेहें भगवान । सुनो मखीरी चाये पज्रसन वृजन करो जिनराज। इन्द्र इन्द्राणी सुर सब मिछीके गातेंटें संगलसाजरे,

॥ १ ॥ शुभ० ॥ तेलेका करना पापका हरना कल्प श्रवण सुखकार, ज्ञान पूजनसें दान देवनसें उतरोगे . भवपाररे ॥ २॥ शुभ० ॥ खमतखामना संघर्से करना संवत्सरी दिल धार,साहमीवत्सल प्रेमसे करना कहते हैं जगदाधाररे ॥३॥ शुभ० ॥देवलोकसं स्वामि चवके माताके गर्भमें आये,सुपनों को देखा ऋ।नन्दलेखा जीव नके सुखदायेरे ॥ ४ ॥ शुभ० ॥ गज वृषभ सिंहदेवी द्वाम सिस दिनकर ध्वज्वज कुंभ जाण, पद्मसरसागर े विमान रहनराशी, अग्रिशिखा मन ग्रानरे॥ ५॥ शुभ०⊪कंतसें पुळे केंसेहै सुपने मुजको कहो सुखकार, सुपन पाठकोंको बुलाके पूछाहोगें जग्रधाररे ॥ ६ ॥ शुभ्र । दानोंको देवं तीर्थोंको सेवं जगजनका उद्धार, अानन्दुम्गल होत नगरमें वरते जयुज्यकाररे ॥ ७॥ द्युभ० ॥ इति गहंली

ा अथः गहुंली ॥

्यूजश्रीकृपांचन्द्रस्रि वीनतडी अवधारो, सद्गुरु अमतग्री ॥ त्रांकडी ॥

सरस्वती को समरणकी जे गुरु गुगामात्र बुद्धिदी जे गुरुभक्तिरस अमृतपी जे ॥ पूज्य ॥ १ ॥ संवत उग-गासिं तेरे वरसे चामुनगरे जनम्या ग्रुभद्विसे छत्ती से

दीक्षा मनहरपे ॥ पूज० ॥ २ ॥ शहर मुंबई गुरु साये नरनारिदरस उमाये जंगम। आचारज पद पाये ॥पूज० ॥३॥ गुरु महेर करी मरुधर आये,बीयाल पुर संघ व-धोये । सम्भावक मिलकर लाये ॥ पूजर्शाशामण सद छठे गुरुआवे.संब श्रावक मन जाणंद पावे। सद मा-ठमकी जात्रा जावे ॥६ ॥ प्रज्ञः।। ग्रह पास प्रभुको स्त-बन करीयो, यूजा कर श्रीसंघहर्व भरियो। प्रश्च भक्ति मानंदमंगल वरियो ॥ पूज० ॥ ६ ॥ वीकांगेंसुं श्रीसंघ चाये, यावू भेरंदान विनती लाये । गुरूवर्तमान जोग फरमाये ॥ पूज० ॥ ७ ॥ फाग्रुण सुद इग्यारस दिवसे ंच्याटपुर स्थाया ठांणुं नवसे । श्रावक दरसग् कर मन हर्षे ॥पूज०॥८॥ होली चैत्रमासी गुरु ठावे,लोहावट संघ दरशण पाने । जोधपुर श्रीसंघ गुणगाने ॥पू०॥२॥चैतकूष्ण आठम जाणो,पारसपम् जात्रा मनत्राणो । गुरु पर्धारे छ ठाणुं ॥ पूज्ञञ्॥ १०॥ चैञ्चर्दी बारस जागो, गुरु व्याळपुर राध हरखांणों । आया गछपति गुणुखाणो ॥ पूज्र ॥ ११ ॥ वीनतही हमारी सुराजो, बतुर्मास इथां गुरु करजो । श्रीसंघकी धार्जी सुणजो ॥ पूज॰ ॥१२॥ पोकरचंद घरणोंकी साय लोबी, बीनती सदगुरके भेट कीवी । स्वीकार कृषाकरी लीवी ॥पूज० ॥ १३-॥ .इति गष्ट्रें ॥

॥ अथ गहुं ही ॥

स्वामी साता में रहजो कैम करो छो आप विहार रै। रिषवारै रिलियामणोरे, रहेवाथी रंग रसास रै॥ स्वा-मी॰ १॥ सोमवारे सुखसंपदारे, पासे लील विलासरे ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ मंगलवारे मंगल करोरे जिनवाणी सुखकार रे ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥ बुद्धवारे बहु परिवार-भोरे, प्रवरिया विहार रे ॥ स्वामी ॥ ४ ॥ गुरुवारे गुरू गुणनिधि रे, सामा जोवी गुरुराज रे ॥ स्वामी ार्धा शुक्रवारे सद्गुरु मिलीया रे, सारो वांछित काज रे ॥ स्वामी० ॥ ६॥ शनिवारे थिरता करोरे, मननी पूरो भास रे ॥ स्वाभी०॥ शानवार साता दिये रे, जभी करं अरदास रे॥ स्वामी शादा संघ सह मिल वीनवेरे महेर करो महाराज रे॥ स्वामी० ॥९॥ इतिगहूंली

ा। अथ बीनती रूप गहूंली ॥

स्रीश्वर सुरत शहर पघारारे,गुणनिधि गुण तु-मारा गाशुं ॥ स्रीश्वर० ॥ १ ॥ तुम रागथी नहिं रंगा घारे,नहिं देवरिपुधी धंधायारे,महामोहधी नहिं लेपायारे स्री० ॥ २ ॥ पंचयाचार मांहे पुरारे,यालस विकथा यी दुरारे, छकायनी रक्षामें सुरारे ॥ स्रिशे० ॥ ३ ॥ ध्व सानतणा मंडारारे, करवा अमपर ख्याररे, पृतो

निराधारना ऋाधारारे ॥ सूरी० ॥ ४ ॥ ज्ञान डांरीथी मन कस वान्ध्योरे त्रणतत्वरमणतामें साध्येरे। जिहां-समिकित अद्भुत लाध्युरे ॥ हरीश्वर० ॥४॥ मारी वी-नती मनमां घरलोरे, आवता चोमामो स्रत करलारे। साथे सकल समुदायने लीजोरे ॥ स्रीश्वर० ॥ ६॥ मारवाडमां कीघा सुवारोरे, हवे सुरतमां पधारोरे, तेथी धर्मनो धासे वधारोरे ॥ सुरी० ॥७॥ गुरुज्ञानतयो हे दीवोरे, सकलस्य कहे घणा जीवोरे, एअग्दास सहुनी मानि लेबोरे ॥सुरी०।८। गुरु आवे नगर सोभा वधसेरे, कोइ उत्तमजीव निकलकरे प्रायेंहरपे चारित्रलेसेरे, सुरी ।।। धन अमरादेवी मातारे, जेगो जाया सुरीश्व-ररायारे,मेचराजर्जारो चशदिपायां रे स्०॥ १०॥ सवत उगर्णामे त्रयांमी वरसेरे, कात्तिक वट दशमी दिवसेरे, गुरु गुणगाया अतिहरपेरे, स्वा ११॥ जेशहमेर पुराणे बाहेररे किल्लो अपूर्वले नेहरे, जिनविम्य तेणो मोहोटु मेहरे,॥ स्री॥ १२॥ जिहा श्रीजिन कृपाचन्द्रमुरी विराजेरे,गुरुनाद्रशाणसुखने काजेरे,गुरु नी वाणीधी दृखडा भाजेरे ॥ स्०॥१३॥ सुरत शहेरवी दरमने ज्याचारे कल्याणचद सुत गुरू मनभागारे,पेमचद्भाइ टर्सण पायारे ॥ स्र्रे ॥१४। इति गहली

॥ अथ गहूली ॥

गुम्राज हवे क्यां मिलसेरे, मम भाग्य दशा क्यारे

फलसंरे। तम सेवक क्यां जह ठरसेरे ॥ १०१॥ धनमाल अने राजधानी रे, महा संकट आकरो जाणी रे। तुमे छोडी दुनिया दिवानी ॥ गु० ॥२ ॥ गुरु विद्यावेटडीये विंदावा रे,जेहनी कल्यतर सम छाया रे। तुमे समता जलथी सिंचाया ॥ गु०॥३॥ तुम आणा सदासिर घरसुरे,तप निषम विद्योषेकरसुं रे। तमारी वाणी सदा घानुसरसुं ॥ गु० ४॥ सुरतंथी प्रेमचन्द्भाइ आया रे, नाना मोटाने साथे लावा रे। गुरुना द्रसनथी मन हुलसाया ॥ गु० ५॥ ऋाप सुरत दाहर पधारो रे, अस विनतहीए अवधारोरे, अमारा मनना मनोरथ सारो गु०६ ॥ तुमे जेसाणे जिन बिम्ब जहारा है। त्यां चैत्यं अनुपम सारा रे । चिंतामणि पास मनुहार । ॥ गु० ॥ संवत उगणी से तथांसी वरसे रे, कार्त्तिक वदी इग्यारस दिवसे रे । बुधबारे गुण गाया हरसे ॥ गु० ८॥ इति गहुंली

॥ गहुंळी ॥

धन्य दिवस म्हारो आजनो म्हारा सुरीजी हो।। मने मिलीया गुरु महाराज वाला छो॥ १॥ करम कठीन दुरे टल्या॥ मा०॥ काढ्युं मोहती मारुं आज ॥ वा० ॥२॥ मने अद्धा करावी शुद्ध धर्मनी॥ मा०॥ जेथीं मिलसे शिवनो राज॥ वा०॥ ३॥ ओलखाण करावी सुदेवनी ॥ मा० ॥ धर्म खरो आपनार ॥वा०॥ ॥ ४ ॥ हेय उपादेय ज्ञाननुं ॥ मा० ॥ नत्वनु कराव्युं भान ॥ वा० ॥५ ॥ मन घारणा झाठ बुद्धीना ॥मा०॥ वली सूत्र सुणावी दीवृज्ञान ॥ वा० ॥ ६ ॥ आप्वा लोचन रिज्य ज्ञानना ॥ मा० ॥ कराज्यो प्रकाश हृदय मझार ।। वा० ॥ ७ ॥ प्रभु वाणी चामृत स्वादनी ॥ म० ॥ हेतो पामीस भवनो पार ॥ वा० ॥८॥ सिथ्या-त्व भृत आज काहीने ।। मा०॥ ग्राप्यु समकितरत्ननु दान ।{वा०।।९॥ मने रुची करावी त्रण तत्वनी।[मा०]। क्युँ शिवपुर मनमुख ध्यान ॥ वा० ॥ १० ॥ कर्म करक मारु टालवा ॥ मा० ॥ पचक्खाणधी करी मने सद्धा। वा० ॥ ११ ॥ में विनती करी सुरु हरपथी ॥ मा० ॥ काढी कुमती करावी युद्ध ॥ वा० ॥ १२॥ व्हाला गुरुजीनो | यदलो नही वरे ॥ मा० ॥ मनु करतां कोटी उपाय ॥ वा० ॥ १३॥ आज्ञा घर गुरुदेवनी ॥ मा० ॥ जेवी भवना फेरा मिटी जाय ॥ बा० ॥ १४॥ भव भव गरण छ ज्ञापनु ॥मा०॥ मारी भवनी भां-मी जजाल ॥ वा० ॥ १५ ॥ कृपाचद्रसरी प्रमायबी ॥ मा० ॥ गुरु गुण महिमा गाय ॥ वा० ॥ १६ ॥ उग-र्णासे त्रीयासेवे ॥ मा०॥ मायण मास मन ग्राण ॥ बा०॥ १७॥ इति०॥

ऋषभजिणंदसूं प्रीतड़ीए

रत्नत्रयी आराधवा आग्री च्यधिक हो मनधारी डमेद् ॥ आगम ग्रर्थ विचारता गुण गर्गाधी हो बहु वरते ग्रभेद् ॥ सुरीश्वरजी नित बंदिये ॥ १ ॥ पर परि-णामे ते टालवा अजुवालवा हो गुरु आतमध्म।।भव परणतिने टालवा, बलि लहिवाहो साधन शिवशर्म ॥ सूरी०॥२॥ द्रव्यभाव संजोगधी जे रहेवो हो, वलिनित्य अलेप ॥ स्याद्वाद् दीये देसना गुरु जागोहो नय गम निक्षेप ॥ सूरी० ॥३॥ आतम भाव सरूपने प्रका-से हो जे भानु प्रमान। स्वपर विवेचन श्रुतथकी तिण भ-क्तिहो श्रुननो बहुमान ॥ सूरी० ॥ ४ ॥ रुचीवंनसु श्रावको करवा हो बहु श्रुतनी भक्ति ॥ विनयवंत बहु-मानथी फोरवताहो निज आतम शक्ति ॥ सुरी० ॥ ६॥ च्यातम बाज़ोट उपरे समकीतनो हो अले स्वस्तिक पुण।। लली लुज्ञणा लेवंती मिथ्यामतनो हो ते करे चकचुर्ण ॥ सुरी० ॥ ६॥ जो सुणे आगम इसा विधे जनम सफल हो विल होवे तास॥ इहारे भव भवमा होजो गुऊ सहा-ये हो ज्ञान महोद्य वास॥ सूरी०॥७॥ समत उगनीसे तेइयासीये सुभभावेहो गुरु गुण पर कास । गहुली करी गुरु आगले म्हारी पुरीहो मनड़ेनी ग्रास ॥ सूरी०॥८॥ सरी कूपाचन्द्रसेवता भव भवनाहो पातिकडा जाय॥ कर्ठान कम सब काटीने ''महिमा''नेहो दीजो ज्ञान पसाय ॥ सुरी×बरजी हो नित्य विदये ॥ ६ ॥

॥ गहूंछी ॥

सुरीप्रवर महारारे। गच्छना प्रतिपालरे ॥ विनती सां महोहोजी ॥ मां मलीने गुरु संसारधी मुजनार, गु-गु घनेगरे सांभल्या तुम तणा ॥ तुम छो गुरु ज्ञान नणा भडार ॥ सूरी० ॥१॥ महन्यरदेश मनोहरू ॥ चासु नगर मजार ॥ वाफना गोजे ज्यवतर्था ॥ मेघरध कुल भान ॥ तुमछो गुरु अमरा मातके नद् ॥ सुरीश्वर० ॥२॥ युक्ति अमृत उपदेशयी॥ पाम्यो मन वैराग्य ॥ छ-तीसेकी सालमें ॥ गुरु संयम से मन लाग ॥ तुमे छो गुरु नीज कुलना एजमाल ॥ सुरीभ्वर० ॥ ३ ॥ पच महात्रन पालता ॥ सुमित गुमि प्रतीपाल ॥ पच इन्द्रिको वडाकरी ॥ विचरे परमक्रपाल ॥ तुमछो गुम संयमना प्रतीपाल ॥ सुरी० ॥ ४ ॥ उगनीमे वहोतरे ॥ महेर षम्बाह सोहाय ॥ खाचारदा पदवी लही ॥ संघ से हर्प न माय।। तुमञो गुरुमपनगाः प्रतीपाल॥ सुरीभ्वर०॥ ५॥ देश विदेश में विचरता॥ चेला कीया गुण खाण ॥ पाटवी पाठक जय मुनि प्रवर्तक सागर जागा ॥ तुमछो गुरु घणा जीवाना प्रतीपाल ॥ सुरीभवर० ॥६॥ षाचक रायसागर्वली ज्ञानतणा भंडार ॥ विनय करे

गुरुजी तणो सद्रगुण तणो च्यभ्यास ॥ तुममें गुरु गुण त्तणो नहीं पार ॥ सुरीश्वर० ॥७॥ विवेकसागरमें गुण घणा विवेकतणो नहीं पार ॥ उद्यसागर उद्यकरे॥ हरख तपसी कहे बाय॥ तुमछो गुरु कठीन कम काटनार ∥ सुरोश्वा० ॥⊏॥ मितसागर वेपावची मंगल करे अभ्याम ॥ कीर्तिवागर में गुण घणां ॥ वांचेसरस व-खान ॥ तुमारी गुरु शोभा न वरणी जाय ॥ सुरीश्वर० ॥ ६ ॥ खरतरगच्छमें दीपता कृपाचेन्द्रसुरि राय॥ जेसाणेगढ आवीया करिया ग्यान डघार ॥ तुमछो गुरू मुक्तिनणा दातार ॥ सुरीश्वर० ॥ १० ॥ हाथजोड़ म-हीमा भणे॥ लुललुल शीस नमाय ॥ एक विनती खरधरो देजो मुक्ति बास ॥ तुमने तो गुरु किया घणा उपकार ॥ सुरीश्वर ॥ ११ ॥ समत उगनीसे तीयासीये भाद्व मास मनरंग गुरु गुण गाया भावसुर संफली हुइ उमंग करजो गुरु अमची सारसंभाल ॥ सुरीश्वर० ॥ १२॥ इति

॥ गहूंळी ॥

राग- (गुरु देव मनावो)

धन भाग्य हमारा,सुरिजी पधारे बीकानेर में। चाल । पंच महावत सुधा पाले,पंचाश्रव को टाले । सत्योपदेश देते हैं गुरुजी, मिथ्पात्व को दूर निकाले जी ॥ १ ॥ पांच सुमित और तीन गुप्ति को, पालन में परवीन, चारित्र धर्म विविधुत पाले,ज्ञान ध्यान में लीनजी॥ २। ग्रनाचार यावन को छोडे, गुरु है समता धारी। भ्रमर भिक्षा मुनि भ्रम्लती लेवे.दोप वैयालीस टारीजी॥ रे ॥ पांचो इन्द्रिय वस में करली, पाप कम से दुग, निर्मोही निर्लोभी गुरुजी, परिसह सहन में सुराजी ॥ ४॥ कंचन कामिनी के हैं त्यागी, ज्ञान्त दान्त वैरागी, इन गुरुवरके द्शन करके कुमति क्रुटिलता भागीजी ॥ ६॥ धर्म रूप नौका के ग्रुक्ती, ख्याप है खेबन हार, शुद्ध धर्म बतला कर स्वामी, करते बेहा पारजी ॥ ई ॥ क्रपाचंद्रसृरिजी पधारे, पुन्योदय हे भाई, सुखसागरजी व्याख्यान देते, मई जीव सुख टाईजी ॥७॥ क्षमा शोल संतोपी ह गुरु, धीर वीर गम्भीर, " अगरचद " कहे ये गुरुसेवो, जिम भांगे भव पीर जी ॥ ८॥ संवत उगगीसे साल प्वासी, वैत्र मास गुलजार । शुक्क पक्ष में गुरु गुण गाया, चरत्या जय जय कारजी ॥ ६ ॥ इति॥

गहंली

(मुनिवर को वंदो पाप निकंदो) गुरु है सुखकारी, पर उपकारी, तारण तरण झ- हाज।। टेर०।। पंच महावन मधा पाले, चारित्र नि-रतिचार, अमर भिक्षा छुनि स्भती लेवे, दोप दया-लीस टार जी ॥ गुरु हैं ॥ १ ॥ सात विना परिवार को छोडा, जानी सगला असार, क्षमा चील चैरागी गुरुजी, जीते काम विकार जी ॥ गुरु हैं ॥ २ ॥ धम रूप नौका के जानों, आप ही खेवन हार, समद्धिर-खते हैं सब पर, ऐसे भाव उदार जी॥ गुरू हैं ॥३॥ छकाया की रक्षा करते, ग्रातम के समजान, बोली मधुर सुहावनी जी, असृन के समानं जी ॥ गुरु हैं ॥ ४॥ समत्व भाव को छोड़ दिया है, लीनी समता घार, वावीस परिसह सहन में सूरा, हैं गुणना भंडारजी ॥ गुरु हैं ॥ ५ ॥ महिमा वर्णन करुं में कितनी, नहीं कोई है पार, ज्ञान ध्यान में लीन रहे गुरु, भविजन तारण हार जी ॥ गुरु हैं ॥ ६॥ कृपाचंद्रजी नाम आ पका, सूरि कृपा के कोष, क्षुख सागर जी व्याख्यान देतें, जीता रागने राष जी ॥ गुरु हैं ॥ ७ ॥ सेवक जाणी भोहे तारो, यह विनती गुरुराय। " ग्रमरचंद" कहे विनती सुन जो, सुक्ति राह बतायजी। गुरु हैं ॥८॥ संवत जगणीसे साल पचासी, द्वितीय सास सुखकार, गंगादाहर में आप प्धारे,वरत्या आनंद् बारजी। गुरु हैं। है।

गहूंली

राग- (सांवरो सुखदाई)

सुरिजी का द्दीन पाया,आनंद मेरे अंगन माया। धन्य कृतार्थ ग्राज जन्म है, ग्राज हुवा मन चाबा, गुण के सागर गुरुजी देखी, हृद्य कमल विकसाया॥ गुरुजी सब को सुखदाया । सरिजी का दरीन पाया ।। १ ॥ देख क्वांत सुद्रा सरीश्वर की, रोम रोम इलसाया, क्या तारीफ करु गुरुवर की, देखत पाप नशाया, निर्मेल हुई मेरी काया। सरिजी का दर्शन पाया।।२॥ सत्योपदेश देते हे गुरुजी, सुन हीयड़ा हरखाया, धीर वीर भवि ये गुरु मेवो, भाव शुद्ध दिल लाया, घरू चरगो। में शींका नमाया। सुरिजी का ढर्शन पाया॥३॥ दो शुद्ध समकित येही विनती,हैं मेरी गुरु राया, पूर्ण कर मेरी ये वीनती, टो मेरे कर्म नशाया, के भव का अमग्र मिटाघा। सरिजी का दर्शन पाया।। ४ ॥ इन्द्रिय मन को वश करने का, टो मोहे ज्ञान बताया, "अगरचंद" भक्ति वम किञ्चित, गुरुजी का गुग्र गाया, देवी अ-ज्ञान-मिटाया । सुरिजी का दुर्गन पाया ॥५॥ इति ॥

गहुंछी

रागः— (देखी तोरं समवसरण की बहार) श्री श्री कृषाचन्द्र स्रिराज, देखी तोरी शान्त भुद्रा सुखकार ॥ टेर ॥ सेघराजजीके नन्दन कहिये, ग्रमरा मात उदार । गोत्र वाफग्गा उज्वल कि.यो, चा-मु ग्राम मझार ॥ देखी ॥१ ॥ संवत उन्नीसे तेर साल में जन्म दिवस सुखकार । छतीसे में दिक्षा लीनी, जैनधर्म जयकार ॥ देखी ॥ २॥ साल वहोत्तर में सूरि पद, बम्बह नगर मैझार। सह संघ मिल करके दीना, आनंद हर्षे छापार ॥ देखी ॥ ३ ॥ किया बहुत उपगार गुरुने, कह न सकूं लगार। जेसलमेर के ज्ञान भंडार का, आपने किया उद्धार ॥ देखी ॥ ४ ॥ देश देश ग्रामो ग्राम विचर के, किया धर्म प्रचार । उपधान तप आदि गुरु ने करायो, फलोधी शहर मंझार ॥ देखी ॥ ५ ॥ द्रशन करने से मन परसन, होवे शान्त अपार। भविजन के तारण को मानो, यानसमा निर धार ॥ देखी ॥ ६ ॥ बीकानेर में छाप पधारे, शोभा धापरंपार । देशना अजन सोहमणी रे, मानो अमृत धार ॥ देखी ॥ ७ ॥ ज्ञासन के सम्राट गुरुजी, शास्त्र विशारद सार । खरतर गच्छ में हैं दिनमगी सम. ज्योति फैली संसार॥ देखी॥ 🗆 ॥ हुं असमर्थ गुरु गुण कहने, गुणानां भंडार । "अगरचंद" कहे भक्ति से सेवो, ज्यों होवे बेड़ा पार ॥ देखी ॥ ९ ॥

गहुंली

राग:-- (मुबारिक हो मुबारिक हो)

धन्य गुरु राजजी आये, मुवारक हो मुवारक हो॥
धन्य दिन आज है मेरा, गुरुजी दर्शन किया तेरा।
मिटा भव दुःख ताण फेरा, गुवारक हो मुवारक हो॥
१॥ गुरू हें जान के दाता, दर्श से दुःख टल जाता।
मिले हिय शान्ति अरु शाता, मुवारक हो मुवारक
हो॥ २॥ शास्त्र के हे विशारद आप, सेवे से टलता
सन्य संताप। नमन से दृत होते पाप, मुवारक हो मुवारक
हो॥ ॥ ॥ बम्बड में पाये पद सुरि, गच्छ आधार
धर्म धृरि। जान वतलाते हे भृरि, मुवारक हो मुवारक हो॥ ४॥ " अगर " इक विनती करता, चरयो
का ध्यान हिय घरता। मिटे भव अमया दुःख हरता,
मुवारक हो मुवारक हो॥ ६॥

रागः- (जिन घम का डंका छालम में)

गुरुराज की सेव करो सवही, जिम भव दु खसे छुटकारा हो, विन मत्गुरु के भव छाटवी से, पहुचावे कीन किनारा हो। १। जो सत्गुरु की सेवा करते, वे पुन्य कोप निश्चय भरते, याज्ञान को हियमे वे हरते, छुट झान का हिये उजारा हो। २। जो नैया पढ़ी है मक्त घारे, विन गुरु कीन खेवनहारे, अब सेव करो भाइ सारे, जिम नैया भव से पारा हो। ३। ये स्वार्ध का संसार महा, इसमें जो तृने खुस्त चहा। नहीं साथ है चाले कोइ च्रहा, पितु मातु सुता या दारा हो। ४। मित्थात्व को दूर हदाते हैं ग्रुद्ध समिकत को द्रसाते हैं, जिन धम का सार बताते हैं, छिव उत्तम भाव उदारा हो। ४। ग्रुद्ध अमे देशना देते हैं, भव बीच नाव को खेते हैं, जो इन गुरु वर को सेते हैं, उनका भव से नि-स्तारा हो। ६। कहे " अगर " सुनो विनती मोरी मैं सरण बही गुरु वर तोरी, कृपायन्द्रसुरिजी धमे-धोरी, मेरा कर्मी से निपटारा हो। ७। गुरुराज०।।

॥ गहूंली ॥

(राग:- गुरु द्त्त जती शुद्ध राधु व्रती)

कृपाचन्द्रसृरि, गुण कोष भूरि, अब सागर से पार लंघादो सृरि। आप पंच महाव्रत के धारी, हिय से ममता को दियाटारी, टारी विषय वासना जो है बुरी, भव सागर से पार लंघादो सृरि। १। छतीसे गुणे करी गुरु सोहे, अविजन के मन को ले मोहे, गच्छ स्थंभ आधार है धर्म धुरी, अब सागर से पार लंघादो सृरि। २। व्याखान मानो अमृत धारा, मोहे भविजन आनदकारा,ज्ञानामृत मानो भरी कोठरी,भव सागर से पार लंघाटो सृरि।३। न्याय तर्क छादि शास्त्र सारे जानत है गुरुवर सुखकारे, धन भाग्य आये बीकानेर पुरी, भव सागर से पार लंघादो सुरि । ४। कोइ पुन्य एद्य गुरुराज मिले, च्याज सकल मनोर्थ मेरे फले । धन भाग्य दशा मेरी सुधरी,भव सागर से पार लघादो सृरि। ५। भमा चार गति में दु ख सहे, वहतो गुरुवर नहीं जाय कहे, क्रवा कोप तारों मोहे कूपाकरी, भव सागर से पार लघादों सृरि । ६। कहे " अगर " सुनो विनती मोरी, मैं सरग् ग्रही गुरुवर तोरी,शिवपन्ध बताबो करोन देरी, भव सागर-से पार लघादो स्वरि । ७।

॥ गहंळी ॥

[गजल]

देख गुरु राज को मेरे, हिये आनंद छाया है ॥ भमा गति चार के माहिं, ऐसे गुरुजी मिले नाहिं॥ सता दुस मैंने मदाही, अब मदगुरु को पाया है॥१॥ गुरु हे जान के धारी, हिये की ममता को मारी॥ काम की वामना टारी, पाप से मन हटाया है॥ २॥ राखते भाव मम सब पर, अञानित दिलकी ली है हर॥ आतम गुण को विकासित कर, ध्यान में मन लगाया है।। ३ ॥ आश्रव के मार्ग को रोका, कर्म को मार्ग बिच टोका ॥ बना के धर्म की नोका, भविकोदु: खसे से छुडाया है॥ ४॥ सुनो इक विनती मेरी, मिटे भव अमण की फेरी ॥ मुक्ति सुख में नही देरी, "अगर" सरगो में आया है॥ ४॥

ं॥ गहूंली ॥

राग— (बतावो मुक्ति डगर शिवगाभी)

बतावो मुक्ति की राह, गुरु ज्ञानी। १। भव जल को नहीं थाह गुरुजी, फिरतो फिरतो हारघो। २। मोह भंवर बिच मांही पड़त है, चक्कर बहुत लगायो। २। मिथ्यात्व रूपी आंधी चली है, समय डूबन को आ-यो। ३। तुम बिन नहीं कोइ मेरो सहाइ, तुम्हारी सरण में आयो। ४। "अगर" कहे कृपाचन्द्र सुरिजी, दो शिवसुख सुखदायो। ४। बतावो॥ इति

॥ गहुंली ॥

राग- (राखुं रे हमारे घट में)

कृपास्रि नाम तेरा, राखु सदा हृद्य में ॥ टेर ॥ तुम नाम खुखकारी, भय शोक देवे टारी, सुख देत हैं ये भारी ॥ राखुं ०११। पालत है पांच समिती,हृय गई दूर कुमित, बध गई आत्म द्वाक्ति ॥ राखुं० २॥ तुम पं चाचार पालो, भृमि निरख के चालो, दृषण सभी को टालो ॥ राखुं ॥ ३॥ पद सिर मन भाषा, छतीस गुण सहाया, यतना करत छ:काषा ॥ राखुं ॥ ४॥ मद् मोह लोभ टारी, उपदेश देवो भारी, भवि जीव देते तारी ॥ राखु ॥ ५॥ गुण तुमरे अपारा, गिणता न आवे न पारा, तुम दर्श सुलकारा ॥ राखुं ॥ ६॥ मेरी है एक विनती, निश्चल रहे ये भिवत, कहे "ब्रगर" पाऊं मुक्ति॥ राखुं ॥ ७॥

॥ गहुंछी ॥

राग— (में आयो तेरे ग्रासरे)

में सरण ग्रही अब ताहरी, कृषाचन्द्र स्रिराया। चार गित में सही वेदना, श्वनन्त काल विताया। विता-यारे विताया। श्वम रुख चौरामी थोनि में, दुःख बहुत सा पाया ॥ में ॥ १ ॥ श्वात्म गुणों को कर आच्छादित, पाप में मोहे रमाया। रमाथारे रमाया। क्या कहुं दुःख जो दिये कर्माने, काल अनन्त कलया॥ में ॥२॥ चार कपायादिक ने मुझ को, गुरुजी बहुत सताया। स-ताया रे सताया। रह्यो रात दिवस में पापमें, धर्म न पलक सहाया॥ में ॥३॥ रह्यो मिध्यात्व में पाइ न सम कित,को कभी भी गुरु। राघा राया रे राघा। कुगुरु कुरेब कुधर्म को, मैंने सत्य ठहराया ॥ में ॥ ४॥ पुन्य प्रबल के कारण मैंने, आज आपको पाया। पायार पाया। कहे " अगर " एक मोरी विनती, दो भव दुःख से छुड़ाया॥ ५॥ इति

॥ गहूंछी ॥

राग- (होह आनंद बहाररे)वसंत

कृताचन्द्र स्रिरायरं, कोई पुन्य से आये ॥ देर ॥ शान्त स्रुत सोहामणी रे. आवे सहु ने दायरे ॥ कोई ॥ १ ॥ पंच महाव्रत के हैं धारी, रक्षा करे छड़-काय रे ॥ कोई ॥ २ ॥ आठार सहस जीलांगना नोरी देख्या पाप पुलायरे ॥ कोई ॥ ३ ॥ धन्य भाग्य ऐसे गुरुजी पधारे, गुरु संगम खुख दायरे ॥ कोई ॥ ४ ॥ धन्य कृताय आज जन्म है, देख्या में गुरु राय रे ॥ कोई ॥ ४ ॥ जुद्ध समितत देजो गुरु हम को, एहीज मन की चाह रे ॥ कोई ॥ ६ ॥ अनेक गुणों के धारक गुरुजी " अगर " किन्चित गुणगाय रे ॥ कोई ॥ आ

गहूंली

रागः (मोहे गिरि की डगरिया) गुरुजी तत्व का प्याला पिलादो मुझे, भव भ्रमण में ग्रयतो वर्षादी मुझे ॥ देर ॥ चारगतिमें घमते, वाता अनन्ता काल है, नरक और निगोदमें तो. इख सहा विक्तालंह, भव के दुख से अवनो छुडादो मुके ॥ १॥ मिथ्यात्वमें ह फंमर्रहा, शुद्ध घर्मको जानु नहीं, कुन्य और अकृत्य को मैं, कुछ भा पहिचानु नहीं, जाद्ध समकित का राह दिखादो मुझे ॥ २ ॥ अवगुणी हू में गुम्जी, त्याप गुण भंडारहे, धर्मनेया के खबैया. गच्छ के मिगगार्रह, पड़ा सरण में अपनी बचालो मुक्ते ॥ ३ ॥ भर ममुद्र प्रवाहमें, नैया पही मझधार है. कठिन नरना है गुरु, अब आप खेवन हार है, अधार जल में पार-लगादों सुके ॥ ४॥ ^म अगर ²² कतता है 'गुरु, विनति मेरी सुन लीजिये, पहा है मे शरणमें, मरजा हुवे सो फीजीये,धुक्तिं महल में खामी पहचाटो मुझे ॥५॥ इति ॥

॥ गहली ॥

राग:- (धन धन वो जगमे नरनार)

् घन्यभाग्य आये गुम्राय, मत्य ब्रिक्स के देनेवाले ॥ देर ॥ पुन्यसे आये हें गुम्राज, घन्य दिन घ्यानंदको हें आज, जनमें तरने को जहाज, तमें मुनि मुक्ति पहुनानवाले ॥ घन्य ॥ १ ॥ देते धर्म देशनासार, क रते भविजनका उद्घार, भवमे कर्यंते हैं पार, धर्मका सार दिखाने वाले॥ धन्य॥ २॥ रखते मत्र पर हैं मन भाव, ज्ञातम सम गिनते छकाय, गुरु हैं मन जीव सुखदाय, पग पग जो के चलने वाले॥ धन्य॥३॥ पाले रही गुप्तिनीन, समिनी को पालन में प्रवीन, रहते ज्ञान ध्यान में लीन, मुक्ति से नेह लगाने वाले॥ धन्य॥ ४॥ कृपाहिष्ट गुरु द्याल, रखके लीजो विनती संभाल, '' प्रगर '' कहे दीजो दु:खंस टाल, भवका अमण मिटाने वाले॥ धन्य॥ ६॥ ६ति॥

॥ गहुंछी ॥

रागः -(इंग्य बात साची जगमाहे)

कृपाचनद्र सुरिजी पथारया, सेव करा अह मारें। देर । पंच महावत के हैं घारी, पाप कम से हैं न्यानें क्षमा क्षांन्त्यादि गुण करी घोमे, गणन मंडल में ज्यां तारे । १। पांच सुमित और तीन गुप्ति को; मडी रीतें गुरु पाले, छकाया की रक्षा करते, साधु धमें को उजनवाले ॥ कृपा० । २। मोहमंथी न गरी के भीतर, अग वार्षपद्र शोभित कीना, सर्व संघ में मंगल वस्त्या, साल वहोत्तर मन भीना ॥ कृपा० । ३। " अगर " कहत है आप गुरुजी, धमेंनेथा खेवनहारे, सेवी सुख अनुभव रस पावा, अष्ट कमें से हो न्यारे। कृपा० । ४।

संवत उनीसे साल पच्यासी, जेठमहिने शुभवारे, शुक्कचपुर्थी सात मुनि संग, बीकानेर में गुरु माये॥ कृषा । १। इति॥ १(यम्बह)

॥ गहूंछी ॥

राग:- [चालो हूढन को सडेकी] ें

सुरिजी को बन्दों रे सब मिल के, पुन्य से आये है गुरुराय [पु०] भव्य जीवों को देवे देशना, मावे सहरे दाव ॥ (टेर) पु॰॥पुन्योदय से च्याप पधारे, पाव कर्म से हैं गुरु न्यारे, सकल जीव सुखदाय ॥१॥ प्र० प्रवाहावृत के हैं घारी, विषय वासना दरनिकारी, सेव्यां पाप पुलाय ॥ २ ॥ पु० ॥ पांचो इन्द्रिया वस में करली, मन में समता को है धरली, ममता दीनी नमाय ॥ ३ ॥ पु० ॥ करुणा के सागर हैं भारी, भन्य जीवों को देते तारी, वचाते छ काय ॥ ४ ॥ पु० ॥ घट सेती प्रज्ञान नसाया,ज्ञान उजाला हिय में छाया, मन है ध्यान के मांच ॥ ५ ॥ पु० ॥ गुरु सेवन ते ज्ञान मिनत हैं, पाप कर्म से दूर टलत है, मुक्ति नो एह उपाय ॥ ६ ॥ पु० ॥ " घ्रमर " कहे गुरु सेंबो भाई, शुद्ध भाव रिये में लाई, गुणगाबो चितलाय ॥७॥ पुर्वा।

॥ गहंली ॥

राग:- (जावो जानो नेम पिया)

तारों तारों कृपास्तरि, अरजी हो मानीरे। तारावी तुम्हरी सरण में आयों, हं गुरु ज्ञानीरे ॥ देर ॥ चार गित माहें भम्यों, शुद्ध शुण नवी रम्यों, भम्यों भन्न सागर, अथाह जाको पानीरे ॥ १ ॥ तारोव ॥ दुःख में चहुत सह्यों, सो तो नहीं जाय कहुयों, अनंत काल वित्यों, समकित न पिछानीरे ॥ २ ॥ तारोव ॥ महा शञ्च कमें आठ, पीछे किरे लिये लाठ, छोडे नहीं लार मेरो, करे खेंचा तानीरे ॥ ३ ॥ तारोव ॥ पुन्य योग देश पायों, हिय में आनंद छायों, मीठी अमृत सी मानो, लागे तोरी बानीरे ॥ ४ ॥ तारोव ॥ समकित शुद्ध पाऊं, कह अगर येही चाहं, जन्म मरण छुटे, चहं वित्य पटराणोरे ॥ ४ ॥ तारोव ॥ ईति

क का विश्व विश्व हैं ॥ गहुंली ॥

तारण तरण है। ऐने। पंच महावत सुधापाले, अशुभ कर्म को दूर हरण ॥ ऐने ॥ १ ॥ अंताचार वावन को छोड़े, निज आतम को निमल करण ॥ ऐने ॥ २ ॥ बावीस प्रिसह सहे गुरु ज्ञानी, यति धर्म दश भेद धरण ॥ ऐसे ॥ ३ ॥ ब्यालीस दाँष टाल आहार लेवे; शुद्ध संयम का साथन करण ॥ एमे ॥ ४॥ वाग्ह विश्व तप वर्गा में स्तरा, पाप मैल को दूर करण ॥ ऐसे॥ ७ ॥ शास्त्र विशारत है गुरु जाना, भव्य जीव के ता-रण तरण ॥ ऐसे ॥ ई ॥ " खगरचंद " वहे ये गुरु सेवो, उसु मिट जावे जन्म मरण ॥ ऐसे ॥ ७ ॥ पाप से नियुत, धर्म में प्रयून, शिव रमणी को वेर्ग वरण ॥ ऐसे ॥ ८ ॥

॥ गहूंळी्॥

भवितुम देखोरे नैना, ऋमृत सा सुण होरे वैना ॥ ऋाक्ष्डों ॥ दोहा- पच म्हाबन पालते, पाची स-मिती समेत। तीन गुंसि गुपते सदा, अंजर अमर पद हेत ॥ शींल का पहना है गहना, परिसंह वाबीस को सहना ॥ भवि तुम० ॥ १ ॥ दोहा- पट् दर्शन नाजाण हैं, स्पाद्वाद् परवीन । ज्ञाने उदाने चारित्र ये, रतन आराधेतीन ॥ निरंतर ध्यान मंग्ररहना,सभी जीवों का भला चहना ॥ भवि तुम् ।। २॥ दोहा:-तत्व रमणता में रमे, निरखे चारम स्वस्त्य । क्रया कोष भवि जीव को, पहना रखें भवे कूपी पैरों से वेदल ही यहना, मंभी की हिल को मार्ग कहना ॥ भवि तुम् ।। है।। दोहा:- उद्योसे घौरामिय, वसंत पंचमी दिन । पुरये आया फलाधी से, महु जन मन प्रमन्न ॥ हरिषत हो योले इम वेना, चार्तुमास यहाँही रहना ॥ भिव तुम० ॥ ४ ॥ दोहाः – कृषाचन्द्र सृरि नाम है, संग सुनि है सात । भगवती वांचे स्वस्थि कीना चार्तुमास ॥ भिक्त करते जो नर सेणा, "अगर" निस दिन रहते चैना ॥ भिव तुम० ॥ ५ ॥ इति

॥ गहूंछी ॥

(जिनवाणी)

भविजन सुणजो रे जिन ज्यागमनी वाणी,ए वाणी छै मुक्ति निसाणी ॥भा० ॥ राग देव करी रहित जिने-श्वर, इस वाणी के भाषक, ऋर्षे श्री जिनदेव कही है, सुन्ने रची गण धारक ॥ भविजन० ॥ १ ॥ स्याद् चाद् नय भंग अनोपम, निक्षेपादि सुहाइ, सर्वमत नो समावेश इसी में, छोपी न चलसके कोई॥ भविजन० ॥ २॥ उत्सर्ग चारु चापवाद मार्ग है, गढ़ रहस्य है इसका, समको गीतार्थ गुरु पासे, मिटे दुःख जन्म मरण का ॥ भविजन० ॥ ३ ॥ इक चिते सुणजो भवि भावे, पाप मैल दे धोइ, सर्दहजो ज्यों कही तेमही. शंका न धरजो कोइ॥ भविजन०॥ ४॥ शंका पुछ निवारण करज़ि खड्यों इसप भविजन ॥

१॥ प्रारंभ से सुनजो सुत्रको, आखिर तक चित-लाह, मन स्थिर करी भाव विमल धरी, सुगाजो कान लगाह ॥ भविजन० ॥ दे॥ नय एकांत न ताणजो कोह, स्याद् बाद सर्दहओ, " अगरबंद " कहे जिन वाणी पर, पक्की अद्धा रखजो ॥ भविजन० ॥ ७॥ इति

॥ गहूँछी ॥ (पर्यृमण की) रागः- (सुण चंदाजी)

अवि भाव धरी, पर्व पर्ध्युसण चाराधो चानंद सु। ए पर्व भलो, है सह में सिरटार,चिन्तामणी रक्ष ज्यू ॥ भ्रांकडी ॥ ए पर्व नदिश्वर सुर जावे,करे ग्राटाइ म-होत्सश्राभ भावे, वो भाव भविजन यहाँ लावे ॥भवि० ॥ १ ॥ अमारी पद्गहो बजवाहजे, जिनराज पुजन वि-धिसं कीजे, बिल दान सुपात्र ने दीजे ॥ भवि० ॥२॥ करूप सुत्रनी भक्ति करो चंगे, रात्रि जोगो चादि मन रंगे, स सत्रगो इक चित उमगे॥ भवि०॥ ३॥ असु जन्म महोत्सव शुभ भावे, जिन चरित्र सुणो णतिक जावे,विल मुक्ति पूरी वासो थावे ॥ भवि०॥ ४ ॥ फिरे नैत्य प्रवाको गुरु संगे, संबत्सरी परिक्रमणो रगे. करो क्षमत क्षापणा मन चंगे॥ भवि०॥ ५॥ स्वामी वत्मल भादि कीजे, शुद्ध भाव घरी द्रव्य खरचीजे, पर्व सेवीने लाहो लीजे ॥ भवि०-॥ ६ ॥ पंचा अवका दृरे टारी, पचग्वागा जास्ति साम घारी, कहे "अगर" पर्व सेवा इकतारी ॥ भवि० ॥ ७॥ इति

॥ गहूंळी॥ (पर्स्यूसणकी)

राग:- (नेमजी को जानवनी भारी)

पर्ध्युक्षण पर्व है जयकारी, सेवतां होवे भव पारी ॥ देर ॥ पर्व ए छै सहु में सिरदार, सेव्या बरते ज-यजय कार। लोकिक लोकोत्तर मन धार, पर्व सुख-दाई सेवा इकतार ॥ दोहा:- ए पर्व स्राया सरमर्भा, जाय नंदिश्वर द्वाप। ऋठाइ महोत्मव रंगसुं, करे प्रसु ने समीप ॥ भवि तिम करो यहाँ सुखकारी ॥ पर्य्यू० ॥ १॥ अमारी पड़हो वजवाओं, प्रभु पूजा को मन लावो । स्वामी वत्सल करबा उमावो; द्रव्य खर्ची ने लहं लावो ॥ दोहा:- अठम तपं करं भावसुं, देवं वंदन निर धार । टंको टंक करो पडिकमणो, गुरु भक्ति सुविचार ॥ पूजा करो प्रभु नी हितकारी ॥ पर्च्यू० ॥ २॥ कल्प सूत्र भक्ति शुभ भाव, रात्रि जोगो मन उछाव । वेर इकवीस सुणौ चितलाय, रहोन भव में कहे जिनराव ॥ दोहा:- चरित्रं सुशी जिनराज नो, भागी उज्वल भाव। जन्म महोत्सव भाव सुं, करो अधिक उच्छाव ॥ भाव शुद्ध राखो निरघारी॥ पर्य्यू० - विवार बह्मचर्य पालो भवि

निरधार । दान सुपात्र ने दो सार, तपरवा शक्ति सारू धार ॥ दोहा:- प्रतिक्रमण संवत्सरी, करो भविक शुभ भाव। " चागर " कहे सब जीवसुं, क्षमत क्षामणा चाह ॥ पर्व सेवा मुक्ति दातारी ॥ पर्य्यु० ॥४॥ इति

गहंली

रागः- (प्यारं प्यारे नेम सलुना)

गावो गावो हिल मिल स्वही,गुरू गुण को चित लाइरे। पंच महाव्रत के है धारी, धर्म प्रवर्तक गुरू सुलकारी, सेवो भन ग्रद्ध लाईरे ॥ गावो ॥१॥ मनुष्प योनि में दुष्कर स्राया, स्रार्थ क्षेत्र उत्तम कुल पाँचा, जैनधर्म सुखदाई रे ॥ गावो ॥२॥कैसा अवसर घाच्छा पावा, वीकानेर में सरिजी आया, नमी चरगा सिर-नाइरे ॥ गावो ॥३॥ क्षात्यांदि दश भेदे पाले,यति धर्म को गुरु उजवाले,कृपाचन्द्र सृरिराइ रे ॥ गावो । ४ ॥ आदा रखो जो मुक्ति केरी,धर्म कार्प में मतकरो देरी, देरी महा दख दाइरे ॥ गावो ॥ ५ ॥ " भवरलाल " कहे ये गुरुध्यावो, शिवनारी को तुम अपनाचो, एक्य भाव दिललाहरे ॥ गावो ॥ ६ ॥

॥ गहुंली ॥

कृषाचन्द्र सुरिजी, अवके चौमासो वीकानेर में ॥देर॥



दोष बवालीस ब्याहार के टालत, गुण छत्तीस हैं धारी । त्रीर वीर गंभीर सहत है,कठिन परिसह भारी ॥२॥ संयम शस्त्र धार कर मुनिवर, मान मोह दिये मारी। काम कोध वस किये शक्ति से, क्रुमति कदाग्रह टारी ॥ ३ ॥ तप जप जान ध्यान फल डारी,झूम रही मत-वारी । तोड़न वाले हं अझानी, रीति कही तुम सारी ॥ ४ ॥ दान घ्यान करते है नर पर, क्रोध मान सिर थारी। क्रोध मान होय दूर हिये से, कहो ऐसा मंत्र विचारी ॥ १ ॥ इप अज्ञान और अविवेकी, घात्या-चारी अनारी। प्याप हो चतुर सुघर मेरे मुनिवर, भव सागर दो टारी ॥ ई ॥ यती धर्म साथक करने को. स्वयं ही दिक्षा घारी । ज्ञानवान मुनि गुर्ज्जर पहुंचे, जैन ज्योति पसारी ॥ ७ ॥ उन्नीसे चौरासी सम्बत्, माघ मास शुभ वारी । मुनि वर गुण गाये शुद्ध मन से, भक्ति हिय विच घारी ॥ ८ ॥ आतम सिद्धि विन मुक्ति रिद्धि को, पावत नहीं नर नारी। ' ज्ञान " कहे दो आत्म साघना, जैन धर्म जय कारी ॥ ९॥ इति

॥ गहुंछी ॥

राग:- (धानी पला श्री तिताला) भाज जगे जो भाग्य हमारे, मुनिवर भ्राप

पधारे हैं॥ अ॰॥ सहन- शील मुद्रा शुभ कारी, सदुल बचन बोले मनुहारी। क्रोध मोह मद् लोभ को जारी, पाप तिमिर से न्यारे हैं।। १॥ सतर प्रकार संयम सुःखकारी, सुमति गुप्ति पाले हद् भारी। पंच महाव्रत हिय बिच धारी, दोष बयालीस टारे हैं॥२॥ ञ्राचारज गुगा छतीस धारी, सृरि पद् पाये सु:खकारी । ज्ञान वंत आगम विस्तारी, शास्त्र मथन सतवारे हैं ॥ ३ ॥ दें उपदेश शास्त्र बानुसारी, तर्क –तत्व – नय नीति विचारी। भवि जन को लागत अति एवारी ज्यो असृत की धारे हैं ॥ ४ ॥ आये बीकानेर मंझारी कुर्वीचन्द्र कृपा करी भारी। संग शिष्य गुणि जन हित कारी, जैन जगत के सितारे हैं ॥ ५ ॥ (दोहा):-शुरु दीवो गुरु देवता, गुरु विन घोर अन्धार । जे गुरु वाणी नहीं खुणी, ते भटक फिरा सन्सार ॥ ६॥ चौ-रासी संवत् सुःख कारी,माघ मास ऋतु वसन्त प्यारी । स्वागत को धाये नर नारी, बामन शशिकर धारे हैं॥ ७॥, " ज्ञान " कहे आशा हियधारी, जैन जाति उन्नति करी सारी। फूट भगा दो लब्धि पसारी - शब्द चरण में डारे है ॥ ८॥ इति

॥ गईंछा ॥

राग:- (गजल ताल धमाल)

विना स्रिराज के देखे, नहीं दिल को करारी हैं
॥ देर ॥ जगत के विच में आया, अनुज की देह को
पाकर, फसाया जाल माया के, धाद असु की विसारी
है ॥ विना ॥ १ ॥ सकल संसार के अंदर, नहीं हितकार
है कोइ, नजर फैलाय कर देखा, सभी मतलब की
यारी है ॥ विना ॥ २॥ किये जय नेमतप पूजन, फिरा तीर्थ
के धामों में, न जाना रूप प्रसुजीका, उमर सारी
गुजारी हे ॥ विना ॥ ३॥ फटे व्यज्ञान का पड़दा,
कटे सब कर्म के वंधन, कृषा सुरि जैसे संतन का, समागम मोक्ष कारी है ॥ (विना ॥ ४ ॥ इनि

॥ गहुँछा ॥

राग!-(गजल ताल धमाल)

वता दो मोक्ष का मांग, मृरिजी शरण में तेरी ॥देर ॥ जगत के विच में नाना, किसम के पंव हैं भारी, सुनाते हें कथा अपनी, भटकने हो गयी देरी ॥ यता० ॥ १ ॥ कोड मृतिं के पूजन को, यतावे होम करने को, कोड पश्चना के दरशन को, फिराते हे सदा फेरी ॥ यता० ॥ २ ॥ कितावे धर्म चर्चा की हजारो, बांच कर देखी, मिटा शंसय नहीं मन का, सक्क जंजाल में वेरी ॥ बता० ॥ ३ ॥ सकल दुनिया में है पूरण, सुना में नाम सहिजनका, छुडादो जन्म बंधन से, कहे " चंद फतेह " करजोरि ॥ बता० ॥ ४ ॥ हित

॥ गहुंली ॥

राग:- (वरहंस ताल धमाल)

आज स्रिर सुनिये चर्ज हमारी, मेंतो आयो हूं सरण तिहारी ॥ देर ॥ बाल वणो सब खेल गमायो, तरूण कियो वश नारी। गृह कुटम्ब के पोषन कारण, परचर हुयो भिखारी । ज्ञाज ॥ १ ॥ में जानत ये बान्धव मेरे,स्वार्थ की स्व यारी। धन से हीन भयो में जवही, सबको लाग्यो गरी ॥ च्याज ॥ २ ॥ च्याया था जिस काम करण को, सकी याद विसारी । झाकर माया जाल में फर्यो, तकलन की नहीं बारी ॥ झाज ॥ ३ ॥ भव सागर में हुवत हूं अब, लीजिये वेग उन्बारी । ''चंद फतेह '' वे करूगा कीजो, तुम बिन को हितकारी ॥ ज्ञाज ॥ ३॥ इति

[॥] गहूंळी ॥

रागः- गज्ञः (ताल धमाल) अगर है ज्ञान को पाना,तो सुरि की जा सर्ण भाइ ॥ देर ॥ जटा सिर पे रखाने से, भरम तन में रमाने से, सदा फल फुल खाने से, कभी नहीं मोक्ष को पाइ ॥ अ० ॥ १ ॥ वने म्रत पुजारी है, तीर्थ या-श्रा पिपारी है, करे व्रत नेम भारी हैं भर्म मन का मिटा नहीं ॥ घ० ॥ २ ॥ कोटि स्ट्रज शिदातारा, करे परकाश मिल सारा, विना गुरु घोर अन्धारा, नप्रभु का रूप दरसाइ ॥ घ० ॥ ३ ॥ प्रभु समजान स्ट्रिरेबा, लगा तन मन करो सेवा, " फतेह " को परम पद मेवा, मिले भव बंध कट जाइ ॥ अ० ॥ शा

ंगहूंळी

(राग:- गजल कव्वाळी)

ऐसी करी 'गुरु देव द्या, मेरा मोह का बंधन तोड़ '
दिया ॥ टेर ॥ दी बुरहा दिन रात सदा, जग के सब कार व्यवहारनमें, स्वमे सम विन्य दिखाय मुक्ते, मेरे बंखल चितको मोड़ दिया ॥ एसी ॥ १ ॥ कोइ ,दोष गयोदा महेदा रटे, कोइ पूजत पीर पेगम्यर को, सब पंप ग्रंथ छुडाकर के, श्री सेशुंजे महातम बताय दिया ॥ ऐसी ॥ २ ॥ कोड हुटत है मगुरा नगरी, कोइ जाय बनारस बास करे,जब व्यापक रूप पिछान लिया, सब अमे का अंडा फोड़ दिया ॥ ऐसी ॥ ३ ॥ कीन कर गुरु देव की भेट, न वस्तु दिखे तिहु लोक न में, कृषा स्रि समान न होय कभी, घन माणक लेख करोड़ दिया॥ एंसी ॥ ४॥ इति

गहूंली

ंराग:-(ताल चलित हुमरी)

मेरा गुरु मुक्ते दिखलादोरे, कोइ आन के आज मिलादोरे, ॥ टेर ॥ में विरहिण नित रहु उदासी, गुरु मिल न की जान पिघासी, प्रेमका नीर पिलादोरे ॥ मेरागुरु॰ ॥१॥ वर्षा विनचातक दुःख पावे, नारं विना मछली तरसावे । हाल मेरा बतलादोरे ॥ मेरा गुरु।२। चर्गा कमल की दासी तेरी,कृपासूरि चर्जसुन मेरी, भव नाटक से छुड़ादोरे ॥ मेरा गुरु० ॥३॥ में गुगा-हीन कंपट छलंभरिया, कैसेमुक्त पर होय नजरिया, "वंद फर्तेह " को दशदिलादोरे ॥ मेरा गुरु ॥ ॥ ॥ श्रीमान् स्रिवरो महामुनि कृपाचन्द्रः कलो धर्म राट्। प्राप्ती जैसलमेरनारिन नगरे हमां पावयन स्थिपता॥ संसत्तेनवरापरोप कृतये जीणीगमोद्धारिणी । वर्षे वहि-वसुग्रहेन्दुगणिते ग्रन्थस्तथालेखितः॥१॥

॥ गहूंछी ॥

सहियर चालो सुरिश्वर पाछ, ज्ञान को सीखना जी ॥ एतो सुरिश्वरजी का उपगार, कभी नहीं भूलना जी ॥ सहियर ॥ १ ॥ एतो सुरिश्वर है वैरागी, जि-नकी सबम सु लय लागी। एतातपस्या से हुवे रागी, मोक्ष को देखना जी ॥ सहियर ॥ २ ॥ सृरिश्वरज्ञान का पेड लगाया, एतो दया की डाले छाया । एतो द्विपल सूरंग लगाय, भोक्ष को देखनाजी ॥ सहियर ॥ ३ ॥ सरिश्वर सत्तावन ने काढे, ऐतो तेवीसन दूरे द्वारे । पीछे चानुभव जाग्रत होय, मोक्त को देखना जी ॥ सहिषर ॥ ४ ॥ सृरिन्वर विवेक दीवो करे उन जवालो, एतो कार्ट मित्यात्व अधकारी । एतो पामै भानंड भर पूर मोक्ष को देखनाजी । सहियर ॥ ५॥ सृरिश्वर सुपति महेली थी खेले,एनो दुर्गति ने दूरी मैले। एतो जिप रमणी सु खेले, मोक्ष का देखनाजी ॥ सहियर ॥ ई॥ सृतिस्वर युक्ति अमृत गुरू पट धारी, एवं। कृषाचंद्र सुरिमा उपगारी। एनो जय सागर सा जयकारी,मुक्ति को देखना जी || सहियर || ७ || मृ-रिम्बर बहुन किया उपगार, उन्हीं की कीर्ति खपरंपार। पतो पर् दर्शन के जागा, मोचा को देखनाजी ॥ सहि- वर ॥ ८॥ एतो संवत् डझीसे चौरासी के साल, एतो निगसर मास अनुहार । एतो " अहिमा श्री " करे चरदास, मोक्ष का देखवाजी ॥ सहियर॥ ६॥

॥ यहूंकी॥

राग:- (गुम हें सुखनारी)

मुनिराक्ष को चंद्रो, पाप निकंद्रो, आतम के हित काज ॥ टेर ॥ देशदेश में आप पधारे, सव जन के हितकार । देशना देते खन्न सुनाते नरते पर उपगार हो ॥ सुनिराज ॥१॥ आश्रव वारी कर्म निवारी, सु-अति के दातार। दोष वयालीस निसदिन टाली, छेते गुद्ध चाहार ॥ हो मुनिराज ॥ २ ॥ माया को छोड़ी ममता को तोड़ी, देते ज्ञान अपार । भव जल से मोहे पार लंघावी, करो गुरु मोरी सार हो ॥ सुनिराज ॥ ॥ है॥ गुरु वर जैसा जग में नहीं रे अवर्न की आधार। दो गुरु वर मुसको सहीरे, श्रवगा ज्ञात हि-तकार ॥ हो मुनिराज ॥ ४ ॥ इत्यादि गुणे करी है, महिमा चापरंपार। कीर्ति जग में सुखकरी रे तीन क्रोफ मनुहार ॥ हो मुनिराज ॥ ५॥ फूट मिटीवी सगड़ा भंगायो, देश का करोनी उद्धार । जैन घर्म का नाम दीपावो, विद्या का करोनी प्रचार ॥ हो सुनिराज

॥ ६ ॥ अन्य जीव को तारो सुरिजी, कृषाचन्द्र महाराजा अर्जा ं चंद्र मूल की '' सुनिये, महर करीने खाज ॥ हो सुनिराज ॥ आ सम्बत् वहो दे पन्यासीये रे, वैसास्मास मंहार । खाठम दिन भन्ने भावसुंजी. आनंद हुपै स्पार ॥ हो सुनिराज ॥ ८॥ प्रचतक शिर्ष्यर हे खावके, सुलसागरजी नाम । समृत वचन सुणके सबनो, करते वत्तम काम ॥ हो सुनिराज ॥ ९॥

॥ गहुंछी ॥

मेहं दास तुम्हारा छूपाछिर मेहं दास तुम्हाराजी। सुतिपदु मात जगतका नाता, स्वार्थ का सब संसारा जी। सब जगस्वपना लोड न अपना, तू मेरा रखवारा जी। १॥ तपजप कीना तत्व न जाना, अहीं सतसंग विचारा जी। सब ग्रण हीना धर्म न कीना कैसे हो निस्तारा जी। सब ग्रण हीना धर्म न कीना कैसे हो निस्तारा जी। स्॥ मोह मर्था ने जाल विद्यारा, पसीधा जीव विचारा जी। तुझ विन करणा भव भव हरणा, नहीं होवे हुटकारा जी॥ ३॥ व्यवगुण मेरे हे सुरिजी घनेरे, नहीं झुद्ध पारावारा जी। 'चंदमुल '' दारण मे ग्रायो, कीजे भव जल पारा जी॥ ४॥ इति॥

॥ गहुंछी ॥

गुरु विन कौन सहाई जगत में गुरु विन कौन सहाइ

रे॥ टेर्॥ यात विना सुत गांयव नारी, स्वार्थ के सव भाई रे। परणारण का पन्तु जगत सें, सतग्रह वंध सहाइ रे॥ १॥ सब सागर जल हुरतर भारी, कर्म महा दु:खदाई रे। गुरू खेबटीया पारलंघावे,ज्ञान ज हाज वेठाइ रे॥ २॥ जन्म जन्म को मेट छंधेरा, संशाय सकल नसाइ रे। ज्ञुवाचंद्र खिर गुण पूरणः घटमे दे दरसाइ रे॥ २॥ गुरू का यचन धार हृद्य में, साव सिक मनलाइ रे। '' वंदस्तुल ''करो नित सेवा, मोक्ष पदार्थ पाइ है। ४॥ इति

॥ गहुं छी ॥

े गुरु के सरगा में आयके फिर आरा किसकी कीजिये। देरा। नहीं दिख पड़ता है सुके, दुनिया में नोरी शान का गंगा। किनारे बैठ के किम, क्रूपका जल पीजिये।। गुरु०।। हें ।। हर्रागज नहीं लायक हूं में, गरचे तोरे गुगा गानका। धेरी खता को माफकर, दीदार अपना दीजिये।। गुरु०।। २। मिलता है आनंद जिनके, नाम हेनेसे सही। ऐसे गुरु को छोड़ कर, फिर कीन से हित कीजिये।। गुरु०।। ३।। क्रुपाचन्द्र स्वरि नाम सुनकर में सरण तेरी पड़ा। सफलकरों हमको गुरु, अब पार अब से की जिये।। गुरु०।। ४।। " मूल " पर कर के कृषा गुरु, बचना मृत पा टीजिये । होय वेड़ापार भवसे, अर्ज ये सुन लीजिये ॥ गुद्र० ॥ ७ ॥ इति

॥ गहुंछी॥

राग:-(गुरु विन भौन सहाई)

गुरु विन कौन मिटावे भव हु.ख गुरु विन कौन मिटावे रे॥ गहरी निव्यां वेगवड़ा है, यहुत जीव यहजावे रें। कर कृषा गुरु परु अज्ञासे, खेच तीर पर लावे रें॥ गुरु०॥ १॥ कास कोध मद लोभ चोर मिल लूंटर कर खावे रें। ज्ञान खड़ दे कर,कर माँहि सबतो मार भगावे रे॥ गुरु०॥ २॥ कृषाचन्द्र सहि मतुहारी, कर्मन से छुडवावे रे। सीधे आग पर एग धरवा कर, सुखसे धाम गुगावे रे॥ गुरु०॥ ३॥ तन मन प्राण सब धर्पण करहे, जो गुरु देव रिझावे रे, गुरु०॥ ४॥ इति

॥ गहुली ॥

रागः–(राखु हमारे घटमे) ररालु मेरे हृदय में, क़ुपासृति नाम तेरा ॥देर॥ पीकाणे में मृति विगलो, भविजन के हित कालो, अगणित गुगसे राजो ॥ रखलु ॥ १॥ शासन सम्राट तुमहो, न्याय विशारद तुमहो, म्याचार्य मेरे तुमहो ॥ रखलु ॥ २॥ ल्रचीस गुगो के धार्रा, गरमीर वाणी भारी, तुम शान्ति मुद्रा प्यारी ॥ रखलु ॥ ३॥ तुम म्याति श्रायंत सारी, महिमा हे व्यपरंपारी, करे घ्रष्ट कर्म छारी । रखलु ॥ ४॥ गुरु चर्जी मेरी सुनना, चरणों में मुझको रखना, सब पार भी तो करना ॥ रखलु ॥ ४॥ भ मूलचंद ११ हप पारे, दिलमें उमंग मावे, सेवा तुम्हारी चावे॥ रखलु ॥ ६॥ इति

।। गहूँकी ॥

मुनि सुखसागरजी, ज्ञान देवोनी अज्ञानी समाज को ॥ देर ॥ कुषा ख्रि के शिष्ण रहनहों, शोधा अप-रंपार, मधुर ध्वनि सुनकर अति सुखकर, षायो हर्ष अपार रे ॥ सुनि० ॥ १ ॥ शासन समाट गुरुवर है आप के, मुल्क सुल्क सरनाम । उनके शिष्य कहलाने मुनिवर, साक्षात चंद्रसमान रे ॥ मुनि० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत पालो मुनिवर पंचाश्रवको टालो । पंच सुमती को धारो मुनिवर, दोष बयालीस टालो रे ॥ सुनि०॥ ३ ॥ बालसचारी हो सुनिवर, शास्त्र के वेता भारी । जो जन वंदे भाव धरीते, होजावे सव पारी रे ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ ध्याणित गुण के धारक मुनिवर, शास्त्र अर्थ सुविचारी। वांच्छित फल को देवो ग्रस्वर मिले मुक्तियषु प्यारी रे॥ मुनि०॥ ५॥ सम्यत् उन्नीसे साल पच्पासी, ग्रुभ दिन हे बुधवार, '' चंदमूल '' को दास जानकर करदो बेड़ापार रे॥ मुनि०॥ ६॥ इति॥

॥ गहुंछी ॥

हाधजोही ने विनवं रे खब क्या रे मिलसो द्याल ॥ सुगुरुजी ॥ जेसाणेरा भाव राखजो रे, दर्शन देजो कुपाल ॥ सुगुरुजी ॥ १॥ शिव रमणि वरवा भणी रे, तुम लीनो संयम भार ॥ सुगुरुजी ॥ श्रोध मान माया त्याग के रे. तज दियो सब संसार ॥ सुगुरुजी ॥ २॥ दिाष्यादिक परिवार सुं रे, परिवर्ष जगदाघार ॥ सुगुरुजी ॥ भारंड पक्षीनी परे रे,प्रमन करो विहार ॥ सुगुरुजी ॥ रे।। पहिले महिने नहीं खोलख्या रे दूसरे रही धंघा माप ॥ सुगुमजी ॥तीजे महिने मे खोरख्युं रे, विहार किया चौधा माय ॥ सुगुरुजी ॥ ४ ॥ ईस यिना जिम चन्द्र गिरी रे, तुम विन सुनी धर्मशाल ॥ सुगुरजी ॥ ओलं घणेरी ब्यावसे रे. टागसे हिवड में साल ।।सू-गुरजी ॥ ५ ॥ प्रतिक्रमण कोण करावसे रे, कीण करासे प्यलागा ॥ सुगुरुजी ॥ भविक जीवने तारवा रे,कौन 'सुणासे व्याखान ॥ सुगुदनी ॥ ई ॥ घन्य नगर धन्य तेथरा रे, जिँहा विचरं गुमराय ॥ सुगुमजी ॥ धन्य ते आवक आविका रे, भेटसे तुम गुम पाय ॥ सुगुमजी ॥ ७ ॥ ते दिन क्यारे आवशे रे,देखसुं तुम सुख चंद ॥ सुगुमजी ॥ भव भंद चरणरी सेवना रे, दिजो जिन कृपाचन्द्र ॥ सुगुमजी ॥ ८॥ उगणीसे त-यासीये रे,जेसलमेर मंभार ॥ सुगुमजी ॥ ६ ॥ इति

॥ गहूळी ॥

श्री कृषाचन्द्र महाराज अरज सुण मोरी, तुम द्रीन की बिलहार सुरत लगे प्यारी ।। आप कीयो सुमति से प्यार कुमित देई छांडी। आप जीते परि-सह सर्व, क्षमाखड़ धारी ॥ आप लिये शास्त्र सहु चीन, पाखंड दियो टारी। आप भविजन के हित कार ज्ञान देवें भारी ॥ १ ॥ आप चारों ही दिये छोड़, पंच लिये धारी, आप धरो चौबीसी को घ्यान, अष्ट दिये जारी ॥ आप सोलह दीने काट अये ब्रह्मचारी, आप सुण रहा की खागा, यड़े उपगारी ॥ २ ॥ आप सब मुनियों के बीच, मुद्रा सुभ कारी, जिम तारा माहिं चंद सोमे अति भारी ॥ हम दुषम आरा के छोग -अज्ञानी नारी, आप हित को दो उपदेश सदा दिल धारी ॥ ३ ॥ इममूछ चंद्' कर जोड़ अरज कर गाई, ध्राय के चौमासो विक्रम पुरदो ठाई। होवेगा वहु उप्पार, सुगुरु सुपसाई, वर्तेगा खानन्दकार सकल संघ माहि, ॥४॥ हे माल चौरासी माम, चैत्र अति भारी विद दशमी दिन सुखकार आनंद से गाई। प्रवर्तक सुखसागर महाराज, अन्य सुनि राई, गुरु चरण कमल का दाश चर्डन गुण गाई॥ ४॥

रागः- (जिनजी मुझ पापी नेतार)

कृपानाथ केम करो आप विहार जीव घयो धक्क जाय। गुरुजी केम करो आपविहार। जान गुणे करी शोभ ताजी कापाकचन सार। रूप गुणे करी दीपताजी, करता उम्र विहार॥ गुरुजी॥ १॥ घर ना घथा में पड़ी जी, सुत्र न सुष्यो लिगार। हमने कुण संभला वसेजी, आप कीयां विहार॥ गुरुजी॥ २॥ तुम द्दीन विन् किम कहजी, देहने पुछु रे यात। क्षिणक्षिण में मुज साभलेजी, एक दर्शनमां वात॥ गुरुजी॥ ३॥ पुरुष् स्पीगे गुरू मिल्याजी, हिन मिलवो के रे दूर। कूर कर्म महु में कीयाजी, हिन चाल्या गुरु दूर। गुरुजी॥शी। उपामरो सुना पटयोजी, जोना होने दुःख अपार। गुरू बिन धर्म मिले नरींजी, क्यां जहकर रें पुकार॥ . गुर्जी ॥ ५॥ खांधेलीधा पातराजी, धांधी कंबर आज।
- धम लाअ शुभ देईने जी, सार्या आतम काज ॥ गु- रंजी ॥ दें ॥ स्रिक्षपाचन्द्र विन्वुजी, अरज करू कर
- जोड़ । सुख शाता में देहजोजी, थामें मंगल कोड़
॥ गुरुजी ॥ ७ ॥ संबन् उन्नीसे तयासीयेजी, पोप मास
- शुभवार । स्री कुषाचन्द्र सेयताजी, होसे शिवसुख
सार ॥ गुरुजी ॥ ८ ॥

। गहुँकी ॥

गजल

कुराचन्द्रस्हिर द्या करके, अब सागर से करो पार मुझे ॥ देर ॥ नीर अपार नतीर दीसे, किम भीर घर अब में मन में । मेरी नाव डुवाय रही मझमें में शरणागत जानके तार छुझे ॥ १ ॥ कम बसे घलवान बहु, चेहु बेरे पड़े बहु धारण में। बाज रही विपरीत हवा तृंहीं एक बचावनहार झुके ॥ २ ॥ छूट गया सब साथ घरा जुछ हाथ में जोर रह्या भी नहीं । अब गुरु न देर लगाय जरा निज बांह पसार छुझे ॥ ३ ॥ तेरा नाम जहाज बड़ा जग में, सब बास्त्र सिद्धांत बतावते हैं । " चंदै सूंल " जपू दिन रात सदा, गुरु की किये भव से धार हुके ॥ ४ ॥

॥ गहूंळी ॥

करो सत संग प्यारा, जन्म सफल हो जाय तुमारा। शंसप सकल मिटाय ज्ञान का होय उजारा।। करो॥ १ ॥ मृतिं पूजन में मनलावे, कोटिन तीर्थ फर आवे। मन का भरमन जाय, विना सत संग विचारा रे ॥ करो ॥ १ ॥ तप जप दान ध्यान बहुचारी विन समसे किया यहुभारी। ज्ञान विना नहीं मोक्ष होय करो जतन हु जारारे ॥ करो ॥ ३ ॥ करे अनेक काम शुम कोड, मत संग न सम प्ज नहीं होड़। घड़ी पलक छिन मांदि, होय भव सागा पारा रे ॥ करो ॥ ४ ॥ निस दिन गुरु शिक्षा जहां रोड, वहुचंद मृत्र " संग शुम सोड। कृपाचद के चरण सरण से, हो निस्तारा रे ॥ करो ॥ ४ ॥

॥ गहूंळी ॥

। राग:-गजल ।।

ह जगत में नामये,रोशन सदातेरा सुरि, तारते उमको सदा जो हे सरण तेरी सुरि ॥ देर ॥ हाल चौराखी में बेरा कमने सारा सुझे । हे बचा खबतो सहारा, हे सुम्दे तेरा सुरि ॥ १॥ है ०॥ मैक्हों को तारते हो, महर की करके नजर । वर्षों नहीं तारो सुके, है क्या सुना मेरा सुरि ॥ है ०॥ २॥ हाल जो तनका हुआहे आप विनं किसको कहूं। सोह राजा ने सुके, चारो तरफ वेरा खरि॥ है०॥ ३॥ कुपास्रि से "फतेह" की तो गही अरदास है, आप सरणों में रहे, सेरा सदा डेरा सहि॥ है०॥ ४॥ इति

॥ गहूंली ॥

राग:-(माड ताल दाद्रा)

सेरी विनती सुनी स्रि तेरी शरण में पड़यो।।
देर ।। माता तात आहवंधु, स्वार्थ के सब मीत। कोइ
सहायक है नहीं रे, स्तृठी जग की प्रीत।।तेरी०।।१॥
अब सागर में भटकियोरे, पायादु: एव द्यपार। अवतो
द्या करके स्तरि, लीजिये मोहे उवार।। तेरी०॥ २॥
तीर्थ बत प्रयदान, किया नहीं शुभ काज। दास तुम्हारो
जान के जी, रखिये "फतेह " की लाज।। तेरी०॥
३॥ अवगुण सेरा ना निणीजी, पतित पावन हार,
कुपास्रि तेरे विना, मेरा कीन करे निस्तार।।तेरी॥४॥

॥ गहुंली॥

राग:-(असराव थांशी बोली ध्यारी लागे)

स्रिराज रहानें शिवपुर गेल वताना गुरुद्याल ही गुरुद्याल जी हो गुरुद्याल ॥ टेर ॥ लख चौरासी मीनि में, पायो दु:ख अपार, नर्क और तियेच में ्रहलत फिरयो संसार । हो स्रिराज अवतो शरण तुमारी आयो । गुरुद्याल ॥ १ ॥ अव सागर के ,मझ धार में, भमर पड़े गति चार । गहरी निद्या नाव पु-रानी, जलती करदो पार । हो स्रिराज येतो मांशी नाम घारावो । गुरुद्याल ॥ २ ॥ केह अपराधी तारीया केह तारण हार । नुझ पापी को तारो स्वामी, अरज करू सिर नाय । हो स्रिराज म्हाने शिवपुर टिकट टिलादो । गुरुद्याल ॥ ३ ॥ हाथ जोंड विगती करू,चरणों में शीख ननाय, " चंदफतेह " परगा को चाकर, मन वंकित फल पाय । हो स्रिराज म्हाने भव नाटक सुडादो । गुरुद्याल ॥ ४॥ इति

॥ गहूली ॥ (जिनवाणी की)

(राग—सिद्धाचलागरी भेटयारे)

श्रवणसुणी जिनवाणारे,गया पाप हमारा ॥श्र०॥ जिनवाणी की रचना श्रञ्जुत, कही न सकूँ विस्तारा । साची श्रद्धाइण पर राख्यां,खपजे ममकित सारा रे॥ गया॰ ॥ १॥गुण पैतीम लीये इक जोजन, वरसे अ-मृत धारा । श्रवनी खपनी भाषा में समके, खित-स्य एह उदारा रे॥ गया॰ ॥ २॥ स्याद्वाद अरु नय निक्रेषा, जीवाजीय विचारा। विधिपूर्वक ह्याने सेर्था थीं, सकल जीव हित कारारे। गयां। ॥ इ। संपत् खुल हित कारण वाली, कही हैं सूत्र मंभारा । निज सत्ता ने प्रगट करण को, एही छैं उपचारारे।।गया।।। ४॥ प्रगटे परो इर्ग पंचम काले,सरसत पर उपगारा। केशरीचन्द्र' के अब अब होड्यो, वाणी रो ख्याधारारे।। ॥ गयां।। ६॥

॥ गहुँ ही ॥

स्रिश्वर फलोधी नगर चौमासोरे। छा विनतडी मन लासो। सुरिश्वर। फलो। १। सुरि देश विदेश थी आयारे, खद्ध मध्जिन में मन भाषा है। द्शिशन करी ने सुखपाया ॥ सुरिश्वर ॥ १॥ कंचन कामिनी के गुरु त्यागीरे, ज्ञान द्रान था लय लागीरे। मोक्ष नगरी त्या गुर रागी॥ सुरिश्वर ॥२॥ पांच सुयति ने सुधी पालेरे,तीन गुप्ति ने निहालेरे। यावन समाचार ने टाले॥ सूरिश्वर ॥ ३॥ विद्या बेलड्।ये वीटानारे, गुण माला करी लपटानारे । गुरु चर्या करन सुहाया।। स्ररिश्वर।।४।। गुण सुगुरु तणा से मासुरे, निरमल ग्रातम ने करखंरे । मोक्ष नगर तगा खुल लेख ॥ मुरिश्वर ॥ ५॥ मोह जाल माया यां पड़ीने रे, सूत्र सुप्यो नहीं चित्त घरीने रे। सहिर अब के चौमासो करीने :॥

सिरिश्वर ॥ ६ ॥ संवत् उन्नीसे चौरासीरे, कार्तिक मास वदी सुरख रासीरे । गहुं ली करू मन च्छासी ॥ सु-रिश्वर ॥ ७ ॥ गच्छ खरत्तर मां स्रिश्वर राजेरे, कृताचन्द्र सुरि गुण द्याजेरे । एतो गुमान गुजर गुण गाजे ॥ सुरिश्वर ॥ ८॥

॥ गहूळी ॥

ष्माज रंग वरसेरे, माहरो सुरिश्वर देख्यां मनदो हरतेरे ॥ एदेशी ॥ मरुधर देश जोधाया भारी,चामं नगर सहाया रे। मेघराज कुल भाण जगत में, नाम दिवायारे ॥ च्याज ॥ १ ॥ वंश च्योस गोच षाफणा मात खमरा देवी जाय रे, दिक्रम उन्नीसे तेरे बर्पे महीनां चैत्र सुराया है।। चाज ॥ २॥ साल छतीसा है सुखकारी, मन वराज्य समाया रे। युक्ति असृत बचनामृत पीके, सुद्ध समकित रस पाया रे।। प्राज ॥ ३ ॥ पर् काया प्रति पालक सहस्र अय नि-क्षेप मन लाया रे।जीवाजीव नेद दर्शान, आगमसे लघ लाया रे ॥ ग्राज ॥ ४ ॥ पांच समिति नीन गृप्ति घरं,नित संयम से चित लाया रे । पंच महावृत सुवा षाले, पर उपगारी षराचा रे ।। घ्याज ॥ ५॥ उहीसे पहोतर वर्षे,सुम्पई शहर मन आयारे । संघ चत्रविध

महोत्सव करके, पद आंचार्य मुखदाया रे ॥ आज ॥ के ॥गुण छतीस शोभे सहुर, खरतरगच्छना रायारे ॥ चंद्र सूर्य जिम दीपे सहुर, सहु संघ के मन भागारे ॥ आज ॥ ७ ॥ शहर फलांधी पघारे सहुर, संघ महु हु रखाया रे, । देख दीदर अनुपम गुरुवर का, अति हु लसाया रे ॥ आज ॥ ८ ॥ मधुर ध्वनी असत सम वपने, भगवति सुत्र सुनायारे । सुरि कृपाचन्द्र जय वन्ता वर्ता, शिशु पङ्गज मन भागा रे ॥ आज ॥ ९॥ संवत उन्नीसे साल चौरासी कार्तिक मास सुहायारे। धंवल पक्ष द्वाद्शी दिवस, मुनि वर्द्धन गुण गाया रे अमाज ॥ १०॥

॥ गहूं ली ॥

सुरिश्वर द्याया शहर में, संहियां वंदन चालों हे। द्रीन करतां जेहना, गुद्ध समितन थावे हे ॥टेर॥ खरतर गच्छ में राजता सहियां गिम्वा गुण गंभीर। तरणी सम गुरु दीपता शहिया, इशिवत निर्मल नीर।। सहियां मोरी सांभलों, गुण निधि द्याया रे॥१॥ द्याचार्थ पद में शोभता, सहियां सुरिकृदा शशिराज जग में भविषण पूजता, सहियां सहज कला निध भाजा। १॥ द्याश वंश कति शोभता, सहियां गोन्न बाफणा जान । वंदा दीपायो तेहनो. संहियां जिम परगट थयो भागा॥३॥ युक्ति ग्रमृत गुरु राघना, सहियां भलो मिलयो छै जोंग, उगणीसे छतीस में सहिषां, प्रकट्यो प्रवय संयोग ॥ ४ ॥ ज्ञान ध्यान में राजना,सहियां स्वाद्वाद् मत पर वीण। जीवा जीव प्रस्पता, सहिंया जिम सरस्वति नो वीण ॥५॥ शुद्ध संयम को पालता सहियां पर काया प्रति पाल,पंच-महावृत धारता, सहिंघां घरम तणा रखवाल ॥ ई॥ श्रीसघ सह वीनवे, गुरु देवो ज्ञान विशाल, मुरख ने प्रति बोघने, गुरुकरदो स्राप निहाल ॥ ७॥ सागर वर्द्धन बीनवे, गुरु सुन ज्यो एह ऋरदास, चरण सेवा में राखज्यो गुरु शिष्यको हरदम पास ॥८॥ संवत सप उगणीस में, सहियां मास फागुगा गुलजार । निधी एकाद्ञी सोमती, सहियां वार भृगु मनुहार ॥ ९ ॥

॥ गहुरी ॥

मालमाल म्हारी सुगुग्रा सहेल्यां,गुरु गुण गावोरे ॥ महुमिल चालौरे ॥ पृथ्वी मंडल में विचरता, जंगम तीर्थ राया रे ॥ संत्र चतुर्विय हरल वघायो, फलोधी सहर में स्माया रे ॥ सहु ॥ १॥ अढार सहस शि-लांगना घारी, पंचाचारने पाले रे । कपाय चड नि-

वारके षर् काया रखवाले रे॥ सह ॥ २॥ चरण सितरी करण सतरी, भावना भावे बारे रे। रव्नत्रयी च्याराधते, संयम सतर प्रकारे रे ॥ सह ॥ ३ ॥ रुची वंती सुश्राविका सुंदर, मुक्ता फल ले ब्रावे रे। चड गति दारण मंगल कारण स्वस्तिक ठावै रे ॥ सह ॥४॥ नवगम भंग निक्षेपा जाणे, चार प्रमुवांग कहाया रे! स्वाद्वाद् वाचना पूरी, भगवह अंग वचाया रे ॥ सह ॥ ६ ॥ पूर्व पुन्य अपूर्व जेहना, जिन वाणी रस चाखे रे । श्रद्धावंत सुणेजो काने, सद्गुर भाखे रे ॥ सहु ॥ ६ ॥ संघ न । यक कृपाचनद्र सूरि, सहकोइ मन आणे रे। खरतर गच्छ मांयने कांह, उदयो भाणे रें ॥ सहु ॥७॥ संवत् उन्नीसे चौरासीये, कार्तिक सुदि शुभ वारी रे। ग्रानंद ग्रमान मिल गहुंली गाये, मंगल कारी रें॥ सहु ॥ ८ ॥ इति॥

॥ गहूंळी ॥ (बधाई)

श्राज तो हमारे भाग्य कृपास्हिशायै। श्राविका खड़ी दुवार, हाथ में सोवन थाल । मुक्ता कुंकू लेघ शालि, गहूंली कराये ॥आज० ॥१॥ माता स्मरादे के नंद, मेघ से उद्ये दिणंद । धन्य श्री कृपास्हिन्द भन्य हरखाये ॥ आज० ॥ २ ॥ दिक्षा ली छतीसे साल, छोड़के जग का जंजाल । किया श्रंथ जेशल उद्घार,सृरिसुहाये॥ ग्राज०॥३॥ वीकानेर सप्तिवारे, शिष्य सात सुखकारे । कृपासृरि चारणाम्युजारे, 'भेवर' लपटाये॥ आज०॥४॥इति॥

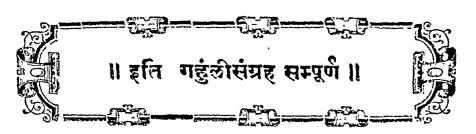
गहूंर्छा

राग:--(कलाली)

चालो सहेल्यां समिकत निर्मल काज हो सहे यां, कांई आज गुर्गावंता गुरुने वधावस्यां हो राज । (टेर) जोसां जोसां गुरु मुख भमल विकाश हो सा० । कांई पूर्व संचित कर्मने मेटस्यां हो राज ॥१॥ चा० ॥ करता करता भवि जीवो उपगार हो सा०। काई पूर्व संघोगे सुगुरु पधारिया हो राज ॥२॥ चा० ॥ राजै राजै नभ खरतर गच्छ भाण हो मा०। कांई सुरि जिन क्रपाचंद्र सरि श्वर हो राज ॥३॥ चा० । भरिया भरिया ऋकंम रयण कचोल हो सा० । काई सुगुगी आवक्तगी इम गहुली करे हो राजू ॥४॥ चा०॥ उभा उभा अरज करे श्रीसप हो सद्गुदं िंकाई भगवती मृत्र प्रकाशो रंग संहो राज ,॥५॥ चा०॥ मीठी मीठी साकर द्राख विशेष हो मा॰। काई मीठी प्रामृत सम वाणी गुरु तणी हो राज ॥६॥ चा० ॥ चाखे चाखे जिन वचनांमृत विन्द्र हो सा०। काई सहज मौभागी शिवरमणी वर्रे हो राज ॥७॥ चा०॥ काई दीजै दीजै तुम चरणां रीसेव हो सद्गुढजी। काई चतुर सहिल्यां इम चरजी करे हो राज ॥८॥ चा०॥



श्रीमान् सुरिवरो सहामुनिकृपाचन्द्रः फलोधमराट् । प्राप्तो जेसलभेर नाम्निनगरे ६मां पावयन् स्थापिता । संनत्तेनवरापरोपकृत्तये जीर्णागमो द्वारिणी । षर्षे-वह्विसुग्रहेन्दु गणिते ग्रन्थस्तया लेखितः ॥१॥





१ पुस्तक मिलने का पता—

१ श्री जिनद्त्रसूरि ज्ञान भण्डार

गोपीपुरा ओसवाल मुहला

सुरत

२ श्री जिन कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भण्डार

मोरसजी की गजी

इन्दौर (मालबा)

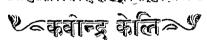
राज्य अवस्थान स्थापित स्थापित

स्रेडिया जैन भिंडिंग प्रेस बीकानेर में मुद्रित ता० १६-१

Muni Mangal Sagar.

सुलसागर ज्ञान विन्दु न० २१

॥ श्रीसुससागर भगवेद हरि पूज्य सद्गुर प्रोनमः॥



‡गहूंली संग्रह प्रथम माग‡

निर्माता -

॥ मुनि-प्रवर कवीन्द्र सागर जी महाराज॥

मुद्रगा-द्रव्य-दात्री --

🖾 श्रीमती कुञ्जी वाई 🖘

मालीवाडा हीरानन्द की गली, देहली। *

वीर सं० २४५७-वि० सं० १८८८।. मृत्य

पठन ऋतुशीलन ।

🕸 पुस्तक परिचय 🏶

गहूं लियाँ गाने की प्रथा पाचीन काल से प्रचलित है, वर्त्तमान में व्याख्यान के मध्य में गाई जाती हैं। पूर्व कवियों की बनाई हुई गहुंलियाँ वर्त्तमान में भी संख्यातीत मिद्ध विद्यमान हैं, उन में उस २ समय के अनुकूल भाव, भाषा और तर्जे रही हुई हैं अतः गाने में कुछ कम अनु-कूलता पड़ती है, उसी अनुकूलता को बढ़ान के शुभहेतु से 'पूज्यपाद गर्गाधिश्वर श्रीमान् हरिसागरजी महाराज साहव? के शिष्यरत्न 'म्रुनिपवर कवीन्द्रसागर जी महाराज ने गहंलियों को महात्मात्रों के गुण ग्राम के साथ शिक्षामद सदुपदेशों से भुरपूर सरल मधुर नई तजों से हिन्दी भाषा में निर्माण कर के हमारी अभिलाषा पूर्ण की है। 'पराप-काराय सताँ विभूतयः ।

प्रस्तुत पुस्तक को 'श्रीहरिसागर जैन पुस्तकालय' द्वारा प्रकाशनार्थ देहली निवासी 'जौहरी सोहनलाल जी वहारे की धर्मपत्नी श्रीमती कूंजीबाई ने द्रव्य सहायता दे कर स्वपुत्री हीरोदेवी के स्मरणार्थ भेंट स्वरूप वितीर्ण करवाई है। श्रत: धन्यवाद देता हूं और उदारात्माओं को तद्जु-सरणार्थ भेरणा करता हूं।

परिचायकः —

रतनगढ निवासी वैरागी तोलामल सींघी



स्वर्गीया स्त्रीमती होरोदेवी



जन्म । वि० सं० ११६७ चैत्र कृष्णा प्रतिपत्।

मृत्यु वि० सं० १६म्पू आश्विन कृष्णा १४।

SADDHARAM PRESS DELHI.

अभिती हीरोदेवी की संक्षिप्त जोवनी कि धर्म आराधितो येन, कृत कर्तव्य मात्मन । हिताय जीवितं यस्य, किं मृत स न जीवित ॥ (कवीन्द्रकेलि)

स्यूल देह को छोड कर के भी वर्मी-कर्च व्यशील-सर्वहिते-पिणी मात्माप पृथ्वीपट से लुप्त नहीं होती, प्रत्युंत वही प्रभाव स्त्मकाय से जगत् में जमाये रखती हैं। वैसे ही श्रीमती हीरो-देवी वि० स० १८६७ चैत छ० प्रतिपदा के दिन अपने मोसाल वसई में देहली निवासी जौहरी लाला सोहनलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती कृजीवाई की कुत्ती स जन्म खेकर, अपने पिरुगृह में सामायिक प्रतिक्रमणादि धर्मायन्यों का तद्तुशीलन करती हुई, स्कूल की ७वीं फ्लासमें चारी इल्मों में पास होती हुई विनय विवेक-सदाचार-सुशील-शाति भादि गुर्लो से भरौ हुई, युवावस्था में कलकत्ता निवासी श्रीयुत लामचन्द्रजी भाडियेके साथ न्याही गई थी। सुयोग्य यहिणी पदको सुशोभित करती हुई. नवपदकी भोली, मधा-पद की ओलो पत्रमी तप, पचासुवत आलोचना शरुअयादि महातीथों की यात्रा इत्यादि अनेक धर्मछत्यों को करती 🗱 दो महीने के विमलचन्द्र नामक बालक को अपना स्मरण-चिन्हरूप छोडती हुई वि० स० १६८५ के ब्राश्विन छ० १४ के दिन १८ ह वर्ष की महपवय में समाधि से मसार ससार को छोडकर, सुदमकाय-यश कायसे अमरत्व को पाई श्रीमती का सादगी से, सामाविक शांति से भरा फोट्ट उपर्युक्त विषय की साली दे रहा है। बत्यज्ञ विषये कि प्रमाणम् अतः अल्म। जीवनी लेखक ---

रतनगढ निवासी वैरागी तोलामल सींघी

5.承本本本本本:本本本、西本本本本本本本 * समर्पणा प्रातःस्मरगोय पूज्यपाद चोरतपस्वी श्रीमत् छगन सागरसद्गुर को सेवा में सादर ज्ञानी महाध्यानी तपस्वी पूज्य गुरुवर श्रापका स्वर्गीय दिन ही है स्मर्गासाधक विनाशक पापका। इसमें सदा से तुच्छ मैं ऋत्युच भावों से भरा कृतकेलि रसरेली समर्पण आप सेवा में धरा॥ दया बुद्धि से देव! स्वीकारें त्राशा यही। दर्शन दें स्वयमेव हृद्य भावना में कही।। भवदीय दासानुदास विक्रमाब्द्—१९८८ कवीन्द्र भाद्रशुक्ल ६ 本本本本本本法:本本本本本本本本本本

॥ कवीन्द्र केलि॥

* अपर नाम *

। गहूंली संग्रह प्रथम भाग ।

। श्रो गौतम स्वामि गुख वर्णन गहूंलो । १ ।

। राग—म्राशावरी ।

नित्य नमो दिसकारी रे चेतन ? गुरु गौतम जयकारी । टेर।
लिब्ध निधान ज्ञानगुणोद्धि, विद्य विनाशनकारी ।
गुरु श्रनुरागी परम विरागी, सुव्रतिजन सुस्कारी रे। चेतना १
सरल सुयुक्ति वोधन शक्ति, अद्युत गुण अविकारी ।
निरिममान विधान विधायक, क्षायक भाव विद्यारी रे।चे०। २।
श्रद्धते केवल ज्ञान का देते, दान महा उपकारी ।
शिष्य हुए वे निश्चय करके, होते शिवमग चारी रे। चे० । ३।
सुस्ततागर भगवान मञ्ज औ, वर्द्धमान पट्धारी ।
पृथिवी नन्दन वन्दन करते, हारे मोहमहारि रे। चे० । १।

श्रुतदेवी जाके मुख पङ्कज, खेलत विविध मकारी। इरि कवीन्द्र नमो गुरु गौतम,वर्चे मङ्गलाचारीरे।चे०। ५।

। श्री पूर्वाचार्य गुरु स्मरण गहूंली । २।

। राग-माढ।

नमो शिरनामी गुरु गुराधामी, शासन के शिरताज। टेर। पावन जीवन गौतम स्वामी, गराधर गुरामियानाल । प्रातःकाल में नाम लिये ते, पकटे मङ्गल माल । नमो० । १। अन्तिम केविल जम्बूस्वामी, मुक्ति रमा वर कान्त । प्रभव प्रभु प्रभृति श्रुतकेवली, देवें वोध नितान्त । नमो०।रा महागिरि द्यादि दश पूरवी, प्रवचन प्रागाधार । देवर्ध्दिगिए जिनभद्रादिक, त्रागम संग्रहकार । नमो० ।३। श्रीसिद्धसेन हरिभद्रमञ्ज, शासन थम्भ समान । ज्ञानी ध्यानी पूर्ण तपस्वी, दिच्य अतिशयवान् । नमो० । ८। नवाङ्ग वृत्तिकार हुए प्रभु, अभयदेव सुरीन्द् । श्रीजिनवल्लभ सूरि किये थे, खंडित पाखंड दुन्द । नमो। । ।। दादा श्रीजिनदत्त सुवोधक, श्रावक संघ विशेष । त्राज भी जाके पुराय मतापे, भागे विद्यन अशेष । नमो० ।६।

उनके पट परस्पर में हुए, गिए क्षमाकल्यान ।
सवेगी सुविहित गीतारय, करते स्व पर कल्यान । नमी०।
यथा नाम गुर्णों के धारक, गर्णनायक अभिराम ।
श्रीसुलसागर सद्गुरु स्वामी, दुिल्यों के विसराम । नमी०। हिया तपस्वी छगनसागरगुरु, हर्रे तिलोक का दाह। नमी०। हिया तपस्वी छगनसागरगुरु, हर्रे तिलोक का दाह। नमी०। हिया तपस्वी छगनसागरगुरु, हर्रे तिलोक के दातार।
यह गर्णनायक श्रीहरिसागर, समकित के दातार।
नवनिधिसुरतरु वाँछित पूररण, आतम के हितकार। नमो०। है।
युक् पुर्सेवा अमृत मेवा, दे आनद अपार।
युक् गुर्ण कीर्तन दिल्य कवीन्टका है शाँतिभाग्दार। नमो०। है।

। ज्ञान का खजाना गहूंली । ३।

। राग—गजल ।

पुरु जी ज्ञान का भारी, खजाना खूब खोले हैं।
नहीं है खुडने बाला, जिसे लेना हो ले लेब । टेर ।
व्यक्तिक इस जिन्टगानीमें, नहीं फिर हाथ खाने का।
अमोला माल से पूरा, जिसे लेना हो ले लेबे । १।
समय पाकर खगर भूनें, भवो भव दुख होने का।
विवास है इसीसे कि जिसे लेना हो ले लेबें। २।

हृदय भंडार में इसका, जरा भी जो गया हिस्सा। समजलो पार है बेड़ा, जिसे लेना हो ले लेवें । ३१ उभय भव में हमेशा से, चलन चलता इसीका है। समजमें आगया हो तो, जिसे लेना हो ले लेवें। १। इसे जल चौर अग्नि या किसी का भी न खतरा है। सदा आनन्द देता हैं. जिसे लेना हो ले लेवें। १। खजाने के निकट में ही, भरा है दिव्य सुखसागर। त्रिविध सन्ताप हरता है। जिसे लेना हो ले लेवें। ६। वही भगवान है जिसके हृद्यमें यह खजाना है। स्वयं भगवान होने को, जिसे लेना हो ले लेवें। ७। मुनिगरानाथ हरिसागर, गुरु हैं पूज्य उपकारी। दया ला दान करते हैं, जिसे लेना हो ले लेवें। = ! सुनो संसार भर में भी, न इससे सार है कोई। कवीन्द्रोंने इसे गाया, जिसे लेना हो ले लेवें। १

। सद् गुरु सेवा फल गहूंलो । ४।

। राग—मेरी गली आजारे खांवरिया मेरी गली झाजा धेनु चरा जा महिरा खिवा जा रे सांवरिया। सेवोगुरु परमं कृपाल भवियाँ, सेवो गुरु परम कृपाल भवियाँ गुरू कृषा थकी, जीव ग्रुगिति की वरे विजय वरमाल भिवयाँ। सेवां०।१। हृदय तिमिरभर, करें नाश गुरूवर, कार्टे मोह की जाल भिवयाँ। सेवां०।२। सद्गुरू सेवा, मीटा मेवा, देवें नित्य, रसाल भिवयाँ। सेवां।३। सद्गुरू शरणे, शुद्ध श्राचरणे, रहते जाय जजाल भिवयाँ। सेवां०।१। जनम मरण जावे, कीरति कवींन्ट गावे, सद्गुरू सेवां त्रिकाल भिवयाँ। धेवां। ५।

। सद्गुरु महिमा गहूंली । ५।

। राग—पैसा प्यारो रे कि मोहन गारो रे।

सिंखियाँ गावोरे कॉई गावो गुरुगुर्गमाल सिंखियाँ गावोरे ।टेर्। चडगित चहुटे वीचमें,कॉई लीव श्रनादिकाल । सिंखियाँ ।१। गुरुगमकोपाये विना, कॉई वहोत फिरावेहाल । सिंखियाँ ।२। रागद्दे प ठिगये जहाँकॉड रहें विद्याकर जाल । सिंखियाँ ।३। ल्ट्रेलियाधन मालको कॉड वना दिया कगाल । सिंखियाँ।४। मोह महा श्रन्नेरमें, कॉई भूला स्व पर विवेक ।सिंखियाँ ५।

परवश पामर जीवने, काँइ पाये दु:ख अनेक । सखियाँ ।६। शुभ पुरयोदय जीवके, काँइ श्राज मिलेगुरुराज । सखियाँ । ७। मारग दर्शक मोक्षके, काँड् सुव्रतिजन सिरताज। सखियाँ। न। त्रालस विकथा छोड़के, काँइ होकर उद्यमवन्त । सखियाँ ।९। योग शुद्धिको धारके काँइ सेवो गुरू निर्श्वान्त । सिवयाँ ।१०। पसरे गुरुगुल मेघतें काँइ स्याद्वाद रस रेल । सिवयाँ ।११। त्राज उसी रसरेल से, काँइ पाप ताप दें ठेल । सखियाँ।१२। स्वारथमय संसार में, काँइ परमारथ का पन्थ। सिवयाँ।१३। सुखद सरल अव होगया, काँइ सेवत गुरुनिग्रन्थ । सिखयाँ ।१८। गुरुसुखसागर विश्वमें, काँइ हैं श्रीगुरु भगवान्। सिवयाँ।१५। श्रीहरिसागर पूज्यहैं, काँइ गरानायक गुरावान । सिवयाँ ।१६। गुरुद्शेन कीर्तन कियाँ, काँइ आतम निर्मलहोय । सिखयाँ ।१७। हैंकवीन्द्रसद्गुरुविना,काँइ अशरणशरणनकोय। सिवयाँ ।१८।

। सद्गुरु उपदेश महिमा गहूंली । ६।

। राग-लाल ख्याल देख तेरे अचरिज मन आवे।

भैरवी

सद्गुरु उपदेश देत भविक बोध पावें। भविक बोध पावें सखी। भविक बोध पावें। टेर मटकत भव बनमें जीव-जनम मर्ग्ण पावे । मुगुरु चर्गा श्ररण श्रजर श्रमरता निपावें । सद्० ।१।

लोइ भी सुवर्ण वर्ण पारस सङ्ग आवे। शिष्य सुगुरु होय यदि सुगुरु सङ्ग जावे । सद्० ।२।

सुपुरु क्रोध-मान-माया लोभ को भगावे । रविभकाश तिमिर नाश शीघ्र ज्यों दिखावे । सट्० ।३। अभिन सचन घन घटा को पवन उथें नशावे ।

सुग्र कुमति कुगति कुटिलता को त्यों इटावे । सट्०।८।

सिन्धु लहर बढ़त् है ज्यों चन्द्र उदय भावे ।

सुगुरु सुमति सुगति सरलता को त्यों बढ़ावे । सट्० १५। सुपुरु निकट विकट पन्थ सहज ही लखावे ।

विनय विमल इत्त वर् विवेक प्रकट पावे । सट्० ।६। सुगुरु पाप ताप दुख दूर ही गमावे।

सुरवनिधि भगवान रूप आप होड जावे। सट्० । श

परम भरम धीर वीर मावना सुभाव ! सुगुरु पूज्य इरि इमारे गुरा कवीन्द्र गावे । सङ्० ।=।

। सद्गुरु गुण माहात्म्य गहूंली । ७।

राग—ढूंढ फिरा जग सारा जग सारा जग सारा सिंधिंगिरि सानी ना मिला।

पुर्य उदय गुरु पाया गुरु पाया गुरु पाया करो वंदना। टेर। सद्गुरु वन्दन पाप निकन्दन, विद्युध हृदय सुखदायक नन्दन। भवदव ताप विनाशन चन्दन, वन्दत सखी सुखपाया सुखपाया-सुख पाया करो वन्दना। १।

सद्गुरु सेवा करण में हेवा; धरे होय सेवक नित नर देवा। पावे आतम अनुभव मेवा, हरे सखी मोह माया-मोह माया-मोह माया करो वन्दना। २।

सद्गुरु चरणा अशरणशरणा, पवलकरम अरिदलकामरणा। आधि व्याधि उपाधि इरणा, सेवो सखी हो अमाया हो अमाया

हो अमाया करो वन्दना। ३।

सद्गुरु सङ्गे परम उमंगे, सहज समाधि सरस तरंगे। रहत सदा ही भाव निसंगे, सखी निज रूप निपाया निपाया-

निपाया करो वन्दना। १।

सद्गुरु साचा निर्मल वाचा मोहराय को मारे तमाचा। पुद्गल बन्धन होवत काचा सखी वहिरात्म हठाया हठाया-

हटाया करो बन्दना। ५।

-सद्गुरु पूर्ण ब्रह्मको कारण, श्रन्तर श्रातम माव प्रचारण । भवोदिष दु खको दूर निवारण, करे सखीशान्त सुझाया सुझाया-सुझाया करो वन्दना । ६ । सद्गुरुसुखोदिषमगवानुऋदिसिद्धि,थरेदिगपग२श्रनहद्दनवनिषि

भन्यजनोंकोबोधतशिवविधि, वही सखी मेरे मनभाया मनभाया मनभाया करो वन्दना । ७ । सद् गुरु ब्रानी सेवो प्रानी ख्रातम निर्मल कारण मानी । है हिर पूज्य सुगुरु गुरुखानी, दिव्यकवीन्द्र गुरुगाया गुरुगाया गुरुगाया करो वन्दना । ८ ।

। सद्गुरु प्रार्थना गहूंली । ८।

। राग—मेरे राम अयोध्या बुलालो मुक्ते।

जुरु ज्ञानकी वातसुनायाकरें, हमें समिकत रत्न का दान करें।टेर।

मूल विन साखा कहीं होती हुई देखी नहीं,
सम्यक्तव विन त्यों धर्म कर्रणी भी सफल होती नहीं।

कहीं है न वही हम कैसे करें। गु० ।।१।

माया लगी चारों तरफ कुछ गम हमें पडती नहीं,
मिन्यात्व की छाया हृटयसे यों छिटकतीही नहीं,

उसे केंसे कही श्रव द्र करें। गु०।२।

साधन नहीं तैयार साधक साध्य कैसे पा सकें। नैया न है नाबीक तब क्या सिन्धु जलको तिर सकें।

कैसे साध्य कहो अब प्राप्त करें ।गुट्रा क्रोड़ों भवोंमें भी नहीं हम पूर्ण बदला दे सकें। उपकार होगा आपका वर्णन न जिसका होसके।

ऐसे त्राप गुरु उपकार करें। गु० 121 कामधेनु कलपटुम चिन्तामणि भी तुच्छ है, पालिया गर एक जो सम्यक्तव ऋच्छा स्वच्छ है।

यही आप उपाय बताया करें। गु०। १। संसार सागर पतित जन उद्धारकर्ता आप हैं, सच्चे हितैषी हैं हमारे आप ही माँ बाप हैं।

कभी सोच न अब इम दिलमें धरें ।गु०।६। दु:खहत्ती भाप सुखसागर गुरु भगवान हैं , ज्ञान गुरा भरादार सच्चे आप इम अज्ञान हैं।

निज रूप हमें भी वनाया करें। गु०।७।
तत्त्व की श्रद्धा सुमिथ्या हस्ति भेदन में हिर्
सागरों से भी बड़ी होवे हृदय में विस्तरी।
तब दिव्य कवीन्द्र सुकीर्ति करें। गु०।८।

। कर्त्तव्य सदुपदेश गहूं ली । ६।

। राग-जिन धर्म का डका मालममें बजवा दिया वीर जिनेश्वरने।

दु लहर सुलकर भविजीवोंको शुभवोध दिया श्रीगुरुवरने। क्राचार विचार सुधार करो। शुभ वोध दिया श्रीग्ररुवरने ।टेर अज्ञान दशामें पड़े हुए जब आतम भान ही भूले थे। तव उदय दिशा के सूर्यरूप, शुभ बोध दिया श्रीग्ररूवर ने ।१।-न्यायोपार्जित धनसे अपना, निर्वाह करो जो सुख चाहो। धन माप्ति विधन जय हो वैसा, श्भवोध दिया श्रीगुरुवरने 121 न्यायी जीवन जीने वाले ही, उभय लोक सुखमय होते। अन्याय कभी न करो ऐसा, शुभ वोध दिया श्रीग्रह्वरने ।३। द्रव्य-क्षेत्र श्रोर काल भाव की, नाड़ी कँसे चलती है। उसका श्रति शुद्ध सरलतासे शुभ वोध दिया श्रीगुरुवरने । ११। अपदर्श बनो आदर्श वनो कर्त्तव्य करो अपने जो हों। निज शुद्धि सगठन सिद्ध करो शुभ वोध दिया श्रीगुरुवरने । १४। हैजैन धर्मका मृल तत्त्व जो स्याट्वाद उसको जानो। कितना विशाल है वह देखों, शुभ वोध दिया श्रीग्रब्दरने ।६। श्रीसुखसागर भगवान् गुरु, इरिसागर सम गुराधाम वनो ।

यों दिव्य कवीन्होंसे वर्णित शुभ वोध दिया श्रीग्रच्वर ने । श्र

। कर्त्तव्योपदेश गहं ली ।१०।

राग—शुद्ध सुन्दर श्रति मनोहर वोल बन्देमातरम्।

्कर्त्तव्यका उपदेश पाकर[,] भूलना नहीं चाहिये। कर्चाव्य ही आदर्श हैं आदर्श जीवन के लिये। टेर् परमातमा की पुराय पूजा नित्य करनी चाहिये। बिगड़ी हुई निज आतमा को शुद्ध करने केलिये। कर्तव्य ०११। ्ज्ञानदाता सद्गुरुसे बोध, पाना चाहिये। निज अविद्या अन्धता को, दूर करनेके लिये। कर्त्तव्य०।२। माणियोंमें भेम - अनुकम्पा बढ़ानी चाहिये। विश्ववल्लभ और निर्भय रूप होने के लिये। कर्चव्यव ।३। याकर सुषात्रोंको सदा शुभदान देना चाहिये। चाहतेके साथ बाँछित वस्तु पानेके लिये । कर्त्तव्य । ४। सद्गुगी जनके गुगों में, राग रखना चाहिये। देव दुर्लभ दिव्य सद्गुरा. रत्न पानेके लिये। कर्त्तव्य । धा ञ्रागम श्रवरा चिंतन मननमें, लो लगानी चाहिये। हितत्रहित क्या तत्व हैं, उनको समभानेके लिये। कर्चाव्य ाद्। हैं मनुज भव दृक्षके फल, ये सभी प्रत्यक्षमें। . शान्त सुखसागर जनित, अमृत परम रस के लिये।कर्त्तव्या७।

उपदेश हरिसागर गुर के, नित्य धारण कीजिये [निज यशोगाया कवीन्ट्रॉसे गवानेके लिये । कर्राञ्य० ।=१:

। सदुर्म वृक्षरक्षणोपायापदेश गहुं ली । ११।

। राग-- शुद्ध सुन्दर स्रति मनोहर बोल वन्देमातरम् ।

श्रीग्रर सत्संद्ग में सद् ज्ञान त्रमृत पीजियें। विश्व पावन धर्म के उपदेश को सुन लीजिये ।देर। धर्मरूपी द्रक्ष के ग्रुम, बीज बोनेके लिये। श्राह्म भूमिका विशोभन खूब ही कर दीजियें। श्रीग्रुकट ।१। जो विरोधी तस्व हैं, उन की परीक्षाको करें। धीर हो सदबीर से फिर, नाश उनका कीजियें। श्रीग्रहः।२। हैं कलूपित भावरूपी कीट काटें पेड़ को। शान्ति पूर्वक यस्न करके, दूर उनको कीजिये । श्रीग्ररु०।३। निञ्चल बना निज इन्द्रियों को नित्य रक्षा के लिये। दिव्य तर दढ़ चित्त हत्ति: वार्ड फैला दीजिये । श्रीगुरू०।८। सींचकर निर्मल दया जल द्रव्य भावें सर्वथा। यों यथोचित धर्म के वर, टेस लहरा दीजिय । श्रीग्रुकः।।।। नर मुरामुरनाथ मुख सब, जानली ये फूल हैं। मोत सुख फलरूप ईं, पत्यक्षकर चल लीजियें। श्रीगुरुवाहा अक्षय अनन्त अपार सुख, सागर प्रकट होगा सही। यों स्वयं भगवान हो करके, परम सुख लीजिये। श्रीखरू०।७। पूज्य हरिसागर गुरु, सुकवीन्द्र कीर्तित हैं मिले। धर्म का सच्चा तरीका प्राप्त उनसे कीजियें। श्रीगुरु०।∽।

। ऋहिंसा धर्मीपदेश गहूंली । १२।

। राग-म्हांसुं मूंढे वोल ।

परम थरम का मूल ऋहिंसा तत्व हृदय में धारो रे। श्रीग्ररु दें उपदेश भविकजन श्राप विचारो रे। कि दिल में धारो रे। टेर।

पाँचों इन्द्रिय मन-वच-काया, बल हैं तीन प्रकारा रे। श्वासोच्छ्वास आयु मिल दशधा, प्राण प्रचारा रे। कि आप विचारों रे। १।

प्राणों को धारे सो प्राणी, जीव सभी कहलावे रे। प्राण वियोग हुए से होता, मृत्यु नजरों आवेरे। कि आप विचारो रे। २।

जैसे अनुभव सुख दु:ख का, निज आतम को होवे रे। वैसे ही सब प्राणीमात्र को, सुख दु:ख होवेरे।

कि आप विचारों रे। ३।

जीवन सब ही को प्यारा है, है सब सुख के कामी रे। ३। जीवन इर दु खड़े मत होना, दर्गति गामी रे। कि आप विचारों रे । १। अपना जन्म मरण नहीं चाहें, वे पर को क्यों देवे रे। कार्य नहीं चाहें उसके क्यों, कारण सेवेरे। कि ग्राप विचारो रे । ५ किसी जीव को किसी तराँ से, कष्ट कभी नहीं देना रे। द्रव्य भाव से नित्य श्रहिंसा, हो ज्यों रहेना रे । कि द्याप विचारो रे। ६। कर्मोदय से दु ली जीव को, देख हृदय भर लाना रे। **उन दु लों को दूर इटाने, शक्ति लगाना रे**। कि आप विचारों रे । ७। अन्धा लुला और अपाहिज, भूखा प्यासा होवे रे । उसकी रक्षा करना इसमें, द्रव्य अहिंसा होवे रे। कि श्राप विचारो रे। ८। त्रातम धर्म से पतित जीव को उस ही में थिरकरना रे ।

भाव श्रिहिंसा यही इसे कर, भव जल तिरना रे। कि आप विचारोरे। ९। श्रीहरिसागर गुरु गंरानायक, भाव दया मगटावें रे।

श्राहारसागर ग्रह गंखानायक, भाव दया मगटाव र । दिव्य कवीन्द्र उन्हीं की निर्मल कीरति गावें रे ।

कि आप विचारो रे। १०।

ा। निज घर पर घर स्वरूप गहुं ली। १३।

हाग-जिन धर्मका इंका आलम्में बजवा दिया वीर जिनेश्वरले

परघरके मेमको त्यागोसभी, अपने घरका कुछ ख्याल करो। गुरुराज सुनाते हैं बोध यही, सुख से अपने घरमें विचरो टिरा पर घरमें जो नर जाते हैं वे पराधीन वन जाते हैं। पद पद उकराये जाते हैं, ऐसे दुःखको कैसे विसरो। पर०।१ह पर घरमें जो सुख दीख रहा, है अन्त उसी में दु:ख महा। ज्ञानी पुरुषोंने भेदलहाः कुछ ज्ञान दिष्टसे देखा करो ।पर०२। जाना नरकों में फिर है भला, पर परघर तो है बूरी बला। जाने पर जाय नहीं निकला, बस पड़े वहाँपर सड़ा करो ।पर नाइ। परवर धोखे की टही है, शाँताप भरी वह भड़ी है। त्राखीर में तो वह मिट्टी है, वहाँ जा क्यों जीवन ख्वार करो ह पर घरमें भूत विलास करें. त्रानं वालों का हास करें। बेहोस बना सर्वस्व हरें। उनसे अब पींड छुडायां करो। पर ०।५१ निज घरमें है स्वाधीनपना, जिसमें सचा सुख है इतना। कि है जिससे सुर सुख सुपनात्र्यव उससुखका उपयोग करो ह निज घरमें ही सुखसागर हैं, निज घरमें ही भगवान रहें। निज घरको बात को कौन कहें, तातें उसके पथ को पकरो। उ

इरिसागर गुरू गणनायकके, उपटेश मदीप को लेकरके। मारगटेखो श्रपनेघरके,तव दिव्यक्वीन्ट सुकीर्ति करो ।पर०।⊏।

। सद्गुरु वन्दन गहूंली । १८ ।

राग-पया कहँ कथन में मेरा नाथ क्या कहँ कथनमें मेरा।

भाव से वन्दन मेरा नाय, भाव से वन्दन मेरा।

काटो भव दु ख फेरा नाय, भावसे वन्दन मेरा। टेर ।

तारक सद्गुरु चरण कमलमें, कीना झाज बसेरा।

मानत हू अब मेने पाया, भववन अन्तिम छेरा नाय।भाव०।१।
संसार कारागारमें छाया, मोह निविद्ध अंथेरा।
सद्गुरु सूरजआज मिले तब,भकटा पुरुष सवेरा नाय।भाव०।२।
काल अनादि आतम धनका. लूटे करम लूटेरा।
सवलसुभटगुरु चरनश्रस्ततें,भिटगया आज वितेरा नाय।भाव०३।
अन्यकारका वाच्य गुपट है, स्पद बाच्य उनेरा।
अन्यक्रारु नाया का प्याला, ग्रेवप अर्थ सहेरा नाय। भावसे०।४।
सद्गुरु बोध सुधा का प्याला, ग्रेवन होत अर्थरा।
त्यव अन्यवींका होता है, अपने आप निवेरा नाय।मावसे०।४।

कपट रहित जो हो रहता है, सुखद सुगुरू पद चेरा।
सुखसागर भगवान रहे नह, शिवरमणीसे घेरा नाथ।भाव०।६।
श्रीहरिपूज्य सुगुरू सेवामें, नित नित वन्दन मेरा।
थन्य कवीन्द्र वही नर हैं जो, होत गुरुका पूजेरा नाथ। भाव०७।

। सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणिमोक्षमार्गः गहूं ली । १५।

। राग-माढ।

है जिनवाणी, गुरु गुणखाणीः निरूपम सुख दातार ।

हे भविप्राणि? निजहितजानी, देखो तत्त्व विचार । टेर । सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण हैं, जिन वाणी का सार । उनका ही उपदेश करें गुरु, सुन होना भव पार । हैजिन० ।१। ये तीनों ही रत्न अमोलक, पूरण सत्य स्वरूप । पाता है सो हो जाता है, त्रिभुवन का भी भूप । हैजिन० ।२। वाहिरके जितने हैं भूषण, दूषण से भरपूर । रिव शिश से भी बढ़कर ये तो, प्रकटाते हैं नूर । हैजिन०।३। नरभवमें निज वीरज योगे, प्रकटावे सो धन्य । परमातम पद पा सुख भोगे, सहज समाधि जन्य । हैजिन०।8

सम्बन्दर्शन झान-चरण की, पूरण प्राप्ति वही । है संसार असार उसी में केबल सार सही । हैजिन०।५। इन्ही तीनों के धारक ही हैं सुखसागर लयलीन । वे ही हैं भगवान उन्हींके, मुक्तिरमा स्वाधीन । हैजिन०।६। श्रीहरिसागर गुरू गणनायक, के उपदेश यही । सन्मय जीवन में हैं कीरति, टिच्य कवीन्ट कही । हैजिन० ।९।

। समकित लक्षण गहं ली । १६।

राग-हो प्रीतम जी पीत की रीति श्रनित्य तजी चित्र घारिये।

सुन हे बहेनी ? गुरुवर दें उपदेश हृदय में धारना।

उससे जगमें फिर अपना उत्तम जीवन निर्धारना। देर।

नव तत्त्वों की पहिचान करो उनमें निश्चल श्रद्धान घरो।

समिकत गुणदाणे में विचरो। सुन हे दहेनी ? ।१।

समिकत ही सार सदा जानो। उससे ही धर्म किया टानो।

ता विन मत धर्म सफल मानो। सुन हे वहेनी ? ।२।

समिकित कें लक्षण पाँच कहे। अपराधी पर भी न कोध वहे।

उपशम समता में नित्य रहे। मन हे वहेनी? ।३।

नर सुर सुख हैं सब दु:खभरे, अक्षयसुख मोक्षकी चाह करे। संवेग यही दिल वीच धरे । सुन हे वहेनी ? संसार को कारावास लखें। तासों निर्वेद सदेव रखे। धर्मामृत रस को नित्य चखे। सुन हे बहंनी? लख दीन दीन दुखिये मानी, उनकी अनुकम्पा दिल ठानी। करे रक्षा नित निज हित जानी। सुन हे बहेनी? जिन कथित वचन सबही सच हैं, मिथ्या मतिका जहाँ लेश न हैं। श्रास्तिकतामें यों रंग रहे। सुन हे वहेनी? समिकत सुखसागर का तद है, पहोंचे लय होते सङ्गट है। भगवान वहाँ मिलते भट हैं। सुन हे बहेनी? गरुहरिसागर गणनायक हैं, सुलकर शुभ समिकत दायक हैं। देते हैं बोध जो लायक हैं। सुन दे बहेनी ? जिनने गुरु सुरतर पाये हैं। समकित वाँ छित फल खाये हैं। वे ही कवीन्द्र मन भाये हैं। सुन हे बहेनी ?

। समकित दूषण परिहारोपदेशगहूं ली।

राग-मेरे राम अयोध्या बुलालो मुक्ते। निर्मल समकित को ऐसे तूं धार सखी, पंच दृषण दूर निवार सखो। टेर। वीतरागी के विमल सिद्धान्त में शहा कभी । क्रना नहीं वस मानना हम श्रज्ञ क्या जानें सभी।

गुरुगम को तू पाके विचार सखी। निर्मल० ।१। सूक्ष्म अर्थों से भरे सिद्धान्त है संसार में।

फिर शक्ति इम फैसे करें उनके सभी निर्धार में। उनसं जोड़ तूं बुद्धि के तार सखी । निर्मल० ।२।

ज्ञानावरणी कर्म का क्षय हो तभी पत्यक्ष मे ।

तट्रप होगा ज्ञान भी वस सर्वया उस पक्षमें।

तातें तु न चपलता धार सखी। निर्मल० ।३। कों आ क्रमत की वाँछना है राग द्वेप जहाँ भरे। हो रागद्वेपाधीन ही स सारमें जनमे मरे।

ऐसी कॉझा को चित्त से टार सखी। निर्मल । १। है विचिकित्सा यही की धर्मफल है कि नहीं।

इसको हृदयसे दूर कर मुन धर्मफल है ही सही। वार्ते धर्म में भाव सुधार साबी। निर्माल०।॥।

मिथ्यात्विगुण की भी मर्गसा भूलकर करनी नहीं। है विप मिला जो द्ध वह क्या प्राण को इरता नहीं। तातें ऐसी मगसा विसार सखी। निर्माल । ६। मिथ्यात्व जन की सङ्गति को दूर ही से त्यागना।
जिससे लगे सम्यत्तव की शुभ वासना को दागना।
निज सङ्गति शुद्ध स्वीकार सखी। निर्मल०। धा
पूर्णतां को पालिया उनके लिये अपवाद है।
वे जो करें करते रहां वे सर्वथा आजाद हैं।
हममें न हैं वसा विचार सखी। निर्मल०। पा
अति दिच्य सुखसागर महा भगवान हरिसागर गुरु।
उपदेश देते हैं यही इसमें प्रमादं मा कुरु।
यही साधु कवीन्द्रों का सार सखी। निर्मल०। ६।

। श्रावक धर्मोपदेश गहूंली । १८।

राग—महावीर तुम्हारी मोहन मूरित देखी मन ललचाय०।

हपदेशें सुगुरुधर्म उभय भव भय का नाश करे। टेर।
दुर्गित पढतोंको रक्षे, सुगति को फिर जो वक्षे।
वह धर्म कहा निष्पक्षे, जिसमें दो हैं भेद परे। उपदेशें०।१।
यहि-यितयों ने सुलकारा, वह देश सरव से धारा।
होते यहस्थ के आचारा, जिनका वर्णन यहाँ करें। उपदेशें०।२।
जीवादिक तत्त्व विचारे, निज श्रद्धा को निर्धारे।
नित वर्ते मार्गानुसारे, समितत दर्शन शुद्ध धरे। उपदेशें०।३।

त्रस निरापराधी पाणी, की सेच्छा न करे हानी।
निज शक्तिको पहिचानी, स्थूल ऋहिंसक भाव घरे। उपदेशें ०।१।
इत्यादिक बारह ब्रतको, पालें मरें सुकृत को।
सेवें श्रमणोंके पदको, पंचम गुणठाणे विचरें। उपदेशें ०,५।
उत्कृष्ट भावके धारी, वारम देवलोक विद्वारी।
क्रमसे होवे शिव संचारी, श्रात्मिक श्रक्षय सौरूयवरें। उपदेशें ० ६।
सुखसागर श्रीभगवाना, गुरू हिरसागर गुणवाना।
उपदेश करें चितलाना, वर्णन दिव्य कवीन्द्र करें। उपदेशें ० ७।

। वारह व्रतकी गहूंली । १९ ।

। राग—धनासिरी ।

बारह ब्रस ये जान सलीरी ? बारह ब्रस ये जान ।
धारत होत कल्यान । सलीरी । टेर ।
जान बुभकर विन अपराधे माणातिपात न ठान । सली०।
कन्या गी-क्षे ब्रादि विषयमें, त्याग अलीक विधान । सली०।१।
राजनियमसे दिखिदा है वह, छोड़ अदत्ताटान । सली० ।
इह परलोक विदम्बन हेतु सब मैंथुनसे तान । सली० ।२।

निज धन-धान्यादि परिग्रहका, कर लेना परिमाण । सखी । दशों दिशामें जाने त्रानेके नियममें रख ध्यान । सखी० ।३। भोगोपभोग प्रमाण में निशदिन, हो रहना सावधान। सखी०। पापोपदेश मचार न करना, अनर्थ दंड प्रधान । सखी० । ।। दो घडि राग-द्वेष विना करो, सामायिक सन्धान । सखी० । दिग्-व्रत छूटें नियमित करना, देशावकाशिक मान ।सखी०।६। पर्व तिथिमें पौषध पुष्टि, उपवास पूर्व क जान । सखी० । अतिथि संविभाग वही जो, दियासुपात्र में दान। सखी०। ६। पंचागुवृत हैं तीन गुगावृत, चडशीक्षा पहिचान । सखी० । सब मिल होते श्रावक के ये, वारह वृत सुमहान् ।सखी०।७। समिकत पूर्वक आराधन कर, पहुंचे अमर विमान । सावीः। क्रमसे सुखसागर को पाकर, होते हैं भगवान । सखी० ।=। श्रीहरिसागर गुरु गगानायक, देवें स्वृत दान। दिव्य कवीन्द्र वृताराधकके करते कीरति गान । सावी० ।९।

। गुरुविनय गहूंली । २० ।

। राग—ज्ञानादिक गुण संपदारे तुज अनन्त अपार। सुनावें हे सखी ? हितशीक्षा श्रीगुरुराज।

त्रातम परिगात जो करें सखी पावें श्रविचलराज ।टेरा मूल कहा जिनधर्मका सखी, विनय जिनेश्वर देव । मकटें विनयी जीवको सखी, सद्गुणगण स्वयमेव । सुनाः -श्रभ्यन्तर तप भेद है साली, विनय सदा सालकार। कर्म सघन वन दाहमें सखी, अद्भुत रूप तुपार । सुनावें । रा नामाटिक निक्षेपसे सखी, विनयके चार प्रकार। भाव विनय के धारते सखी,होत हैं वैद्या पार । सुनावें० ।३। उत्तराध्ययन समुत्रमें सखी, मथमाव्ययन विशेष। विनय स्वरूप विचारते सखी न रहे लेश कलेश। सुनावें । १८। मन वच काया-शुद्धि से सर्वीः गुरु त्राज्ञा त्रानुकूल । त्राचरणा को धारते सखी, शूल वने सव फूल। सुनावें ।।।। गुरु ईर्प्या निन्दा करे साबी, वर्त्तावे उतपात । रेंसे ग्रविनयी श्रातमा सखी, खावें जम की लात । सुनावें०।६ जो है विनयी आतमा सखी रहते निर्भिमान । सुखसागरभगवान वे सखी,त्रिभुवन तिलक समान । सुनावें०७।

श्रीहरिपूच्य सुगृह मिले सखी, करना विनय श्रपार । दिव्यकवीन्द्र सभी करें सखी। निर्मल कीर्ति पचार। सनावें ०।८।

। तामस – समतापदेश गहुंली ।२१।

राग-वन हो ऋपभदेव भगवान युगला धर्म निवारन वाले।

सुनलो सुनलो गुरुउपढेशः जो निज घोर श्रविद्या टाले । टेरा

हैं उलट वरण दु:खखान, दें सुलट वरण शिवदान । तामस समताको लो मान,दोनोँ के हैं पन्थ निराले।सुनलो०१। हैं उलट सुलट दो व्यक्ति, गुरा बाधक साधक शक्ति। क्रमसे बन्धन और मुक्ति-के हैं ये देने वाले। सुनलो०।२। हैं उलट सुलट दो चालें, सुगति, कुगति से बचालें। हैं भारी भेद विचालें, माने सारे मतवाले । सुनलो० ।३। हैं उलट छलट दो चकरः लेते जो इनसे टकर। वे लख चौरासी चकर के खाने न खाने वाले। सुनलो । १९। हैं उलटवरण गुणवाती तामस है मोह का नाती। होता है नाना भाँती, त्यागें शिव जाने वाले । सुनलो०।५। जिन सुलट वरण को जाना, वे सुखसागर भगवाना। पावें निज द्रव्य खजाना, हरि पूज्य विशद गुरावाले । सन। ६। हैं सुलट वरण जयकारी, समता सुव्रतिजन प्यारी। करें कीर्ति कवीन्द्र अपारी, पर पार न पाने वाले। सुनलो । ७

। भाव स्तव गहूं लीं ।२२।

राग – मारु – कहो सब जय २ श्री महावीर

नमोरे नमो श्रीगुरु गुगा भगडार ॥ टेर ॥

भाव स्तव के पावन पदका, श्रारथ दिखावन हार ।

वीतरागगुगा बोध विधायक, निजगुगा निर्मलकार । नमोरे०।१।

श्रमण ऐरवर्यादिक पूरणः त्रिभुवन जनश्राधार। श्रीमहाबीर जिनेरवर स्वामी, श्रादिकर श्रवतार । नमोरे० ।२। तीर्यद्वर सहसम्बुदातमा, पुरुपोत्तम सुलकार । पुरुषसिंह भवर पुराहरीकः गधहस्ति गुराधार । नमीरे० ।३। लोकोत्तमवर लोकनाथ नित, योग क्षेम करतार । ययावस्थित वस्तु मवाश्क, लोक मदीपाकार । नमोरे० १८१ भावि भाव विभासन समस्य, क्वल द्वान प्रचार । लाक मधोतक भयहर अभयद, चक्षु अतदातार । नमोरे० । ११० सम्यग्दर्शन ज्ञान चरणमयः मारग देशकसार। शरणागत मतिपालक सुरक्कर,त्र्रद्भुत रक्षाकार । नमोरे० ।६। श्रुत चारित्र वरम उपदेशक वरम सार्थि मनुहार। गुण सम्पन्न विशेषण वाले. वीर ममु नयकार। नमोरे० 10, श्रीजिनगुरा निज आतम के गुरा, दोनों है इकसार। पर निभाव परिरातिके काररा, अन्तर पड़ा अपार । नमोरे०।=!-परपरिस्मितितज निजपरिस्मितिभज गुरूउपदेशविचार ।

काल लब्धि परिपाक हुए से होवेगा निस्तार ! नमोरे०।९। श्री भगवती जी सूत्र विषयमें, यों भाषें गराधार । श्रीहरि पूच्य ग्रुट पठि बोर्जे होत कवीन्द्रोद्धार । नमोरे०।१०।

पर्याप्ति स्वरूप गहुं लो । २३।

। राग -- आशावरी । अवधू सो जोगी गुरु मेरा।

भावें वन्दों वार इजारी श्रीगुरुवर उपकारी रे भावें । टेर । त्त्रातम तत्व परम हितकारीः सत्य स्वरूप दिखाया कर्मजनित पर्याय विचारे, ऋद्भुत वोध निपायारे। भावें० ।१। निज आहार शरीरादिक की, पर्याप्ति छह पावे। कर्मोदय से कैसे आतम, श्रीगुरुराज बतावेरे। भावें । २। निज उत्पत्ति स्थानक पहुँचा, जीव लहे आहारा। ताको खल रस रूप करे वह, पर्यापित आहारारे। भावें०।३। किस शक्ति से रसकी परिणति, सात धातु वन जावे। ञ्चारीर पर्याप्ति कहते जासों. जीव श्रारीर वनावे रे। भावें 181 जातें होता इन्द्रिय रूपे, धातुन का परिगाम। इन्द्रिय पर्यापति ये जानो, करण पर्याप्ति तमामरे । भावें । १। श्वासोछ्वास तथा भाषा मन, योग्य सुपुद्गल दलले। तत्त दृंपें परिगात जासों, छोड़ें त्रालम्बन लोरे। भावें।६। उस उस नामें हैं पर्याप्ति, जीव शक्तियाँ जानों। · খুरीकर पर्यापति मरते, लब्धि पर्यापता मानोरे । भावें ০। । चड एकेन्द्रिय विकल श्रसनी-के पर्यापति पंच। छह सन्नी पचेन्द्रियके यों, हैं पर्यापति मपंचरे । भावें ० ।८।

समय मात्र ख्राहार पर्याप्ति, ख्रन्तर मृहरत पंच । निजनिज शक्ति पूर्या करते जगमें नर तिर्यचरे । भावें ० १९० परेसे खातम निज गुग्गमें जो सारी शक्ति लगावे । श्रीहरिष्ठ्य विशद गुग्ग उनके, दिच्यकबीन्ट्र सुगावेरे । भावें ०।१००

श्रीमहावीर समवसरन गहूंली । २४।

जिल्ले की देशी।

त्रिभुवन तारक वीरजी जग उपकारीरे जयकारी जिनराज।
त्रिभुवन तारक वीरजी, जग उपकारीरे सुजाए। देर।
चउट सहस शुघ साधु महाव्रत धारीरे हितकारी महाराज।
संयम साधक साभवी छतिस हजारीरे सुजाए। १।
विद्यमान जिन शासन उज्वलकारीरे अनगारी सिरताज।
प्रभु आज्ञा के पालक उप्र विहारीरे सुजाए। २।
गामानुगाम विचरता पावनकारीरे अवहारी शिवसाज।
रायगृह नगर सुगुएसिल चैत्यमभारीरे सुजाए। ३।
विरचे समवसरन योजन विस्तारी रे सुतकारी सुरराज।
चडुमुखतोरए दृढ धजा मनुहारी रे सुजाए। १।
रतनसिहासन पूरव दिशि,मुखकारीरे गुएधारी जिनराज।
वारह परिषद् को उपदेशे भारीरे सुजाए। १।

चतुरङ्गी निज सेना को सिर्णगारीरे नहिं पारी नरराज।
श्रेणिक वन्दे सिवनय भाव सुधारी रे सुजार्ण। ६।
करे मुक्ताफल साथियो मङ्गलाचारीरे गुणधारी घनगाज।
गावें चिलगादिक पटराणी सुन्दरी सारीरे सुजार्ण। ७।
समिकत सुन्नतको लहे शिवकारीरे नरनारी समाज।
श्रातमगुर्ण उजवालें वोध विचारी रे सुजार्ण। =।
जीनवाणी भवसागरमें निस्तारीरे दुखहारी वरपाज।
पाकर परिपद् निकसी दिशि श्रनुसारीरे सुजार्ण। ९।
श्रीहरिपूज्य प्रभुतर्णी वलिहारीरे जयकारी महाराज।
विवय कवीन्द्रे कीरित नित्य उचारीरे सुजार्ण। १०।

ं श्रीगीतमस्वामीकी गहुं ली । २५।

सीता माता की गोदीमें हनुमत डारी मूंदडी इस रागमें। वन्दो बीर विभु के शिष्य प्रथम गए। धार कोरे। चडिंघ संघ सुनायक इन्द्र भूति ऋए।गार को। टेर।

> जिनका गोतंमगोत्र पवित्र । जगमें जो आदर्श चरित्र ॥

धारें सात हाथ श्रीर उच्च विस्तार को रे। वन्दो । १।

जिनका समचौरस संठान । प्रस्य लक्ष्या परम मधान ॥ धारे अद्भूतरूप अनुप मवर आकारको रे । वन्दो० । रा जिनका वज्र ऋषभ नाराच । संहनन ग्रस्थि सप निकाच ॥ . न लहें कोई भी सुरनर जिनके वल पार को रे। वन्दो०।३। जिनका वर्ण सुवर्ण समान। दर्शन दे श्रानन्द महान 🛭 करते विश्व हृदयमें अनहृद्ध मेम प्रचार को रे । वन्दो । १९। जिनका उग्र तपोमय जीवन । करते शासन की परभावन ॥ भव भय इरते धरते प्रतिदिन शुद्धाचार को रे । बन्दो०।५। प्रात काल में जिनका नाम । जपते इरता विघ्न तमाम ॥ करते मंगलकारी नित्य महोदय सार को रे। बन्दो० ।६। श्री इरिप्ज्य गुरु गुणवान। गौतम स्वामी का शुभध्यान ॥ करते पांचे दिव्य कवीन्द्र भवोदिय पारकोरे । वन्दो० १७।

श्री गौतम स्वामी जी की गहुं ली। २६।

रावणने शक्ति मारी हरके तान तान तान इस रागमें।

सेवो प्रेम धरीने गौतम गुरु गराधार धार धार । जानों तीन भ्वनमें सद्गुरु सेवा मार सार सार। टेसः जो करम गहन वन भारी. के दहन समर्थनकारी। देदीप्यमान तपधारी, वंदो वार वार वार । सेवो० । १। तप तपकर कर्म तपावे, निज आतम को यों तावे। पापों के ऋछूत बनावे, जो इकतार तार तार । सेवो० । २ । श्राशंसा दोष पहारी, भीरुजन को भयकारी। सर्वोच कोटि संचारी, तप श्रोधार धार धार । सेवो० । ३ । जो परीपहादिक दुश्मन, नाश्न में हैं निर्द्यमन। श्वातम निरपेक्षी वर्तन, घोराचार चार चार ! सेवो० । ४। जो घोर गुणेँ को धारें, तप घोर सदा विस्तारें। श्रितिघोर ब्रह्म ब्रत सारें, भोग विसार सार सार । सेवो०।ध संस्कार विद्दीन शरीरा, संक्षिप्त विपुल गम्भीरा। तेजो लेश्या गुरा हीराः अपरम्पार पार पार । सेवो० (६): चउदस पूरवी चङज्ञानी, सर्वाक्षर योग विधानी। अव्याक्षर पूरन वार्गा, है श्रीकार कार कार । सेवो० ।७।

नाति निकटे श्रति दूरे, सविनय श्रुभ व्यान सन्हे । मभ्रुवीर चरण चित धूरे, नित श्रनगार गार गार । सेवो०।=। उत्कडुक्शशनके धारी, नियमित दृष्टि विस्तारी । सम्यग्ध्यान सुकोठ विद्वारी, तज ससार सार सार ।सेवो०।९। श्री हरि पूज्य गुरू गोतम हें, सेवत हरते श्रवतम है । फिर तो ढिच्य कवीन्द्र सुगम हें, वेड़ा पार पार पार सेवो०।१०।

श्रीगौतम स्वामि जी की गहुंली । २०।

अय दिल प्रभु की याद में गाफिल ना हो जरा इस राग में।

श्रीगीतम तत्त्व विचारणामें भाव यों घरा। देर।
भट्टत श्रद्धा है जिन्हों को, तत्त्वों क मित।
फिरभी द्यावस्थिक भाव में, सशय ता है भरा।श्रीगीतम०।१।
"चलमाणे चलिये" सूत्र में जो श्रय्य है रहा।
उसमें हैं काल विचार विपयिक सशय दिलजरा।श्रीगीतम०।२।
कौतुहल भी जिनको हुआ हे कैसे यों सही।
श्रीवीर मश्च निज ज्ञान सेती निञ्चय है करा। श्रीगीतम०।३।
पहिले न थी श्रद्धा वही उत्पन्न है हुई।
उत्पन्न श्रद्धा भाव जिनके हैं हुया हरा। श्रीगीतम०। १।

जात श्रद्धा में तथा उत्पन्न श्रद्धा में।
है कार्य कारण रूप भारी भेद तो भरा। श्रीगों०। ।
श्रद्धा शंसय कोतुहल वाले गोतम स्वामी ने।
श्रीवीर प्रभुके पासमें जा प्रश्न यों करा। श्रीगों०। ६।
श्रीहरि पूज्य प्रभु जग जीवन पावन वाणी से।
सुकवीन्द्र वंदित गौतम स्वामी शंसय को हरा। श्रीगों०। ।

सद्गुरु वेषि प्याला गहूंली । २८।

। दांडिया रस के राग में।

पीलों ने प्रेम धरी रे सुभिवयाँ, पीलों ने प्रेम धरी।
सद्गुरु बोध सुधा का प्याला, पीलोंने प्रेम धरी।। टेर।
अजर अमर पद पावो नियमसे, जानो न जुंड जरो।
रे सुभिवयाँ पीलोंने।१।
लोक अलोक के विविध स्वरूप को, देखो प्रत्यक्ष करी।
रे सुभिवयाँ पीलोंने।२।
हदय नयन निज निर्मल होवे, घोराँधकार टरी।

रे सुभवियाँ पीलोने०। ३।

संसार सागर दु खों का त्राकर, जल्दी से जाओ तरी। रे सुभवियाँ पी लोन० 181

त्रष्ट महा भय मेववटा वह, जावे सभी निखरी। ं , रे सुभवियाँ पी लोने०।४।

अनहद आतम शॉित समर्पे, नाप यमाप हरी । रे सुभवियाँ पी लोने० ।६।

"शुभस्य शीव्र" वोध न भूलो, गतकाल न त्रावे फरी। रे सुभवियाँ पी लोने०।श

सुख भगवान इरि पूच्य गुरू सेवो, वास्त्री कवीन्द्र उचरी। रे सुभवियाँ पी लोने० ।८।

प्राणी प्रवाध गहूंली।२६।

। राग-मादः।

भाणी सुनले गुरु उपदेश, पाणी सुनले गुरु उपदेश। ⁷ सुग्रुरु वाणी सुधाका लेश,हरे काल कराल कलेश। पाणी०।टेरा काम-क्रोथ-मट-लोभ-मान-हर्षे य्र तर शत्रु छह। विग्रह करके निग्रह करते पटके नीचो तह। कव तू चेतेगा य्या कह। पाणी०।१। काम कहा वह जो होता है, विषयों से सम्बन्ध। स्याग अरे तुं शीघ्र उसे श्रव। क्यों करता प्रतिवन्ध। फोकट होता है तुं श्रन्ध। पाणी०।२।

श्रन्तर श्रातम सद्गुगादाहक, श्रद्भुत श्राग्न रूप। निज पर को हानिकर होता, ह्वो दे भव कूप। ऐसा है रे क्रोध स्वरूप। प्रागी०।३।

श्रीरों के गुगाको क्यों निन्दे ईर्ष्या से सानन्द। मदगद सन्निपात घिरा तूं क्यों करता आक्रन्द।

कब तूं त्यागेगो यह फंद। माणी० १८। कुग्रह रूप परिग्रह उसका योग्य सदा है त्याग। राग धरे तूं त्याग करे नहीं, लोभ समुद्र अथाग।

अब तो चेत अरे महा भाग पाणी०। १। जात्यादिक जो आठ प्रकारे, निज गुर्गा रोधक दुष्ट। भान महागिरि है उसपे चढ़, क्यों सहता है कष्ट।

गिरकर आखीर होगा नष्ट माणी ०। ६। भव वद्ध क साधन कों साधे, विषय कषाय अनेक। उनहीं में तूं हर्ष मनावे, भूला आत्म विवेक।

ऐसी क्या है तेरी टेक। मागी । ७।

मुख सागर भगवान् सदा हिर-सागर गुण गम्भीर । चरम्म शरम को दिव्य करीन्द्रो, धारो होकर धीर । जिससे पहुचीमे भवतीर । माणी० । टा

सद्गुरु संगति गहूं लो। ३०।

। पथोडा सन्देशों के जे मागवोर ने० इस राग में ।

सङ्गुरू स गे समिकिन रह सुहावना ।

श्रद्ध लगे तव राग द्वेप होय नाश जो ।

श्रमुपम श्रातम ज्योति प्रकटे श्री कटे

माया वहली रहे न पर की श्राश जो । स०१।
काल श्रमादि पुट्गल सगी श्रातमा

गुरु गम विन तज निज घर परघर भटकाजी । जनम सम्माने दरमह हान को भोगाना

जनम मर्गाके दुस्सह दुख को भोगता

विविध गतिमें वेप धरा नित नटका जो। स०२ ।

यापेंदेश यारजकुल श्री जिन धर्म की माप्ति हुई है अन कर्तव्य हमारे जो।

श्रीसद्गुरु श्राधीन हुए सब सीख़त्ते

माया शल्य विहीन वृत्तिसे धारें जो। स०३।

स्थूल-त्र्रणुत्रत-गुण त्रत शीक्षा त्रत धरें

क्रमसे जिनकी वार्ह सँक्या होवे जो।

सुव्रत धारें विधि पूर्वक गुरु पास में

देशविरति पंचम गुगाठाणे रहेवेंजो । स०४ ।

परमगुरु प्रभु वीतराग महावीर के उपासकाँग में वारह व्रत के धारी जो।

निरतिचार जीवन प्रतिमा धारी हुए

श्रानंदादिक श्रावक जाउं विलहारी जो । स०५।

सद्गुरु तारें तिरें स्वय भवसिंधु से करें करावें सदा क्रिया निष्णाप जो।

सम्यक् तत्व निरूपक साधु धर्मके लीन रहें नित हरें जीव संताप जो । सक्ह

लीन रहें नित हरें जीव संताप जो। स०६। सुखसागर भगवान गुरु हरि पूज्य हैं

परम महोदय पंथ के सारथ वाह जो।

पक्षपात विरहित हितकारक लोक के

दिव्य क्रवीन्द्र सुवर्शित वचनं प्रवाह जो ।स०७१

चौमासो व्याख्यान गहुं ली। ३१।

। राग-पनिहारी ।

महलमय दिन आजका मुन साहेली,

श्रारम्भ वर्षाकाल साहेली ।

दर्शन श्रीगुरु मेच के सुन साहेली. ३-५५५ करके हों सुग हाल साहेली। टेर !

पाप ताप ऋतु नाश से सुन साहेली,

पंता शानि समीर साहेनी।

हुष्ट रजो राशि मिटी सुन साहेली, पाकर बोग सुनीर साहेली। १।

पाकर वार्य सुनार् साहला । धर्मलना लहरा गई सन साहेली.

भविजन हृदयोयान साहेली।

भववनयाके जीवका सुन साहेली, ई श्राराम महान साहेली।२।

हं श्राताम महान साहली।२। मोह महोद्रशिशोष को यन साहेली.

पाया श्राप ही त्राप साहेनी।

सामायिक मगा नदी गुन माहेली.

हरं मभी मनाप साहेनी। ३।

श्रावश्यक श्रातम क्रिया सुन साहेली, खेती सुन्दर रूप साहेली। भव्य जीव खेडुत रचें सुन साहेली, मकटे धान्य अनूप साहेली 181 पौषध पौंधे धर्म के सुन साहेली, देते हैं फल फ़ुल साहेली। नर-सुर-शिव-सुख रस भरे सुन साहेली, सहज समाधि मूल साहेली। ध। श्रम् पूजा की नाव से सुन साहेली, सुलसागर के वीच साहेली। लीला में लयलीन हो सुन साहेली, हरें करम मल कीच साहेली। ६।

श्रीहरि सागर सद्गुरु सुन साहेली, हैं शुभ मेघ समान साहेली। दिन्यकवीन्द्र सुकीर्ति की सुन साहेली,

यों नित छेडें तान साहेली । ७।

चौमासी व्याख्यान गहूंलो । ३२ ।

। राग--नाग जीकी। मल्हार।

चौमासी हित देशनारे वारी, धारत चित्त-धारत चित्त उल्लास। भव भय भीरू भव्यके रे, अब भय भीरु भव्य के रे वारी। तोहत है भव-तोडत है भव पास । चौमासी हित देशनारे । १ । यातम गुणघाती सभीरे वारी, वहुसावद्य-बहुसावद्य व्यापार् । करना ही नहीं चाहियेरे । करना ही नहीं चाहियरे वारी, जीव दया टील-जीव दया टील धार । चौमासी हित देशनारे । २ । फागुन आदिक मास में रे वारी, तिल वान्यादिक-तिल घान्यादिक सार । स ग्रहना नहीं चाहिये रे । संग्रहना नहीं चाहिये रे वारी। जीवोत्पत्ति-जीवोत्पत्ति विचार । चौमासी हित देशनारे । ३ । *ज्य*मस्य वाबीसीं तथा रे वारी । श्रनन्त काय

श्रनन्त काय वत्तीस । खाना कभी नहीं चाहियेरे ।

मानी विसवा वीस । चौमासी हित देशनारे । 81

साना कभी नहीं चाहियरे वारी। मानो विसवा-

श्चन जाने फल को सदा रे वारी। पत्र शाक विन-पत्र शाक विन शोध। विगड़े आटा घी विपेरे। बिगड़े आटा घी विपेरे वारी। माँस दोप अवि-

माँस दोष ऋविरोध। चौमासी हित देशनारे। ५ हिच्छारोधन भावसे रे वारी, वहुविध तप वि-बहुविध तप विस्तार। भवदवताप निवारगोरे,

भवद्वताप निवारणोरे वारी । शक्ति सहित चित-

शक्ति सहित चितधार । चौमासी हित देशनारे ।६। श्रीहरि पूज्य कृपा थकीरे वारी, समकित निर्मल-समकित निर्मल सार । दिव्य कवीन्द्र लहें वहीरे ।

दिव्य कवीन्द्र लहें वहीरे वारी। अक्षय सुख भं-

अक्षय सुख भएडार । चौमासी हित देशनारे । ७ ।

सामायिक गहुंली । ३३।

। अय दिल प्रभु की याद में गाफिल ना हो जरा। इस तर्ज में। सामायिक धारी श्रावक साधु तुल्य हो रहें। टेर ! हैं निन्दक वन्दक एक से श्रीर मान तथा अपमान। तस थावर प्राणी मात्रमें समभाव जो रहें। सामायिक०।१। ससार जहेरी हुक्के ब्राक्र जो दो है। उन राग हे पको तोड के ज्ञानादिक लाभ लहे। सामायिक शार सामायिक समयिक ब्रादि है सामायिक ब्राट मकार। उनको धारे वे जीव ब्रयने दुख को दहें। सामायिक । ३।

भाव अहिंसक सत्यवाणी पाप रहिन आचार । थोडे अक्समें कमे नाशक बाप को वहे सामायिक० १ । तीन पढ़ों में ज्याप्त ऐसी द्वादशागी है । सुनकर अनुशीनन सबया अजगामर भाव गहे। सामायिक०५०

जो बन्तु मात्र को जानके, हेयोंका त्याग करे ।
सुबत सापन में परीपहीं को प्रेम से सहें । सामायिक ।६।
हिर पूच्य पशु आदेश से सामायिक नित्य करें ।
वसदिच्य कवीन्द्र यशोगाया उनकीहो सत्य कहे । सामायिक ०१%।

। चौमासो व्याख्यान गहुंलो । ३४ ।

। राग झाशावरो मिद्ध चक्र पद वन्दो ।

चाँमासी चित धार रे भविका, धर्म विशेष विचार । टेर ।

च्चट् आवश्यक औषध अनुपम, उभय काल लो धार । जिनवर वर धनवःतरी भाषित,भव गद टालन हार ।रे भवि०१ ऋपुनर् बंधकयोगसे कीनाः आवश्यक विस्तार। बहुत पाप रजको हरता है, दे सुख अपरम्पार । रे भवि०।२। लज त्राहार शरीर की सेवा, गृह व्यापार कुशील। पर्वदिवस में पौषध करके, मोह भूत दो खील। रे भवि०।३। द्रव्य भाव शुचिं प्रति दिन करना, जिन पद पूजा सार। ञ्चातम पूज्यपणो तव प्रकटे, पूजक को निर्धार । रे भवि०।८। इन्द्रिय मनका संयम करके, तज दो विषय विकार। ब्रह्मचर्य ब्राद्श वही है, ब्रक्षय गुगा ब्राधार । रे भवि०।४। अभयदान सुपात्र तथैव च, मुक्ति विधायक मूल । अनुकंपादिक दान जगतमें, नरसुर सुख अनुकून । रे भवि०।६। इच्छारोधन तप को धारो, बाह्य अभ्यन्तर भाव। -कर्म निकाचितभी जरी जावे,लव्धि सिद्धि गुगा दाव । रे भवि०७ हिनन्दा दुर्गति की महतारी, कर निज दिल से दूर। निज दुष्कृत की निन्दा करना, मकटे आतम नूर। रे भवि०।= श्रीहरि पूज्य जिनेश्वरं शासन, दुर्लभ पाया आज। बिद्वय कवीन्द्र सुकीर्तितसेवो, पावो अविचल राज। रे भवि।९।

चौमासो व्यारयान गहूंली । ३५ ।

। राग गुजरानी रासडा पद्धति ।

पानो भाव धरीने जड़ये ग्राव भेटवारे० इस तर्ज में । सन्वियाँ भावे सद गुरु वोध हृदय में पारनारे। पाया श्रनुपम श्रवसर चौमासे का श्राज। सर्वे उर्म विशेष प्रकार मविक समाज। श्रानी श्रपनी करते कत दुष्कृत आलोचनारे । टेर । (मार्जा) श्रावक को ससारमें, लगते है ग्रितचार । याचारों को सेवते, शन चीवीस प्रकार। मिन्या दुष्कुाः उनका देते योग सुधारनारे । सखि०१। (सालो) समक्तित पूर्वक है कहे, श्रावक के बत वार । श्रममाद्र परिग्राम से. तज करके श्रतिचार । भारापन से ऋम से खर शिव मुख विस्नारनारे । सीव०२ । (सार्वा) श्रानम गुरा शोधक सदा, पुष्ट निमित्त ममान । शुद्देव गुरू असी की, सेवा करी सुजान ! सना मेरा दर्गी हैं। श्रनुषम, स्वीकारनारे । सवि०३ । ^{(मार्चो}) बीतराग के मार्ग में, नहीं राग श्रस्टेप ।

तातें उपशम भाव में, वर्तन करो हमेश।।

है यह पावन जैन धरम का मर्म विचारनारें। सिवि० १।

(साखी) श्रीहरिपूज्य जिनेश के, सुन ब्रादेश विधान।

विधि पूर्वक पालन करो, पावो पद कल्यान।

तातें दिच्य कवीन्द्र करें कीरित निर्धारना रे। सिवि० ५।

अषाहिका व्याख्यान गहूंली । ३७।

हो जिनराज म्हारी नैया पार लगावो महाराज इस राग में।

है धन भाग सेवो पर्व पज्रसन आये सुखकार। टेर।

(साखी) अष्ट करम वारक सही, परम धरम गुगाधाम,
अक्षय सुख दातार हैं, भव्य जीव विसराम।।
हो सुर राज जावे द्वीप नंदीश्वर भक्ति चित्तधार। है धन०१।

(साखी) शाश्वत जिन मन्दिर वहाँ वावनगिरि पर सार।
प्रति मंदिर जिन विंव है शत चडवीस उदार।
हो आठ दिवस करते उत्सव जिन पूजा हितकार। हैधन०२।

(साखी) ऐसे ही इस पर्व में, श्रावक तज परमाद।
उत्सव पूर्वक आठ दिन, धर्म करो आवाद।।

हो गुन्ताज करते धर्मबोध सुन पालो निजाचार । हैंपन०।३।
(साली) सामायिक जिन पूजना, करते तथा विधान ।
आश्रव और कपाय को, रोको दुरमन मान ।
हो नित देना टान अभय बहुमय मय जीवों को अपार हिंप०१।
(साली) श्रीहरिसागर सट्गुन, टें ट्टान्त रसाल ।
उपटेशे करते रहो, वरते महल बार ॥
हो निर्भय वोले दिव्य कवीन्द्र, जयकार । है धन । ।।

अप्राहिका व्याख्यान गहुंली। ३७।

कुष जाएं मारामाके मनकी, एनो मन की तनकी छगन की जो । कुष जाएं मारामाके मन की इस राग में।

सर्ली पर्व पज्रसन सेवो, एतो सेव्यॉ पावत मेवोरे ।सर्ली०टेर। आश्रव कारण सव त्यागोः घन मोह निंढ से जागोरे । सर्ली० कह मिष्ट वचन वा धनडे, आरभ तजाओ मनदेरे ।सर्ली०।१। नेता से वदि छुडाना, जीवा को अमारि पलानारे । सर्ली०।

मत भेदि छेदि कहा वाणी, कहो वाणी हितगुणखाणीरे ।स ा पर्धन पत्थर सम मानो, विष रूप विषय सव जानोरे । सली ग वृष्णा अति दूर निवारोः संतोप सदा चित धारोरे । सखी ०३ 🗔 मीति को क्रोध हटावे, सुविनय को मान घटावेरे। सखी**ः**। मैत्री को माया मारे सब गुण को लोभ संहाररे। सखी०।श समता संयम सुल धारो, दुध्यीन हृद्य से टारो रे। सली०। लख खंडी कनक नितदानी, ना इक सामायिक सानीरे ।सखी० श्रातमगुण पुष्टि विधायि, करो पौपध पुराय कमाई रे ।सर्खी पौषध सामर्थ्य विहीना, द्रव्य पूजा करो प्रवीणारे । सखी०।६। त्रिक शुदि तीन त्रवस्था, जाना पूजा की व्यवस्थारे। सखीव जिन दर्शन दुरित विनाशे, वन्दन मनवाँछित वासेरे।सखी०६। जिन पूजन श्रीसव पूरे, जिन सुरतरु चिन्ता चूरेरे । सखीं। जिन पडिमाजिनसमजा**णो,उपकार विशेष प्रमाणोरे ।साबी०**=। जिन पडिमा दर्शन सारा, बोधत है आई कुमारारे ।सखी०। पिंडमा-श्रुत पंचम त्रारे,भविजन के काज सुधारेरे । सखी०९ सुखसागर श्रीभगवाना, गणनायक गुरु गुणवानारे । सखी० इरिपूज्य नमो हितकारी, कीरति सुकवीन्द्र उचारीरे सखी०१०

अप्राहिका व्याख्यान गहूंली । ३८।

नर देख तू निण्चे जोड़ जगमें नहीं तेरा कोई इस राग में। भवि पुरायोदय फल पावे, महापवे पज्रसन ध्यावे । टेर । बल धर्म विषय विस्तारो, परमाद हृदयसे टारो । समिकत सुत्रत गुण वारो, भव भवके दु ख शमावे। भवि०१। इल देश यनारजवासी, श्रीयार्टकुमार विलासी। सयम हिन शक्ति विकासी. जिनमतिमाके परभावे।भवि०।२। भागाविल कर्म खपावे. सयम में चित्त लगावे। रागादिक भाव गमावे, करुणारस रेल चलावे । भवि०।३। निज अनुचर्गण प्रतिवोधे, तापसहिंसा प्रतिशोवे । गोशालक मत प्रतिरोधे पश्च वीरशरण शिव जावे । भवि०।८। जिनमतिमा दर्शन भावे, श्रातम गुरा निर्मल दावे । परमातम भाव निपावे, निज त्रागम ग्रन्य वतावे। भवि०।५। भागान्त कष्ट त्राने पर भी तपो नियम त्राति दढतर । छोड़ो नहीं निश्चल होकर, घन घाति कर्म हठावे। भवि । ६। ज्यों देवी परीक्षा होती, त्यों बढती है निन ज्योति । शिव रमणी सम्रुख होती, है जगमें कीरति छावे। भवि०।७। श्रीसूर्ययशा भूपाला, निज नियम ऋषहित पाला । सुरगावे गुण मणि माला, दृष्टॉतग्ररू दिखलावे । भवि०।८। श्रीहरिसागर गुरुराया, उपदेशें वोध सवाया । है दिव्य कवीन्द्रने गाया, धारे गतिचार मिटावे । भविवार।

दीवाली व्याख्यान प्रारंभ गहूंली । ३६।

केशरिया थांस्ं प्रीति लगीरे साचा भावस्ं इस राग में।

धन श्राज सुनेंगे पर्व दीवाली श्रधिकार को। टेर । उज्जयिनीपति संप्रति पूछे, आर्य सुहस्ती स्वामी। स्वामी जानें त्राप मुभी क्या, गुरु कहें तूं नामीरे। धन०१। विशेष पूछे श्रुत उपयोगे, कहें गुरु तव जाना । मोदक हितमुनिवेश धार मर, हुआ तूं चप गुणवानारे धन । २। वंदन कर संप्रति तव वोले गुरु प्रताप है भारी। मुभ गरीव को राज दिया यह, जाउं तुम विलहारी रे । धन ाइ। राज को लीजें उऋण कीजें राजा विनति उचारे। तन मूर्डा भी नाहें क्या लें, गुरुयों कह कर वारेरे। धन० १। पुरुष मिली सम्पत्ति है यह, तातें पुरुष वढावो । धर्म करो नित पर्वदिनों में, त्रातमशक्ति जगावोरे । धन०५। सम्मित पूछे लौकिक लोको -त्तर वर पर्व दिवाली । मकटा कबसे पूज्य सुनावो, सुलकर महिमाशालीरे धन०६।

बपृत वाणी ग्ररू उपदेशें. वीर चरित विस्तारी ।

व्यवन गर्भहरस्य जन्मादिक, छह कल्यास्यक भारीरे । धन०।७। मोक्ष गमन कल्यास्यक समये, भकटा पर्व दीवाली । उसही का ऋधिकार सुनो ऋक, ऋवधारो इकगरी रे । धन०८। श्रीहरि पूज्य गुरू गसा नायक, चरस्य शरस्य चित यारी । मिवजन पार्वे ऋतुपम कीरति, दिच्य कवीन्द्र उचारीरे ।धन०।९।

दीवालो व्याख्यान पुग्यपाल स्वप्नफल गहूंली । १० ।

मेखरे उतारो राजा भरयगी इस राग में।

भन समय निज जान के कर्म खपावन हेतु। मोल महर देवें देशना, बीर विश्व जग केतु। बीर वचन हित कर नमों। टेर।

एवपाल राजा वहाँ वन्द्रन विधि निरमार ।

प्र भयद्भर स्वप्न का, भावि फल पूछे सार । वीर० १।

पि जीरखशाल में, गज रहते व्यासक्त ।

पुजेन्द्ररशाला थकी, रहते पूर्ण विरक्त । वीर० २।

पुजे आरे प्राखियां, गृहस्यात्रमधारी ।

^{ावम्}य यरमें रत रहें, दीला ले न ग्रनारी। वीर० ३।

वन्दर देखा चपलता, करता हुआ अपार । होंगे ज्ञानादर विना, साधु सिथिलाचार । वीर० ८। क्षीर दक्ष कराटक चिरा देखा स्वप्न मभार। यगरागी श्रावक चिरे, कएटक लिंगी विचार । वीर० ११ काग कुचेष्ठा कर रहा, उसका फल मुनि मानी। शुक्र स्वगरा तज कुगरामें, जाव में हित जानी । वीर० दा सिंह मरा पर भय करे ऐसे जिनमत होगा । कमल उकरडी पर उगा, धर्म नीच कुल योगा । वीर०७। बीज वोये ऊपर खेत में, देंगे कुपात्र में दान। कनक कलश मलसे भरा₁ सुव्रत पूजा न मान । वीर०⊏। हरि पूज्य प्रभु से सुना, दुखमय भावी काल । पंचमहाव्रत धारी हो। शिव जावें पुरायपाल । वीर्०९। धन्य दिवस धन्य वे घडी, परतिख मभु उपदेश। दिव्य कवीन्द्र सुनकर भवी, त्यागें राग रुद्देष । वीर १०१



दीवाली व्याख्यान चन्द्रगुप्त स्वप्नफल गहूंली। ११।

। सल् ए। की तर्ज ।

युगमधान श्रुतकेवलीरे, भट्टवाहू गर्गा धार सलूगा । पाटनीपुर समोसरेरे, वहु साधु परिवार सलूखा । १। चलगुपन राजा वहाँ रे, श्रावक धर्म सुजागा मलूगा। काणिक नृप सम श्रीगुरुरे, वन्डेकर वहुमान सलुणा । २। दृष्ट चतुर्देश स्वप्न थेरे, पौपध पिछलीरात सल्रूणा । इनके फल पूछे कहें रे, गुरु निर्मल अवदात सल्ला । ३। मुर वरू शाला ट्रट्तेरे, टीक्षा नहीं ले भूप सल्एा। । मृषं यकालमें याथमारे, केवल ज्ञान विल्पू सलूणा । १ । चन्द्रला शत बिटसेरे, धर्म में पंथ श्रनेक सलूणा । भूगें को देखा नाचतेरे, कुमनि उच्छद्वत डेक सल्एण। १ । नाना सॉप वारह फणारे, वारह वर्ष दुकाल सलूणा। ^{ते}देव विमान श्राकर गिरारे[,] नहीं जघादिक चाल सलुणा ।६। े रेचरोली भूमि पद्मसेरे, धर्म विशास कुल धार सलूणा। ^{पनुत्रा} चमका विश्ववैरे, मिथ्यामन सनकार सलूणा ¹⁹। स्वे सरसे धर्म की रे. कल्याग्यक थल हागा सल्ग्या। ^{रनक वाल} कुत्ता भलेरे[,] लक्ष्मी नीच मधान सल्गा। ¹⁵।

बन्दर हाथीपे चढारे, दुर्जन नित्य विशोक । सल्णा । सागर मर्यादा तजेरे, नीति राजा लोक । सल्णा । ९ । जंगी रथ वछड़े जुते रे, संयम लेवें बाल सल्णा । ज्योति हीन सुरत्नसेरे, साधु करें कुचाल । सल्णा । १० । नृप वालक वेलों चढारे, क्षत्रिय कुमत सुलीन । सल्णा । गज बालक लड़ते लखेरे, त्यों मुनि मेम विहीन ।सल्णा ।११ गुरु मुख से यों जानकेरे, भावि भयङ्कर रूप । सल्णा । श्रमशनकर स्वर्गे गयारे, चन्द्रगुप्त सुभूप । सल्णा । १२ । श्रीहर्र पूज्य जिनेश के रे, शासन का विस्तार । सल्णा । उदय समय होगा सहीरे, दिच्य कवीन्द्र विचार । सल्णा ।१३

दोवाली व्याख्यान भाविकाल स्वरूप गहूं ली 18२1

। गुजराती रासडा पद्धति।

दुखमय पंचम काल कराल सरूप विचार कारे।
पूछें प्रश्न प्रभुसे सविनय गौतम स्वाम ।
भाषें अविसंवादी वीर प्रभु गुणधाम।
सुनकर पालन करना सुख कर धर्माचारकारे। टेर।

(साखी) तीन वर्ष महिने अधिक, उपर साहा ब्राट । मम निवर्णानःतरे, होगा पचम ठाठ । वह भी होगा निश्चय वरप इक्षीस हजार कारे। दु० १। (साखी) होंगे पचम कालमें, मानव दुखिये दीन। भमि रस कससे रहित, धन सपत्ति हीन। होगा नाश सही सब सार बस्त विस्तार कारे। दु० २। (साखी) उदय समय के योगसे, युगपरधान महान । जनमेगे उनसे यहाँ, होंगे पुराय विधान। ऊडेगा फिर भाडा जैन धरम परचार का रै। दु० ३। (साखी) अन्ते होगा सर्वथा. जैन धर्म विच्छेद। छटा श्रारा भी लगे, दुखम दुखम बहुखेद। उसका होगा वह परिमाण, जो पंचम श्रार कारे। दृ० थ। (साखी) फिर होगी उत्सर्विणी, छह श्रारों की एक। उत्तरोत्तर होंगे सही, उत्तम भाव अनेक। वैसे चलता है यह काल चक्र संसार कारे। दु० ४। (साखी) पवचन काल सरूपका, यों करके प्रभु वीर । देव शर्म के वोध दित, गीतम को गुणवीर। भावीवश आदेश करें अन्यत्र विहारकारे। दु० ६। (साखी) इन्द्रासन कम्पा तभी, मुक्ति समय को जान ।

श्राकर बंदे इन्द्र भी, भावें श्रीभगवान ।।

गद गद कंटे वोले दुखसे वचन विचारकारे । दु० ७।
(साखी) भरमकग्रह से योग है, हस्तोत्तर का श्राज।

घिंड श्रायुप की दृद्धिकर, निष्फल करदो ताज।
भाषें वीर विषय यह जाने। नीई श्रिधिकार कारे। दु० ८।
(साखी) भरमकग्रह जब ऊतरे, उदय धर्म का जान।

होगा भारतवर्ष में, धीरज हिर मन ठान।

गावेगा तब गीत कवीन्द्र सुमंगला चार कारे। दु० ९।

दीवाली व्याख्यान गौतम विलाप गहूंली ।४३।

पॅथीडा सन्देशो केजे मारा वीरने इस तर्ज में।

वीतराग जिन पारंगत प्रभु वीर जी,

पावापुरमें मुक्ति सिधाये नाथ जो।

अपुनर्भव अजरामर पद्वी को लहें,

हुआ भरतमें चंचविध संघ अनाथ जो।

कल्याणक उत्सव हित आते देवके,

कोलाहल सुन जाना जिन निर्वाणजो।

वजाहत मूर्छित गौतम स्वामी हुए,

करते शोक विलाप अनेक विधान जो ।२। श्रन्त समय क्यों छोड चले हेनायजी, जानकार हो तोड़ा जग व्यवहार जो। गाँवम गाँतम कॉन कहेगा श्रव मुभेः कौन हरेगा शसय मम दुर्वार जो ।३। किसको जाकर अब में पूछ गा ममो ।। छायात्र्याज्ञ यहाँ पर घोर श्रंधारजो। अन्त समयमें दर किया क्या जानके. जाना क्या मॉगेगा केवल सार जो ! 181 अथवा माना होगा पीछे वाल ज्यों. यावेगा यह गाँतम मेरे साथ जो। श्रशरणशरण विरुद्ध धारक स्वामीकहो नया मुभी जो दर किया है नाय जो । भा देते तो क्या खोट लगे थी आपके त्राता तो क्याशिव हो जाता तग जो। भवल विरद्द ढावानल तनमनमें लगा जला रहा है काम हुआ वेटग जो ।६। द्या द्या ! भृता वीतराग वे वीर थे. रागी होकर भूला में निज भान जो । मेरा तेरा मोह मंत्र ससार में,

श्रंध वना देता है दु:ख श्रमान जो ।७।

मेरा तेरा भाव जगत जंजाल की,
छोड चढे गुएा ठाणे गीतम सामजो।

घाती कर्म हठाकर केवल ज्ञानसं
देखें परतिख लोकालोक तमाम जो।=।
दीवाली दिन वीर प्रभु निर्वाण श्रो,
गौतम स्वामी पाये केवल ज्ञान जो।

चडिवध संधमुलीन हुश्रा मुखसिंधुमें,
हिर कवीन्द्र जय वोलें एकीतान जो।९।

ज्ञान पंचमी व्याख्यान गहूंली। ४४।

। राग-धनासिरि।

द्वान सभी में सार, सुनोरी सखी ? ज्ञान सभी में सार । टेरा ज्ञानाराधन शिव सुखसाधन, पंचमी तिथि अवधार । सुनो०। पठन-पाठन-श्रवर्गा-मननतें, करना ज्ञान भचार । सुनो०१। ज्ञान महागुर्गा भकटे पावें, मन वाँछित विस्तार । सुनो०। मन-वच-काया ज्ञान विराधक, पावें दु:ख अपार । सुनो०२। मन से श्रून्य बने नहीं पावे, वस्तु विवेक लगार । सुनो०। मुलमें रोगी मूगा होवे, काया कोट विकार । मुनो०३। करें कराव ज्ञान विराधना, मूरख जो नर नार । मुनो०। पुत्र कलत्र कुटुम्ब सह नाग्ने, परभव धन मंदार । मुनो०।श आधि व्याधि और उपाधि, होवे अनेक नकार । मुनो०। हातें ज्ञान विराधन हत्ति, हेना ह्म निवार । मुनो०।। ज्ञानी ज्ञानाराधक जनकी, भक्ति करो निर्यार । मुनो०। ज्ञानी ज्ञानाराधक जनकी, मक्ति करो निर्यार । मुनो०। हानावरणी कर्म विनाने, रहे नहीं अधकार । मुनो । हा गुण मजरी-वरदत्त चरित को, लेना ख्व विचान । मुनो०। विराधन-आगधक भावे दुल्विये मुलिये धान । मुनो०। श्रीहरि पूज्य कथित विधियोगे ज्ञानाराजनकार । मुनो०। दिव्य कवीन्द्र मुकीर्तित होकर, पावे भवजन्त पार । मुनो०ना

कार्तिक पूर्शिमा व्याख्यान गहूंली । १५। चन्द्रा प्रभु जो से ध्यानरे मोरी लागी । १म तर्ज में।

कार्तिक पूनम दिन जयकारो, महिमा अपरपारने।
सत्ती चित्त अवधारो, चित्त अवधारो, कारज सागे
सेवो विमल गिरि सारते। सत्ती चित्त अवधारो। देगा
आदिनाय मशु पोनररे, द्राविद बारित्बील्लरे। सन्वीव।
दश कोडि ग्रनि सगर्मेरे, शोपे कर्म चित्विल्लरे। सन्वीव। १।

द्रव्य क्षेत्र ग्रह काल भाव ये, पाकरके श्रनुकूलरे । सखी० तीरथ राजा सेवो भावे. बालो कर्म समूल रे। सखी०।२। शक्ति अभावे तीरथ संमुखः वन्दन भक्ति विशेषरे ।सखी०। द्राविड-वारिखिल्लके जैसे, तोडो राग रु द्वे परे । सखी०३। सुव्रतधारी हो ब्रह्मचारी रथयात्रादि विधानरे । सखी०। समिकत निर्मल कार्गाठानो,निज निज शक्ति ममानरेसखी० १ शत्रुंजय गिरि जो भवि भेटे, शत्रुंजय होजाय रे। सली०। नहिं तो गर्भावासी है वह श्रीजिन ज्ञागम गायरे । सखी०५। अष्टोत्तरशत नाम विराजी विमलाचल गिरिराजरें। सखी । साधु कर्म खपाकर पाये, यहाँपर वर शिवराजरे । सखी०६। काती पूनम पर्व आराधो तीरथ भक्ति सुधाररे। सलो०। सद्गुरु बोध सुधारस पीके, सफल करो अवताररे।सखी०७। श्रीहरिपूच्य प्रभु आदोश्वर, जाप जपो तिहूं कालरे । सखी*०*। दिव्य कवीन्द्र सुकीर्तितपहेनो,नित्य विजय वरमालरे । साली० ⊏



मौन एकाद्शो पर्व व्याख्यान गहूंली ।४६।

सीता माता को गोदो में धुतुमत डारी मृंटडो। इस तर्ज में।

भवियाँ करके योग निरोध, विरोध मिटावनारे । टेर । सेवा मौन एकादशी पर्व , चित में होकर आप अगर्व । मक्टे आतम सिद्धि सर्वः परम सुख पावनारे । भवि० १1 पुट्टें सविनय कृष्णा नरेश, वन्दन करके नेमजिनेश। . संवर्षे दिन है कौन विशेष जिसे ब्राराधनारे । भवि० २। भाषे जिनवर जगटाधार, मिगसिर सुटि एकाढशी सार। जिसको महिमा का नहीं पार, ग्रुरारि वारनारे। भवि०३। उस दिन अरजिन दीक्षा जान, प्रकटा नामिजिन केवलङ्गान । मल्नी जनम-सुदीक्षा बान, कल्याणक भावनारे । भवि । श पॉच भरत-ऐरवतमें मान, ऐसे पच उल्याखक ठाख । गिनते होत पचास ममारा, नियम निर्धारनारे । भवि०५। कालत्रय से गिनते खास, होवे सी ऊपर पन्चास। लखते काल ध्रनन्त विलास, ध्रनना ज गावनारे । भवि०।६। यह दिन कल्याग्रक भग्डार, श्राराधो पावो भत्र पार । ''सुत्रत बैठणचरित सुनसार, करो पर भावनारे । भवि०।७ा खाणी संयम मीन सुधार, उपवासी होकर निर्धार।
जिनगुण माला अङ्गीकार, करम कट जावनारे । भविः।।
यों सुन नेमीश्वर उपदेश आराधें श्रीकृष्ण नरेंश।
आगे होंगे जो तीर्थेश, तथा तुम ध्यावनारे । भविः।।
श्रीहरिपूज्य परम गुरु वोध, सुनकर करना वचनिनरोध।
दिच्य कवीन्द्र सुकीरित धोध, करें विस्तारनारे । भविः १०।

पौषदशमी पर्व द्याख्यान गहूंली । १९७।

राग वनभारा--जगमें नहीं तेरा कोई नर देख तृं० इस तर्ज में।

नमो वीर जिनेश्वर राया, जिनने सत धर्म वताया। देर।

पश्च चम्पापुर में त्रावें, सुर समवसरण विरचावें।

तव वारह परीषद भावे, पश्च वाध सुनें सुखदाया। नमो०१।

चतुरङ्गी सेना संगे, उत्सवपूर्व क वहु रङ्गे।

कौरिणक नृप भक्ति उमंगे, जिन चरणे सीस नमाया। नमो०२

जग जीव दया दिल धारों, विपयों से इन्द्रिय वारों।

शुभ सत्य सदैव उचारों, यों धर्म रहस्य सुनाया। नमो०३।

पूछें तव गौतम स्वामी, चडनाणी जग हितकामी।

वदी पौष दशमका नामी, माहात्म्य कहो जिनराया। नमो०८।

जिन पारव जनम दिन जाना, कल्याणकमय परमाना ।

वर धर्म किया तब ठाना, यों बीर मग्रु फरमाया । नमो०धा श्राराधन कर शिव जावे , मृरदत्तः यथा जग गावे । श्रारांगे त्यों भवि भावे , जो सख चाहो मनभाया ।नमो०६। बदी पीप दशम श्राराधे, हरिपच्य परम पट साधे। मकटित गुण सिंधु ऋगार्ने, सुकवीन्ट्र भी पार न पाया । नमो०७I

मेरु त्रयोदशी व्याख्यान गहुं ली । १८ ।

। विमला चल वासी म्हारा व्हाला सेवक ने विसारी नहीं-रे विमारो नहीं। इस तर्ज में।

मुखदायक श्री जिन वाणी सुजन चित धारो महीरे विसारी नहीं। टेर ।

गाँगम गगु ३६ श्रादिक परिषद को उपदेशे वीर । मेर तेरमको श्वारागो महिमा गम्भीर। गुनन चित धारो सही रे निसारो नहीं । १ । माप्तरी तेरस दिन उत्तम, प्राटीन्वर ग्ररिहना ।

भवधारी सब कर्म विनाशी होगये शिव वधु बना। मुतन चित्र यारो मही रं निसांग नहीं ०।२।

ताते उस दिन का आगवन विशिष्ट के मी भार । दुर्गति हेतु जान हद्य में पन प्रमाद निवास। सुजन चिन धारों मिंहरे विसारों नहीं : 1 3] ची विदार अवास करो-भीत आदीरवर का ध्यात। रतन कनक रुपे या धीके मेर चहाया महान । सुनन चिन पारं। मही रे विसारं। नहीं। १ । समिवत न्युक्त श्लांन परम सुमानाम रन्तों की मान । ख्यम पृत्र के मेमे पहेंनी दृर टरें जीताल । सुजन चित्त धारो सहीरे विसारो नहीं । 🗓 । विकट कोटि संकट कट जावे, निविड कर्म हों नाश्। 'पींगल राष ! चरित व्यवधारी तोडी मीदनी पाश् । सुजनित्त धारो सहीरे विसारो नहीट । ६ । सुख सागर भगवान परम गुरु श्री इरि पृज्य जिनेश् । श्राज्ञा रंगी जीवन जनके. गुण गावें कवोन्द्र हमेश्। सुजन चित्त धारो सही रे विसारो नहीं । ७।







होलो निपेधोपदेश गहूंली। ४६। । जय बोलो रे पास जिनेगर की परमेशर की जय बोलो। इस तर्ज में-राग होली।

मत खेलो रे होली विचार करो, मत खेलो । टेर् । कुल-जाति-लज्जा-मर्यादा, होली में स्वाहा न करो । मत० । गाली गाना नीच जनों का, है लक्षण यह क्यों विसरी ।मत०१। र्मेला मृत्र जलादिक छॉटो, भगी से क्यों भेद धरो। मत०। माता-बहिन-बेटियाँ वैठी, उनका तो कुछ ख्याल करो ।मत०२। निज सततिको दुष्कर्मी की, शिक्षा देते क्यों न डरो। मत०। गडोंंगर चढते भी शोचो, किस कुलका व्यवहार करो।मत०३। पीकर भद्ग कही क्यों ऋपनी, मर्यादाका भंग करो। मत०। रग उडाकर निज का ही क्यों, रग जगत से लोप करो ।मत० १ 🕝 बन कर आर्य अनार्य सरीखे, कामों को कर क्यों विगरी। मत०। होली के दुष्कमों के भी, पायश्चित्त[,]सुनो सुधरो । मत० ५ । [,] पाप सरूपी है द्रव्य होली, कर क्यों दुर्गति जाय परो ।मत०। होली खेलन को जो चाहो, तो कमों की होली करो।मत०६। उ कर्मों की होली जो होली. कभी न जनमो नाही मरो ।मत०। सुल सागर भगवान जगतमें, श्रीहरि पूज्य हुए विचरो । मत००। होली का व्याख्यान सुनो फिर,मनमें चिंतन खुब करो (मतः। दिच्य कवीन्द्रोंसे फिर ऋपनी, यश कीरति विस्तार करो ।मत० ८।

चैत्री पूर्णिमा व्याख्यान गहूंली। ५०।

जान्ना नवाणु करिये विमलगिरि० इस तर्ज में।

चैत्री पुनम चित्त धारो रे भविका, चैत्री पुनम चित्तधारो। गुरु उपदेश विचारों रे भविका, चैत्री पुनम चित्त धारो। टेर। चैत्री पुनम दिन त्रादीश्वर के, गराधर पुराडरीक स्वामी। पाँच कोडि मुनिसंग विमलगिरि, होगये शिवगति गामीरे।भविश पुर्दिशकिंगिरि नाम श्रिद्धो, पाप गने पुर्दिशक । होकर के उपवासी सेवो, चैत्री पुनम दिन ठीक रे।भवि० २। पुरुडरीक गराधर-गिरि ध्यावो, त्रादीश्वर त्रारिहन्त द्रव्य भाव पूजा-देव वन्दन, करो करमदल श्रन्त रे ।भवि० ३। सिद्धाचल यदि जा नहीं सकते, निजयर नगर विशेष। गिरि संमुख पट बंधन करके, पर्व आराधो अशेष रे ।भवि० ४। रोग-शोक-दौर्भाग्य-वियोगा, भूत-मेत हट जावे। पर्वाराधन करते भविजन, चडगति छेदक भावे रे। भवि० ५। दुर्भागी कन्या के चित्त से, श्री गुरुवर समजावे। शुद्धालम्बन योगे पाणी अजरामर पद पावे रे। भवि० ६। सुख सागर भगवान परमगुरु, श्रीहरि पूच्य प्रभावी। शिवपुर द्वारको खोले ऐसी, देत कवीन्द्र सुचावी रे । भवि० ७।

अक्षयतृतीया व्याख्यान गहूंली । ५१ ।

केशरिया थांसु प्रीत लगी रे सच्चा भाव स् । इस तर्ज में ।

पत भूलो भवियाँ ! कुटिल गति है त्राठों कर्म की ।

कर नाश उन्हीं का, सिद्धि लही रे आतम धर्म की । टेर । बार महर तक पूरव भव में, छादी अर जिन जीव । र्झींकी वैलोंके मुख वॉधी, दी अन्तराय अतीवरे । मत० १। अदिश्वर भव दीक्षानतर, कर्मोदय फल भावे। ्वारमासतक शुद्ध गोचरी, य्रंशमात्रनहीं पावरे । मत० २। विचरत प्रभु इथणापुर त्र्राये, वह श्रायाँस कुमारा । निश्पिं स्वम लखे दिनमें फिर, प्रभु मुनिवेश विचारा रे।मत० ३। नाती समरण प्रकटा जाना, गांचरी विधि विस्तारा । मिण कचन-कन्याके दानी, लख लोकोंको वारा रे । मत० ८। सब लोकों को समभा कर के, ईल रस विहरावे रे। लुभ टानविधि फिर मकटावे, पचदिच्य सुर लावेरे ।मत > ५। 'बर्द्धमान श्रेयांस भाव श्रहः पात्र जिनेश्वर जानो । शुद्ध मान ईक्रस योगे, ग्रक्षय भाव वखानो रे । मत० ६। अक्षय तीन हुई उस दिन से, अक्षय पट गुण धारी। कमितिनाश हुआ तव जिनको मकटा गुण अविकारीरे ।मत०७। कर्मोदय को तोड़ा प्रश्च ने, धीरवीर हो कर के। वैसे ही सव कर्म विनाशो निज प्रमादको तजके रे। मत० हा श्रीहरि पूज्य परम गुरु शासन, वासित चित्त वनाश्रो। दिव्य कवीन्द्रोंसे फिर अपनी कीरति खूव गवाश्रोरे। मत० ९।

श्री कल्पसूत्र महिमा गहुं ली । ५२।

तर्ज-जिल्ला की।

कल्पसूत्र वर कल्प तरु आराधो रे, शिव साधो नर नार ।

मन वाँछित फल पावो दुःख मिटावो रे, सुजागा। १।

श्रातम भूमि शुद्ध करो भिव प्राणीरे, गुरुवाणी सुन सार ।
कल्प सूत्र वर कल्प बीजको बोबो रे, सुजागा। २।

पुण्य अंकूर सनूर सफलता लावेरे, बहुदावे हितकार।

दूर प्रमाद-विषाद-विवाद मिटावो रे, सुजागा।। ३।।

काल लबधि अनुकूल हरे भवश्रल रे, करे दूर विकार।

गत दूषण पर्यूषण भावे ध्यावो रे, सुजागा।। १।।

पूजा-परभावन उत्सव विधि भारी रे, जयकारी मनुहार।

सुव्रत-संयम रत हो पाप नशावो रे, सुजागा।। १।।

निन दर्शन-गुरु बदन पाप निकन्दे रे, स्रानद विहार । निन दर्शन गुर्ण निर्मल खुद बनावों, रे सुजाण ॥ ६ ॥ ्रश्रीहरि पूच्य परमगुरु बोध सुनावें रे, समभावे विचार। दे दिच्य कदीन्द्र महोदय भटपट पावो रे, सुजाण ॥ ७ ॥

श्री कल्प सूत्र प्रथम व्याख्यान गहुंली । ५३। तर्ज-सिखया गावो रे कांइ गावो ग्रह गुल माल सिखयाँ०। सिवयाँ मुन लो रे, काँइ कल्प मूत्र श्रिधिकार । सिखयाँ सन नारे। टेर। निन चरित्र थेरावली, कॉइ सामाचारी सार । सखियाँ० । थनण मनन-परिगात करो, कॉड ये तीनों अधिकार ।सिखि०१। श्री ग्रादि जिन चीर के कॉड शासनथित ग्रग्गगार। सिल्। यार्चलक प्राढि वहें, कॉइ दश कल्पी त्राचार । सिवयॉ०२ । 🕽 ऋजुजह क्क्रजडागयी, कॉड परिहत भाव विवोध । सखि० । ^{-भेग्}म चरम अरु अभ्यजिन, कॉइ साधुभेद श्रविरोध ।सखि०३। नांकिक लोकोत्तर सभी कांइ पर्व शिरोमिण जान। स०। पर्पण संसार में, कॉइ उसमें पुराय विधान। सिवयॉ० १। भीत्रमण सवत्सरी, काँइ लोच अउम तप धार । सखि०।

_{जिन} बढन अरु खामग्गा, कॉइ साधु शुद्धाचार । संखि० ५ **।**

द्रव्य-भाव पूजा करें, काँइ खर्में खमावें श्राप। सिखयाँ०। ज्ञान-संघ भक्ति करें , काँइ श्रावक छोडें पाप । सखि०६ । 'नाग केतु' दृष्टाँत से, काँइ अठ्ठम तप अविकार । सिवयाँ व् परमेष्टि ध्यानें सही,काँइ जिन जीवनी विस्तार । सखि ०७। पच्छानु पूरवी सुनो, काँइ वीर चरित विस्तार । सिवयाँ । मोटे सत्तावीस भव, काँइ चलगति विविध प्रकार । सखिताँ० 🖘 प्रागात नामक स्वर्ग में, काँइ पुष्पोत्तर सुविमान । सिवयाँ । वहाँसे सुरभव भोग तज, काँइ च्यवते पुर्य निधान ।स० ९। पूरव भव में गोत्रमद, काँइ कृतकमीद्य पाय। सिख्या०। देवानंदा ब्राह्मगी, काँइ कूल वसे तब ब्राय । सखि० १०। चौद सुपन कल्यागा मय कांइ लखती है वह ताम ।सिवि०। हरि कविन्द्र करते तभी, काँइ सविनय भाव प्रणाम ।सखि०११।

स्री कल्पसूत्र द्वितीय व्याख्यान गहूंली । ५८।

तर्ज-पणिहारी

श्रवधि ज्ञानविशेष से मारावाद्दालाजी च्यवन कल्याग्यक जान वाद्दालाजी सौधर्माधिपति स्तवे मारा वाद्दालाजी नमो नमो भगवान वाद्दालाजी । १ । धर्म आदि कर हे मभो ? मारावाहाला जी अन्तिम तीर्य नाय बाहालाजी। वन्दन करता हूं यहाँ मारा वाहालाजी मोहे करा सनाथ वाहालाजी । २ । भाव सहित कर बॅदना मारा वाहालाजी सोचे हृदय मभार वाहलाजी। नीच कुल नावें सही मारा वाहालाजी श्ररिहादिक श्रवनार वाहालाजी। ३। काल अनते होत हैं मारा वाहालाजी अचरिज विविध मकार वाहालाजी । कर्मोदय से बीर लें मारा बाहालाजी नीच कल अवतार वाहालाभी । 8। ऐसे दश श्रवरिज हुए मारावाहालाजी इस श्रवसर्पिणी मान वाहालाजी । सूत्रकार फरमा रहे मारा वाहालाजी देखो चतुर स्ञान बाहालाजी । ५ । नीच कुल की काय से मारावाहालाजी पर जनमें ना कोय बाहालाजी। साते परिवर्त्तन करूँ मारा वाहालाजी तब सम्बन्ति यह होय बाहालानी। ह ।

हरिरागमेपी देव को मारा वाहालाजी । इन्द्रं करे आदेश वाहालाजी। देवा नँदा गर्भ का मारा वाहालाजी

त्रिशला कूल मवेश वाहालाजी ॥ ७ ॥ गर्भ परिवर्त्तन करे मारा वाहालाजी,

हरिग्गगमेपी देव वाहालाजी । श्री त्रिश्ला शिवकर लखे मारा वाहाला जी,

चौदह सुपन तदेव वाहाला जी ॥ = ॥ तव देवा नन्दा लखं मारा वाहाला जी

पूरव कर्म प्रभाव वाहाला जी। हरती है मम स्वम को मारा वाहाला जी,

त्रिशला सहज सभाव वाहाला जी ॥ ९ ॥ गर्भहरण कल्याणके मारा वाहाला जी,

यह दूजा व्याख्यान वाहाला जी। हरि कवीन्द्र सुनकर भवी मारा वाहाला जी, पावो पद कल्यान वाहाला जी ॥ १०॥



श्री कलप सूत्र तृतीय व्याख्यान गहूंली । ५५ ।

तर्ज-सीना रुपा के मोगठे सैया खेलत याजी।

स्त शय्या सोती हुई, सती त्रिशला माता। लय बर चीटह स्वम को, पाव सुख सावा ॥ सुख० १ ॥ जग कर इंसी चाल से, विद्य पास पधारी । संविनय मुपनों की कथा, कहतीं विस्तारी ॥ जग० २ ॥ नाना सिनार्थ कहें, सुनो मान वियारी। मगन-शिव कल्याग्यमयः सूपने हैं भारी ॥ राजा० ३ ॥ र मोग-पुत्र-सुराज्य सुख, शुभ लाभ मिलेगा । रेम कुन कमल भी श्राजसे, उस गुत्र खिलेगा ॥भोग० ८॥ नक्षण-व्यंत्रन गुण भग, सुकुमाल श्रीरा। पुत्र रतन होगा सही, जग में वड बीरा ॥ लक्षण ॰ ४ ॥ बल भार को छोडते, चर्मा वह होगा । गों देवी ! ई मुनी, शुम स्त्रममुयोगा ॥ वाल० ६ ॥ . मुन त्रिश्ला दर्षिन हुई, मृदु बचन उचारा। यर्थ समर्थ कहा मनी ! पियु माग थायाग ॥ सुन० ७ ॥ गुन्दर मन्दिर में वर्ग, धम ध्यान मुनीना।

सुख से गर्भ रथा करें, मारे पर्म मबीगा ॥ सुन्दर = ॥

श्री हरिपूज्य हुई तदा, त्रिशला जगमाता। दिव्य कवीन्द्र कहें सदा, जय जय जिन माता।।श्रीहरि०९।।

स्री कल्पसूत्र चतुर्थ व्याख्यान गहूंली । ५६

(अन्म समय गीत)

तर्ज-म्हांस्ं मृढं बोल०।

श्री सिद्धारथ नृप त्रादेशे, सुपन शास्तरी त्रावे रे । जय विजयादिक सूचक शब्दें, खूव बधावें रे ॥ कि मंगल गावो रे ॥ टेर ॥

स्वम फलों को पूछे राजा, पंडित भाव वतावें रे। पुत्र चक्री तीर्थ कर होगा। पुराय प्रभावें रे।। कि मंगल गावो रे।। १।।

सुन कर हर्षित राजा देवें, दान अनेक मकारे रे। पटराणी को पुनः सुना कर, दुःख विसारें रे॥

कि मंगल गावो रे॥ २॥

इन्द्रादेशी तिर्यक जुंभक, धन-कंचन वर्षावें रे। गर्भ प्रभावे सिद्धारथ चप, राज्य ऋद्धि बढ़ जावे रे॥ कि मंगल गावो रे॥ ३॥ वर्द्धमान भावों को लख कर, राजा राणी भावें रे। पुत्र हुए से 'वर्द्धमान' शुभ, नाम धरावें रे॥ कि मगल गावो रे॥ ८॥

मात्रभक्ति ऋरु ऋनुकम्पावश्, गर्भ रहे पशु शोर्चे । 'गर्भ व्यया को रोक्तु" यों निज ऋ ग सकोर्चे रे ॥

कि मगल गावो रे.॥ ४॥

निथल गर्भ रहे तब माता, मोह वशा हो रोवे रें। हरा मरा या गला गर्भ मम, चलन जरा ना होवे रें॥ कि मगल गावो रें॥ ६॥

र्यों माता के भाव जान कर, वहाँ ख्रभिग्रह थारे रे । भात पिता के जीते ना लू, टीक्षांश्चर संचारें रे ॥

ढानान्त्रगणपारिसा किमगल गावीरे॥७॥

होतें जो जो दिव्य टोहले. राजादो वो पूरेरे। करें गर्भ रक्षासुख पूर्वक. पाप कीं चूरेरे॥ कि मगल गावो रे ॥ = ॥

साडा सान दिवस नौ महिने यों पूरे जब होवें रे। फर्चे स्थानक वेंद्रे ब्रह्म शुम—हिंग्से जोवें रे॥ कि मगल गावों रे॥९॥ चैत्र सुदी तेरश दिन उत्तराः फालगुनी नक्षत्रे रे। हरि कवीन्द्र जिन जन्म लहें, सुख चौदह क्षेत्रे रे॥ कि संगत्त गावो रे॥ १०॥

📝 स्त्री महावीर जिन भूलना गीत। ५०।

तर्ज —लाल ख्याल देख तेरे अचरिज मन आवेः।

(राग भैरवी)

हुलरे हुलरे वीर हुलरे, त्रिशला माता गावें। त्रिशला माता गावें वीर, सूलणे सुलावें ॥ टेर ॥ नन्द तेरे नूर कोटि, चंद सूर नावें। दरस फरस करत तरस, नयन की न जावे । हुलरे० १। छठत-पडत-रमत-हंसत, खेल तूं मचावे। छेरे मेरे लाल! तेरी, चाल चित चुरावे। हुलरे० २। कनक घडित रतन जडित, विविध रंग भावे। लाल! मूला देख जगत, भान भी सुलावे। हुलरे० ३। हीर चीर भूलणे, सुदोरी के खींचावे। रमक भमक रमक भमक, धूंधरी नचावे। हुलरे० ४। लाल! तेरा अंग रंग, ताप को बुभावे।

Muni Mangal Sagar.

चग गग नीर, शीतलाइ को इठावे। हुलरे० ५। तृ निज जन्म से पवित्र, कृख मम बनावे । चौंद्र राज राज ब्राज, मेरे पास ब्रावे । हुन्तरे० ६ । केशि कुमार कथित सार, बचन याद आवें। बीरय नाय प्रपने साय, तू मुभ्ते पुजावे । हुलरं ० ७ । **पश्रस्त वस्तु राज्य-रत्न गर्भ में वढावे ।** बर्ड मान गुणनिधान नाम तेरो ठावे । हुनरे ० = । नद ! नंदी वर्धन की न्वयू तुक्ते रमावें। देवर देवर कर पुकार बारी वारी जावें । हुलरें ००। चैटक भूप बन्धु मेरें रूप तव लखावें। गोद राय खंध पे उठाय मोड पार्च । इलरे० १० । सुमित्ता रत्न रचित दिव्य विनोने वसावे । निक्ट द्र करत विविष्ठ भांति से हँसावें । हुन्तरे ० ११ । पौथि हाथ धार लाल ! पउन काज जावें । बाल म्ब्यानकरत बान साथ तृ सि गते । हुनरं ० १२ । या कला विलास विश्द वान के ममावे। **इ**ति बान तुमहान वय युवान पावे । हुन्तरे ८१३। श्चनन्य रूप राज रून्य का विवाह दावें । स्थव नार मपुर कड परल गींग गावें । हुलरे ० १० ।

जनीससो सत्यासी भाद्र. चतुरदशी भावे। हरि कवीन्द्र वन्द वीर 'जयपुरे 'सुध्यावे। हुलरे ० १५।

.श्री कल्प सूत्र पंचम व्याख्यान गहूंली। ५८।

तर्ज- तीरथ नी आशातना निव करिये, हारे निव करिये०।

तीन ज्ञान से उपने जिन चन्दा, हाँ रे भिव कमल विकाश दिखांदा ।

्हाँरे व दत तोड़ें भवफन्दा, हाँरे प्रकटे श्रनहद सुख कंदा।

हाँरे अ।नन्द अपार,

तीन ज्ञान से उपने जिन चन्दा । टेर ।

ञ्बप्पन दिग कुमरी मिली वहाँ आवे,

हाँ रे जिन-जिनमाता नवरावे। हाँरे सब सुनि कर्म रचावे.

हाँरे करे नाटक सार । तीन० १।

सुरपति सुर गिरि पे प्रभु ले जावे, हाँरे लघु शङ्का मन में लावे। हॉरे बीर मेरु शिखर कम्पावें, हॉरे देवें शॅका टार। तीन०२।

सिद्धारय राजा करे सुख कारा, इाँरे जिन जन्मोत्सव निर्धारा।

हॉरे ब्राप्ति गोत्री जिमा के उचारा, हॉरे वर्षमान कुमार । तीन० ३।

शक्ति मशसे वीर की हरि भारी, हॉरे आबे देव परीक्षाकारी,

हाँरे बहुरूप घरे भयकारी, हाँरे लहें जिन जयकार। तीन० १।

मोह वर्गे माँ वाप भी खे जावें, हाॅरे पढ़नें को उत्सव भावे।

हॉरे हिर ब्राह्मण रूप ले श्रावे, हॉरे पूछे मक्ष विचार । तीन० ५।

भेद तभी सब ही खूल जावे, हाँरे योवन वय सुन्दर पावें।

हाँरे नृष पूत्री यशोदा व्यावे, हार्रे जल कमल मकार । तीन० ६।

मात-पिता स्वर्गे सुख पावं, हॉरें निज पूर्णे श्रमिग्रह भावं। हाँरे भाई आजा से ठहरावें,

हाँरे शुभ दीक्षा विचार । तीन० ७ ।

साधु सम प्रभु जी रहें संसारें,

हाँरे सम्बत्सर दान मचारे। हाँरे तब दीक्षा हेतु उचारें,

हाँरे लोकान्तिकाचार । तीन० = ।

नन्दी बद्र्धन इन्द्र के सहचारी,

. हाँरे करे दीक्षोत्स**व वहु भारी ।**

हाँरे कहें जग जन जय जयकारी,

हाँरे होवें वीर ऋणगार । तीन० ९ ।

मन पर्यव वर ज्ञान भी तब भासे,

हाँरे संज्ञी मन वस्तु प्रकाशे।

हाँरे नित दिव्य कॅबीन्द्र विलासे

हाँरे छठ तप को धार । तीन० १० 🛭







श्रो कल्पसूत्र पंचम व्याख्यान गहूंली । ५९।

तर्ज-भविका श्रो जिन विम्व जुहारो।

भविका बीर चरित चित लावो, आतम शक्ति जगावो। रे भविका वीर चरित चित लावो । टेर्। सविनय इन्द्र पशु को भाषे, बार बरष तक स्वामी। जपद्रव होंगे बहुतेरे, सेवा करूं सिर नामी । रे भवि० १। भापें बीर हुया नहीं होगा, खरिहा पर शक्ति से ! केवल ज्ञान उपाव पावे, त्र्यातम गुण व्यक्ति से । रे भवि०२। अमिय ग्रामे शाल पाणि जक्ष करे उपद्रव भारी। परम शान्त दशा लखी मधुकी, तब भक्ति विस्तारी (रेभवि०३। मासाधिक सवत्सर तक प्रभुः देवदुष्य पटधारी । वाद अवस्त्र सुर्गोभन कायाः सहें उपद्रव भारी । रे भवि० ८ । कनक खल वनमें चएड कौशिक, सर्प महा भयकारी। बुज्भ २ कहकर मतिवोधे, जाउ जिन बलिहारी। रे भवि० ५। गोशालक कुशिष्य प्रभावे, दुःख सहें श्रविकारी। संगम सुर करे घोर उपद्रव, जिन निश्चल चित्त धारी । रे भवि०६। श्रभिग्रह श्रति दुष्कर धारी, स्वामी भाव सन्रेरे । चड्द वाकुला कैटीवेगे, चढनवाला पूरे । रे भवि० ७ । कानों में कॉसी के खीले, गोपालकने ढाले।

हुई कायिक पीड़ा पशु को, खरक वैद्य निकाले। रे भवि॰ 🗀। श्रन्य भी कट पूतनादि उपद्रव, बारह वर्ष विचालें। सम भावे सहकर सब स्वामी, कर्म सघनवनवालें।रे भवि० ९। लोका लोक प्रकाशक केवल, ज्ञान महोदय पावें। सुरपति रजत कनक मिणिरतने, समवसर्ण विरचावें ।रेभवि०१०। गौतम आदिक ग्यारह पंडित, शंकित अरु अभिमानी। शंका-मान हठाकर थापें, गराधर पद गुराज्ञानी ।रे भवि० ११। संघ चतुर्विध थापें स्वामी, सुर नर पूजित पाया। बहतर वरष स्वत्रायुष भोगी, पावा पुरजिन रायारे।रेभवि० १२। सोले पहर उपदेश सुनाकर, अन्त शैलेशी ठावें। भवधारी चउकर्म हठाकर, एक समय शिव जावें । रे भवि० १३। काती अमावस स्वाति कल्याणक, वीर विश्व निर्वान । वीतरागता भावे पावें, गौतम केवल ज्ञान । रे भवि० १४ । वीर मभु आदर्श चरित को निज आदर्श वनावें। इरि कवीन्द्र सुकीर्तित होकर, परम महोदय पावें। रे भवि० १५।

श्रो कल्पसूत्र छठ्ठा व्याख्यान गहूंली । ६०।

तर्ज—क्या कहं कथन मैं मेरा नाथ। जिन जीवन सुखेकार रे सिखयां जिन जीवन सुखकार। देर निज जीवन हितकार रे सिखयाँ जिन जीवन सुखकार। टेर। च्यवन-जनम-दीक्षा तथा रे. केवल वर निर्वाण । पच विशाला में हुए रे, पारस जिन कल्याण । रे सलि० १। दशभव द्वेषी कमठकारे, द्र किया अभिमान: क्षमा सहित श्रातम शक्तिसे, नमो नमो भगवान ।रे सिवि०२। श्रथजलते श्रहि को दिया रे, परम मंत्र नवकार । वह पाया नागेन्द्र सुखदपदेरे जय जिन जगदाधार । रे सखि०३। पुरुपादानी पास जिनेश्वर, सरस चरित चित धार । गुरुमुख सुनकर भविजन भावे वादो भवजल पार । रे सखि० श नव भव का तज राग जिन्होंने, बीतरागता धारी। नेमीश्वर परमेश्वर वन्डों, कामविजयी जयकारी। रे सखि०४। कृप्ण भवल वलदर्प जिन्होंने, कीना चकनाचुर । दिखलाकर आदर्श अनुपमः ब्रह्मचर्य का नर्ः। रे सिवि० ६। पशुरक्षा हित निज सार्यि को, जिनवर दें आदेश। करुणा कोमलना भी जिनकी, है ग्रादर्भ विशेष । रे सुखि०७। राजीमती सच्ची सती रे शीलवती गुणधाम । रथनेमि को राइ पे लाई नात काल नणाम । रे सखि० 🗀 पारस नेमीरवर को ऐसी, पावन यह परसिद्ध । इरि कवीन्ट्र जीवन कथारे, श्रभ्यासे मुख सिद्ध । रे सिवि० ९।

श्री कल्पसूत्र सप्तम व्याख्यान गहुंली। ६१।

तर्ज-केशरिया थांसूं प्रीत लागी रे सांचा भाव सुं।

भवि भावे सुन लो ऋषभ चरित अधिकार को। सुन दूर हठात्रो दारुण कर्म विकार को । टेर । 'धनसारथ वाहक' भवे रें, देकर घी का दान। समिकत गुरा पैदा किया रे, ऋषभदेव भगवानजी।भवि० १। 'वज्रनाभ' चक्री भवेरे, वीस स्थानक सेव। तीर्थं कर शुभ कर्मकोरे, बाँध हुए जो देव जी । भवि० २ ह 'श्रीनाभिकुलगर' प्रियारे, 'मरुदेवी' के नन्द। युगल रीति वारक हुए रे, श्रीयुगादि जिनचन्दजी।भवि०३। 'भरत-बाहुबली' आदि थे रे, पुत्र एक सौ वीर। 'ब्राह्मी-सुन्दरी' वालिकारे, गुणसागर गम्भीरजी । भवि०८। पुरुषकला नारीकला रे आदिक जग व्यवहार। श्रसि-मसी-कृपिकर्मकारे जिनने किया मचारजी। भवि० ५। शुद्धाहार विना रहें रे, दीक्षा ले अकलेश। अन्तराय के योग सेरे, बारह मास विशेष जी। भवि० ६। निर्दूषण ईक्षुरसे रें श्री श्रेयाँस कुमार। नाथ करावें पारणारें, वर्तें जय जयकार जी। भवि० ७। भयम भूप भिक्षु भथम रे, भथम केवली जान। तीर्थं कर सुखकर पहिलोरे, देवें शिवसुख दानजी। भवि० =ा

दश सहस्र भ्रुनि सग में रे, श्रष्टापट श्ररिहन्त । इरि कवीन्द्र बन्दित हुए रे, श्रनुपम शिववधुकन्त रे।भवि० ९।

श्री कल्पसूत्र श्रयम व्याख्यान स्थविरावली गहुंली। ६२।

तर्ज-लघुता मेरे मनमानी, लही गुरुगम द्यान निशानी रे०। वन्दों स्थविर जयकारी, वन्दत नित आनन्दकारी रे। वन्दां स्थविर जयकारी । टेर् । 🗦 जिन वीर पटोधर्भारी, गौतम् आदिक गराधारी । दर्शन नित मगलकारी (रे. वंन्टों स्थिवर जयकारी । १ । सुधर्मा सन्तति त्राने, भारत में बहुगुण राजे। वह मानित भविक समाने रि, वन्दों स्थविर जयकारी । २ । श्रन्तिम केविल शिवगामी, ब्रह्मचारी जम्बू स्वामी। शभवादिक वोधके नामी।रे, वन्टों स्थविर जयकारी। ३। श्रीममन प्रभु श्रुतज्ञानीः श्रीमनक पिता श्रुतदानी । यशोभद्र सुभद्र विधानी रे, वन्टों न्यविर जयकारी । १ । ग्रन्तिम सब पूरवधारी, भटवाह निर्मुक्तिकारी। स्थुलिभद्र मदन मदहारी(रें) वन्टों स्थविर जयकारी । ५ ।

क्रम से विश्व वज्र विराजी, जिन की जग कीरति गाजी।
हुई शाखा वज्र सुताजी रे, वन्दों स्थविर जयकारी। ६।
न्यायाम्बुधि बृद्धि सुधाकर, श्री सिद्धसेन दिवाकर।
हिरिभद्र प्रश्च पाँगडतवर रे वन्दों स्थविर जयकारी। ७।
नवत्रंग सुटीकाकारी, गुरु त्रभयदेव भय हारी।
जिन वल्लभ शुद्धाचारी रे वन्दों स्थविर जयकारी। ८।
दादा जिनदत्त प्रभावी, जिन चन्द्र महा मेधावी रे।
सुख सागर सहज सुभावी रे, वन्दों स्थिवर जयकारी। ९।
भगवान परम गुरु सारे, हिर पूज्ये विशद गुगा वारे।
नित कीर्ति कवीन्द्र उचारे रे वन्दों स्थिवर जयकारी। १०।

श्री कल्पसूत्र नवम व्याख्यान समाचारी गहूंली । ६३ ।

तर्ज-वारि प्रभु दशमा शीतल नाथ कि तुम सूं प्रीतडीरे हो।

सुनियें सामाचारी सार कि मुनि आचार कीरे लो।
है जो देशकाल अनुकूल कि भव्य विचार कीरे लो। सु०१।
जिस में उत्सर्ग रु अपवाद कि विधि विस्तार से रे लो।
भाषे जिनवर जगदाधार कि निज अधिकार से रे लो। सु०२।

है जहं अब्बाबीस मकार कि गुरु समक्षा रहेरे लो। सद्गुरु लक्षण लक्षित भाव कि जो नित है वहें रे लो । सु० ३। पहेलें दिन पचास के बाट कि पर्यू पए। करें रे लो। वर्षाकाल श्रवग्रहमान कि धारें दसरे रे लो । सु० १। सजल नदी लघन आदेश कि वृत्तीयनकार में रे लो। इत्यादिक हैं भाव विशेष कि मुनि व्यवहार में रे लो । सु०५ । साधु धर्म विघाति कषाय कि द्र निवास्ते रे लो। होंबे यदि परमाद विवाद कि माफी माँगते रे लो। सु०६। **उपराम ही है सार अपार कि साधु धर्म में रे लो !** तातें उपशम रखते नित्य कि मन-वच-कर्म में रे लो । स०७। साधु सुख सागर भगवान कि श्रीइरि पूज्य हैं रे लो। करते सुव्रति कीर्ति श्रपार कि टिच्य कवीन्द्र हैं रे लो ।स्०८।

संबद्धि पर्व की गहूं ली। ६४।

तर्ज-विना ममु पास के देगे गेरा दिल वेकतरी है।

यही धन आन की जानो, सवन्सरी पर्व पाया है।

हृदय से दूर माया है, अजब आनन्द द्वाया है। टेर।

जिनेज्वर देव शासन सद्-पुर निग्रन्य की सेवा।

सम्बन्न माव से करते, अजब आनन्द छाया है।।यही० गा।

निजातम शुद्ध करने को जिनेश्वर चेत्य दर्शन में। विचरते दूर अध होते त्रजन त्रानन्द छाया है ॥घडी०२॥ सुरा सुर द्वीप नन्दीश्वर, महोत्सव खूव रचते हैं। तथा भविजन यहाँ रचते **अजव आनन्द छाया है।।घडी०३!।** जगत के सर्व जीवों से. विरोधी भाव को तज कर। अभय देकर अभय होते, **अजव आनःद छाया है ।।घडी०**८।। कलप तरु कलपसूत्र--श्री गुरु मुख मूल वारह सो । विधियुत भाव से सुनते. ञ्रजव त्र्यानन्द छाया है ,घडी०५॥ तपो त्रति त्रह्मचारी हों किये सब पाप खोने को। प्रति क्रमणादिको करते. श्रजव श्रानन्द छाया है।।घडी०६॥ **उदायी-च**एड प्रद्यातन, सरीखे भाव को धर कर । खमाते श्रीर खमने में **ञ्चजव ञ्चानन्द छाया है।।घडी०७,।** मकट सुख सिन्धु अरु भगवान्, पावन वीर शासन में। हरि पूच्य प्रभु कृपया अजब आनन्द छाया है ॥घडी॰ ८॥ सुभारत राजधानी में संवत उन्नीसो अठ्यासी। कवीन्द्रों के अगम ऐसा, अजब आनन्द छाया है।।घडी ९॥



श्री नव पद गहूंली। ६५।

तर्ज-देराण दो गणगोर, भँवर माने देवल दो गणगोर०। वर्णवें श्री गुरुटेव सुभागी, सुन लो सहज सुभाव। सिद्धि विधायक शिव सुख टायक, श्री सिद्धचक्र प्रभाव हिरा दुर्लभ नर भव आरज खेतज्ञ, उत्तम कल अवतार। सद्गुरु दर्शन पाये पुन्य से, धर्म करो इकतार । सुभा० १। दान शीयल तप माव भले ये, पर्म के चार मकार। तामें भी शुभ भाव विना तिनु, होत्रत है निस्सार । सुभा० २ । भाव की भूमि वहीं मन हैं जो चचल दुर्भर धार । ताविरता दिन निर्मल निश्रल, व्यान सालवन सार ।सुभा० ३। हैं श्रालवन भी बहुतेरे, तो भी मर्व मधान। जगार जिनवर देव दिखावें, श्री नव पट का ध्यान सिमा० श श्ररिहत सिद्ध श्राचारत पाठक, साधु हैं निष्काम । सम्यग दर्शन ज्ञान चरण तप, ए नवपद गुणधाम ।सुभा०॥ नवपद से ही सिन्द्र हुआ यह श्रीसिक्डचक युनाम। गहन करम वन जारन कारन ज्योतिश्रक उटाम । सुमा० ६। भी सिद्ध चक्र ममाव से चफर भववन का मिट जाय। श्री श्रीपाल नरेंसर पेसे, हरि कवीन्द्र गुग्र गाय ।सुभाट ७।

निज नगर में पधारे गुरु दर्शन समय की गहूंली । ६६ ।

तर्ज-केशरिया थाँसु प्रीत लगी रे सांचा भाव स्ं०।

दर्शन को चालो गुरुसा पधारे, आज शहर में । टेर । भक्ति सहित नित वन्दन करते, त्र्यानन्द हर्ष न मावे। विकट कोटि संकट कट जावे, दर्शन निर्मल भावे रे।दर्श०१। गुरु मुख कमल निरख मन मधुकर, निज दुख दूर गमावे। तजकर सारी मोह चपलता सहज समाधि उपावेरे ।दर्श०२। संघ सघन वन हर्ष वढावन, गुरु, घन मेथ समाना। सरस बचन अमृत वर्षावें, शिव तरु सुखद निदानार दर्श ०३१ पञ्चेन्द्रिय विषय विषदारी, पंच महाव्रतधारी। पंचमगति गतिकारन वन्दों, पंचम पद सुखकारी रे। दर्श० १ गुरु गम विन वर वस्तु तत्व को, कोई भी नहीं पावे। गुरु गम दीप ज्योति पाते ही, हृदय तिमिर हठ जावेरे।दर्श०५। खरतर गरानायक गुरु सच्चे सुख सागर भगवाना। श्री हरिसागर पूज्य पधारे, सेवो सुगुरा सुजाना रे ।दर्श०६। मुनि मएडल में सोहें गुरुवर, ज्यों तारा में चन्दा। पूरव पुन्य से दर्शन पाया, कीरति करे कवींदा रे। दर्श० ७६

प्रपने शहर में पंचारने के लिये संदुगुरु को प्रार्थना गहुंली । ६७।

तर्ज मेरे राम मयोव्या बुला लो मुभे०।

गुरुराज विनन्ति स्वीकार करो। हम शहर को पावन आप करो ॥टेर॥ हैं अपावन आप के दर्शन विनाहम तो यहाँ। सुर्य दर्शन के विना ही. है कमल खिलते कहाँ॥ हमें आप सदर्शन दान करो ॥ गुरुराज ॥ १ lt हम हृद्य सन्तापमय है बोध अमृत के विना। होती कहीं क्या शॉति है, शुभ मैच वर्षा के विना ॥ इमें बोध सुधा को पिलाया करो ॥ गुरुराज ॥ २ ॥ आप तो आनद मूर्ति सत्य सुख के धाम हैं। दुखमय जीवन इमारा हो रहा वेकाम है।। हमें श्राप समान बनाया करो ।। गुरुराज ॥ ३ ॥

कर्त्तच्य हैं क्या क्या न जाने इस गुरु गम के विना। भव द ख केंसे दूर हो सद्झान के पाये विना॥

हमें वही विवेक बताया करो ॥ गुरुराज ॥ १ । १ श्राप विचरे दूर गुरुवर भव्य जीव स्वोधते ।

सत्य सबम शोधते, सब आश्रवों की रोधते॥

शुभ महर नजा अब हम पे करो ॥ गुरुराज ॥॥॥
त्रिम महर नजा अब हम पे करो ॥ गुरुराज ॥॥॥
त्रिम स्वाम सुलायक दिव्य गुरा हैं धारते ॥
अव आप हमारे भी पाप हरो ॥ गुरुराज ॥ ६ ॥
आदर्शतर निज शिष्यगरा को आप लेकर साथ में ॥
हम को तिराने के लिये, वीडा उठा लें हाथ में ॥
तब दिव्य कवीन्द्र सुकीर्नि करो ॥ गुरुराज ॥ ७ ॥

गणनायक श्रीमान् हरिसागर सद्गुरुवर के देहली प्रवेश समय की गहूंली । ६८।

तर्ज-केशरिया थांसुं प्रोत लागी रे सांचा भाव स्ं०।

धन त्राज की घडियाँ दर्शन पाये गुरुराज के ॥ टेर ॥
श्री हरिसागर गुरु गरानायक, लायक पूज्य पधारे ।
वन्दन चालो मङ्गल गा लो, मकटे पुराय हमारे रे ॥
धन त्राज की घडियाँ ॥ १ ॥
त्राम नगर पुर में विचरंता, भविजन बोध करन्ता ।
धुराय उदय देहली में दर्शन, देवें गुरु जयवन्ता रे ॥
धन त्राज की घडियां ॥ २ ॥

देहली सब सबन नदन वन सुरतह श्री गृहराया। मकटावं सताप विनाशक, निर्मल समकित छायारे ॥ वन ग्राज की घडियाँ ॥ ३ ॥ सद्गुणशाली शिष्य सव में शोभत है गुरुराया। 'तारों में ज्यों चंद्र मनोहर, मुख पर तेज सवाया र ॥ वन ग्राज की घडियाँ ॥ १ ॥ , कमल कु भारा मेच कु मोरा, छाया पथिक सँभारे। दिल इपन गुरू दर्शनहित त्यों, थी चित चाह हमारे रे ॥ धन ग्राज की घडियाँ।। १।। • आज ही श्राशा पुरुष मकाशा पूररण भई हमारे । भव भय वारण शिवमुख कारण, है गुरु पूज्य हमारे रे ॥ धन ग्राज की घडियाँ।। ६।। निन श्राणा अनुरागी खरतर, स्वन्त्र गच्छ में स्वामी। श्री मुलसागर गुरु गणनायक, भूमण्डल में नामोरे ॥ धन त्र्याज की चढियाँ।। ७॥ ्रुडन के पट्टगगन में शोभे, मुरज से परतापी। श्री मगवान गुरु गणनायक, कीरति त्रिभुवन व्यापी रे ॥ धन ग्राज की यदियाँ ॥ = ॥ टन गुरुवर के पुराय पट्ट पर, सागर सम गम्भीरा। श्री देरि सागर गुढ गणनायक, वर्तमान वडवीश रे ॥

धन आज की घडियाँ । ९ ॥

द्धरीन पाया त्रानन्द छाया। सुने गुम्मुख वाणी।
काल त्रनादि मोह जनितनिज, कुमति लता किरपाणी रे।
धन त्राज की घडियाँ।। १०।

गुरुवाई तिन भाजि गुरुपद को, निर्भय हो विचरेंगे।
निगुरापन अपना सब खोकर, सद्गुरु शिष्य बनेंगे रे॥
धन आज की घडियाँ॥ ११॥

शाँति-मुक्ति दाता गुरुवर से, सिवनय सब हम बोलें। चतुर्मास की त्राज्ञा देवें, जय जय तब हम बोलें रे।। धन त्राज की घडियाँ।। १२॥

सद्गुरु विहार समय की गहूंली । ६९।

तर्ज-चतुरंगी फोजां साथ रे महलार राव सेरनो सुबो क्या रे आवशे रे०।

सुन कर वात विहार की रे, आशालता मुरभाय रे।
गुरु जी सुनो आप यहाँ पे, विराजियें रे।। टेर ।।
आप विना अज्ञानकारे, घोर अन्धेरा छाय रे। सुरु०।
शह्य हुई सारी दिशा रे, चित्त अति अकुलाय रे। सुरु० १।।

धर्म सनेही साजना रे, विरह सहा नहीं जाय रे। गुरु े भव सन्ताप को मेटने रे, गुरु विन कौन सहायरे ॥ गुरु० २॥ घर्मकथा करते हुए रे, मास मीनिट सम जाय रे ।गुरु०। त्रवतो मीनिट एक माससे र^{े,} मोहोटी श्रधिक लखायरे।।ग्र०३ हितिशिक्षा हमको यहाँ रे, कौन कहे सुखदाय रे । गुरु० । निर्नायक सेना जिसी रे, श्राज दशा हो जायरे ॥ गुरु० १॥ नीवा जीव स्वरूप को रे, जानें छाप पसाय रे। गुरु०। तम सत्सगी श्रात्मा रे, समिकत र ग उपाय रे ।।गुरु० ४।। मोह ममादसे जो हुआ रे, अविनय दीजो भुलायरे । गुरुः। श्राप श्रकारणहित करा रं, विनति सुनो चित्त लायरे ॥गु०६ नरवर सरवर संत को रे, उपकारी जग गाय रे। गुरु । रों उपकार निमित्तसे रे, श्राप विराजो गुरुरायरे ॥गुरु० ७॥ गरानायक इरि पूज्यजी रे, विनति सुनी चिनलायरे ।गृहः। सेवक सविनय वीनवेरे, स्वामी सीस नमाय र ॥ गुक्र = ॥

+}

दोक्षा समय का गीत । ७० ।

तज्ञ—हुल जागं मारा सा के मन की०।
दीज्ञा का हका वजाया, मोहराज पराजय पाया रे । देर ।
दुर्लभ नरभर गुरु योगाः तजरुर सर दुखकर भे।गारे ।दीक्षा०
द्याडा से मात पिनाकी, कर दुर्मित दूर रगकी रे । दीजा० १।

सव जीव अजीव पिछानी, सुमित निज चित्तमें ठानीरे दिक्षां कितराजकी पूजा करके, निज रूप हृदयमें धरके रे |दीक्षां २ | चडगित चक्कर मेटनको शिवसुन्दरी से भेटनको रे |दीक्षां ० । संयम-सुन्त न्यलीना होकर सद्गुरु आधीनारे ।दीक्षां ० ३ | निगुरापन दूर हठाया, गुरु चरण कमल चित ठायारे।दीक्षां ० घटकाय अभयपद दीना, निर्भय पद अपना कीनारे ।दीक्षां ० घटकाय अभयपद दीना, निर्भय पद अपना कीनारे ।दीक्षां ० घडसूत्र अरथतदुभयको गुरुगमसे सुन सब नयकोरे रे ।दीक्षां ०। अज्ञान अनादि निवारी जानोदय कर अविकारी रे ।दीक्षां ०। सुस्त सागर श्रीभगर्जाना, होकर हिर्पूज्य मधाना रे। दीक्षां ०। सम्पूर्ण कविन्द्र सुकेलीं । गुणगाव नित्य सहेलीरे ।दीक्षां ०। सम्पूर्ण कविन्द्र सुकेलीं , गुणगाव नित्य सहेलीरे ।दीक्षां ०।

इति श्रो खरतर गच्छ गणाधीश्वर पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय श्रीहरिसागर सद्गुरु चरण कमछ चञ्चरीक कल्प शिष्य लेश कवीन्द्र सागर विनिर्मित विविध-विधि-निषध विधायक गुरूपदेश गुण-माहात्म्य वर्णन वर्णित कवीन्द्र केलि-गहुंली संग्रह प्रथमो भागः समाप्तः



The Charles of the Carles of t पुस्तक प्राप्ति के स्थान: हरि सागर जैन पुस्तकालय, ठि० जाटावास मु॰ लोहावट (मारवाङ़)। स्रीमती कुञ्जी बाई, ठि० मालीवाड़ा हीरानन्द की गली में, मु॰ देहली। पोष्टेज चार्ज के दो आने श्राने पर भेंट मिलेंगी।

